सर्वश्रेष्ठ
रूसी और सोवियत
पुस्तकमाला
बोरीस लाव्रेन्योव
इकतालीसवां

सर्वश्रेष्ठ रूसी और सोवियत पुस्तकमाला

बोरीस लाव्रेन्योव

इकतालीसवां

प्रगति प्रकाशन
मास्को

अनुवादक – मदनलाल 'मधु'
डिजाइनर – व० मार्केविच

БОРИС ЛАВРЕНЕВ
СОРОК ПЕРВЫЙ
РАССКАЗЫ

На языке хинди

बोरीस लाव्रेयोव सावियत लेखका की पुरानी पीढी के एक प्रसिद्धतम लेखक हैं। यहा "पुरानी पीढी" शब्दा का प्रयोग इतना आयुगत नही, जितना कालक्रमिक है और वे विशेष सार तथा स्वरूप के प्रतीक है। जब हम सोवियत लेखको की "पुरानी पीढी" की चर्चा करते है तो गोर्की के मित्र अ० सेराफीमोविच, जो महान अक्तूबर क्रान्ति के आरम्भ होने के समय अधेड उम्र तक पहुच चुके थे, उस समय तक पर्याप्त ख्यातिलब्ध कवि व्ला० मयाकोव्स्की और तीसरे दशक के एकदम जवान गद्यकारा—अ० फदेयेव, मि० शोलोखोव और ले० लेग्रोनोव—से हमारा अभिप्राय होता है। "पुरानी पीढी' के अन्तगत वे साहित्य-स्रष्टा आते हैं, जिन्होंने १६१७ की अक्तूबर क्रान्ति के बाद अपनी कृतिया द्वारा एक नई परम्परा के रूप मे "सोवियत साहित्य" को कला-क्षेत्र मे एक निश्चित अथ प्रदान किया और उसकी मुख्य दिशा निर्धारित की। अभूतपूव, पुरानी लीका से हटी हुई और उस समय तक अस्पष्ट जिदगी, जिसे अभी व्यावहारिक और स्पष्ट रूप देन की आवश्यकता थी, उसकी मागा न ही इस साहित्य की नवीनताओ को जम दिया।

बोरीस लाव्रेयोव समेत पुरानी पीढी के अधिकतर लेखको ने क्रान्ति और १६१८–२१ के गृहयुद्ध की रोगटे खडी करनेवाली घटनाओ म खुद प्रत्यक्ष रूप से भाग लिया। इस गृहयुद्ध ने सारे रूस को अपनी लपेट मे लिया और चार साल तक वह आर्कटिक महासागर तथा शान्त महासागर के तटो पर, काले और वाल्टिक सागर के बदरगाहो, मध्य एशिया के रगिस्तानो, साइबेरिया के घने जगलो, उक्रइना की स्तेपियो तथा मध्यवर्ती

रूस के मदाना मे चलता रहा। सावियत साहित्य के स्रष्टा क्रान्ति के पग पोपक और लाल सेना की कतारा म रहे थे। सोवियत सत्ता की विजय के रूप मे गहयुद्ध की समाप्ति पर इन लेखक सेनानिया ने सबसे पहले तो जनता के भाग्य के दु खद सत्य को दुनिया तक पहुचाने और उसके बाद लागा की चेतना मे इन वर्षो के दौरान पूण और ठोस सामाजिक न्याय की विजय के नाम पर असह्य दु ख मुसीबत झेलनेवाली जनता की वीरता के सौदय को पुष्ट करन की तीव्र इच्छा अनुभव की। तीसरे दशक में, जब लाव्रेन्योव का नाम रोशन हुआ सोवियत साहित्य के सामान्य लक्षण थे—सभी असगतिया समेत जीवन का यथातथम और कटु सत्य, इस जीवन के प्रति रोमानी रवैया, इसक अनूठेपन, नि स्वाथतम और उच्चतम उद्देश्या की प्राप्ति के लिए इसके प्रयासो की रोचकता।

बोरीस लाव्रेन्योव का जन्म १८९१ मे खेर्सोन नगर मे हुआ। स्वय लखक के शब्दा मे सुखद, प्यारा और हराभरा यह नगर यूरोपीय रूस के उत्तर से अत्यधिक भिन्न ठीक दक्षिण मे है। काले सागर की निकटता, काव्य प्रेरक ऐतिहासिक स्मृतिया को जन्म देनेवाली क्लिवर्दिया, इन गिरि स्तेपिया का विस्तार और ऊपर दक्षिणी आकाश की नीलिमा—बचपन मे ही मन पर अकित हुई इन छापो ने लेखक की भावी रचनाओ की विषय वस्तु उनके घटना-स्थल, उनकी रगीनी, शली, जीवानुरागी उत्साह, उनकी समारोही उमग-तरग और रगारग रमणीयता सुरम्यता निर्धारित की। सागर और जान-जोखिम के काम, सागर और वीरतापूण कारनामे—भावी लेखक की रचनाओ मे ये विषय स्थायी रूप से सामने आये। हुआ यह कि हाई स्कूल के पाचवे दर्जे मे बालक लाव्रेन्योव को बीज-गणित मे बुरे अक मिले और वह घर छोडकर अलेक्सान्द्रिया भाग गया। वहा वह दो महीने तक सिखुआ जहाजी के रूप मे विदेशो को जानेवाले समुद्री जहाजा पर काम करता रहा। आखिर उसे जबदस्ती घर भेजा गया।

घर से भागने का मतलब घरवालो से झगडा नही था। वह तो केवल रोमानियत के आकषण और क्रियाशील प्रकृति के प्रदशन का परिणाम था। घर का वातावरण बहुत अच्छा था और बोरीस लाव्रेन्योव के दिल मे अपने मनीषी तथा श्रम प्रिय परिवार की सदा मधुर याद बनी रही है। लेखक के पिता अध्यापक, यतीमखाने के सचालक थे। 'वे प्रतिभावान, बुद्धिमान और ईमानदार रूसी थे, वायलिन अच्छी बजाते थे, उनके पास पर्याप्त

ज्ञान भण्डार था, मगर अपनी अत्यधिक विनयशीलता के कारण जीवन मे बहुत आगे न बढ सके," बोरीस लाव्रेयोव ने बाद मे अपने पिता के बारे मे ऐसे विचार प्रकट किये। घर मे अनुशासन और मानवता का वातावरण, बचपन से ही सभी तरह के श्रम के प्रति आदर की शिक्षा, मा बाप द्वारा पुस्तको मे गहरी दिलचस्पी का प्रोत्साहन, तरुणावस्था मे ही थियेटर और कला की अभिरुचि – इन सभी चीजो ने छोटी उम्र मे ही भावी लेखक के साहित्यिक रुझान के विकास के लिये अच्छी जमीन तैयार कर दी।

हाई स्कूल की पढाई खत्म करने के बाद बोरीस लाव्रेयोव मास्को विश्वविद्यालय के कानून विभाग मे दाखिल हुए और १९१५ मे यहा की पढाई समाप्त की। किन्तु १९११ मे ही उनकी कवितायें छपने लगी थी। "विद्यार्थी जीवन के पहले वप मे कविता एक अदम्य धारा की भाति मेरी आत्मा मे से फूटी पडती थी," अनेक वप बाद इन दिनो की याद करते हुए लेखक ने लिखा। मगर कवि के रूप मे बोरीस लाव्रेयोव ख्याति अजित नही कर पाये। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ही, जिसम लाव्रेयोव ने तोपखाने के अफसर के रूप मे हिस्सा लिया था, उन्होंने पहली बार गद्य रचना की। उन्होंने अपने युद्ध-अनुभव को "जीवन की उच्चतम अकादमी" कहा और "जारकालीन रूस की दमघोटू तथा अयायपूण व्यवस्था की सबसे अधिक यातनायें सहनेवाले साधारण रूसी व्यक्ति," रूसी सैनिक के साथ निकट सम्पक को अपन जीवन माग के इस पहले युद्ध का सबसे अधिक उपयोगी सवक माना। जवान अफसर, बोरीस लाव्रेयोव, के जनवादी स्वभाव और युद्ध विरोधी तथा पूजीवाद विरोधी रुझान ने उनके भविष्य का निणय कर दिया – पहले तो लाल सेना का साथ देते हुए उन्होंने गृहयुद्ध मे भाग लिया और बाद मे सोवियत लेखक के रूप मे अपनी किताबा मे जनता के शौयपूण क्रान्तिकारी कृत्यो का स्तुतिगान किया।

दूसरा विश्वयुद्ध आरम्भ होने तक क्रान्ति ही बोरीस लाव्रेयोव की रचनाओ का मुख्य विपय रही। दूसरे विश्वयुद्ध के समय ही इतिहास ने फिर से उसी ढग की महत्त्वपूण समस्याए प्रस्तुत की और लाव्रेन्योव की लेखनी दूसर विपयो की ओर मुडी। तीसरे दशक के अन्त मे क्रान्ति की दसवी वपगाठ पर लिखा गया उनका नाटक "ध्वस" देश के अनेक थियेटरो मे सफलतापूवक खेला गया। इस नाटक के लिये उस दिन के ठीक

पहले की ऐतिहासिक घटनाओ को आधार बनाया गया था, जब सोवियत सत्ता की घोषणा की गयी थी, जब सुविख्यात जगी जहाज "अव्रोरा" ने अपनी तोपो के मुह जार के महल की ओर मोड लिये थे और वह उसके सम्मुख रूस के नये भाग्य की अनिवार्यता बनकर खडा हो गया था।

नाटककार के रूप मे बोरीस लाव्रेन्योव के प्रसिद्ध होने के पहले अनेक कहानिया और लघु उपन्यासो के लेखक के रूप म व काफी चमक चुके थे। इन्ही मे से प्रस्तुत सग्रह की तीन कहानिया "इकतालीसवा" (१६२४), "मामूली बात' (१६२४) और "बहुत जरूरी माल" (१६२५) सोवियत पाठको म अत्यधिक लोकप्रिय ह। लगभग आधी सदी तक साहित्य-क्षेत्र म सक्रिय रहनेवाले इस प्रचुर साहित्य स्रष्टा के लिये तीसरा दशक वास्तव मे ही बहुत उर्वर रहा।

प्रस्तुत सग्रह की तीन रचनायें कहानीकार के रूप म बोरीस लाव्रेन्योव की कलात्मक रुचियो और शैलियो के विविधता तथा विशिष्टतापूर्ण उदाहरण ह। वैसे ये उनकी प्रतिभा के सभी पहलो की तो नही, किन्तु विभिन्न और महत्वपूर्ण पक्षो की झलक अवश्य पेश करती है।

लाव्रेन्योव की अन्य रचनाओ की तुलना मे "बहुत जरूरी माल" कहानी अधिक स्पष्ट रूप से पुरान रूसी साहित्य की मानवतावादी और यथार्थवादी परम्परा को जारी रखती है और भूतकाल के क्रूर आचार-व्यवहार को प्रतिबिम्बित करती है। "चूहा" उपनाम के बायलर साफ करनेवाले ग्यारह वर्षीय लडके की भयानक मत्यु की कहानी के माध्यम से लेखक बहुत ही साफ तौर पर यह दिखाते ह कि सम्पत्तिशालियो और उनके कारिदो की नजर मे इन्सानी जिन्दगी की जरा भी कीमत नही है। लाव्रेन्योव की इस कहानी मे उजड्ड रूसी व्यवसायी बीकोव और सभ्य अमरीकी कप्तान जिबिन्स, जो अपने बच्चो को ममस्पर्शी ढग से प्यार करता है, दोनो ही बालक की मत्यु के लिये समान रूप से अपराधी ठहरते ह।

इस कहानी का घटना-स्थल काले सागर का बन्दरगाह ओदेसा है। इस बन्दरगाह का नाम आते ही तीसरे दशक के सोवियत पाठको को अनिवार्य रूप से तथा सबसे पहले प्रथम रूसी क्रान्ति और १६०५ मे "पोत्योम्किन" जगी जहाज पर जहाजियो के विद्रोह का स्मरण हो आता था।

उग्र विषय और उसके गिर्द बढिया ताना-बाना बुनने की क्षमता—बोरीस लाव्रेयोव की प्रतिभा का यह अभिन्न अग है। कथानक की गतिशीलता और वार्तालाप ही बहुधा उनकी अभिव्यक्ति के मुख्य साधन होते हैं। "साहित्य को अत्यधिक प्रेरक और प्रभावपूर्ण होना चाहिये। वह एक ही सास मे पढा जाना चाहिये,"—लेखक के नाते ऐसा था उनका व्यावसायिक आदर्श। "मामूली बात" के घटनापूर्ण कथानक से लेखक को पाठको मे बडी लोकप्रियता मिली और फिल्म सिनेरियो लेखको का उनकी ओर ध्यान आकृष्ट हुआ। अद्भुत घटना परिवर्तन से जवान लाव्रेयोव ने अपने समय के लिये गम्भीर और उस समय के साहित्य के लिये महत्त्वपूर्ण समस्याओ को हल किया। "मामूली बात" कहानी मे लेखक ने सजग सचेत और जीवन के अन्तिम क्षण तक पार्टी सम्बधी कर्त्तव्य के प्रति वफादार रहनेवाले क्राति के आदर्श कार्यकर्ता का चरित्र प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। क्राति ने मानवता के अर्थ को जटिल बना दिया था, अलग-थलग व्यक्तियो की मुसीबतो तथा करोडो के हित मे बलिदानो की अनिवार्यता की दु खद असगति को अत्यधिक उग्रता प्रदान कर दी थी। मामूली बात" कहानी के नायक को इसी असगति की अनिवार्य क्रूरता की तीव्रानुभूति होती है किन्तु लेखक की दृष्टि मे वह इस नैतिक सघर्ष मे विजयी होता है।

तीसरी कहानी "इकतालीसवा" एक रोमानी वीर वृत्त है, जिसका कथानक अनूठा और दु खद है, जिसके नायक सशक्त और उद्देश्य-निष्ठ हैं।

साधारण मछुआ लडकी मार्यूत्का और सुसस्कृत अफसर—जो उसका शत्रु, बन्दी और प्रेमी है—दोनो जवान हैं और दोनो मे जीवन हिलोरे लेता है। किन्तु उनमे से एक लालच और स्वार्थ मुक्त नये मानवीय सम्बन्धो के प्रति क्रान्तिकारी जनता के प्रयासो को व्यक्त करता है और दूसरा व्यक्तिगत सुख सौभाग्य को ही सब कुछ मानता है। दोनो बन्दूक हाथ मे लिये हुए अपने रक्त की अन्तिम बूद बहाकर भी अपने अपने दृष्टिकोण की रक्षा करने को तैयार हैं। दुर्घटना के कारण वे दोनो अपने को एक सुनसान वीरान द्वीप पर पाते हैं और इस तरह ये प्रेमी शत्रु अनचाहे ही अपने-अपने मानवीय मूल्यो की प्रतियोगिता करने को विवश हो जाते हैं। इस स्थिति का विरोधाभास यह है कि फूहड और बहुत कम पढी लिखी

लडकी न केवल अपने को मुश्किल वक्त के अनुरूप अधिक आसानी से ढाल लेती है और अधिक दयालु तथा उदारमना रहती है, बल्कि अपने आदर्शों के प्रति स्वार्थहीनता तथा निष्ठा की मानसिक श्रेष्ठता भी प्रकट करती है। वह अपने स्वार्थपूर्ण सुख सौभाग्य के लिये राजी नही होती, जनसाधारण के सामान्य दुख मसीबतो से किनारा कर लेनेवाले इने गिने लोगो के सुखी जीवन का तिरस्कार करती है। लेखक ने कृत्रिम आदर्श रूप देकर "इकतालीसवा' की नायिका का स्तर नीचा नही किया। कठोर जीवन ने उसे जसा बनाया लेखक को वह उसी रूप मे पसन्द है वह सफेद सेना के अफसरो को अपनी गोलियो का निशाना बनाती है, उसमे बाल सुलभ भोलापन है, वह उल्टी-सीधी कवितायें रचती है, वह निश्छल निष्कपट है — लेखक को वह इसी स्वाभाविक रूप मे अच्छी लगती है। पर साथ ही लाव्रेन्योव ने अपनी नायिका की रुचिकर अशिष्टता का अनुमोदन नही किया, अशिष्टता को जनता के सामान्य अधिकार के रूप मे पुष्ट नही किया। इसके विपरीत ज्ञान, सस्कृति और सौन्दर्य के लिये क्रान्ति करनेवाले, साधारण व्यक्ति का स्वाभाविक खिचाव उसके हृदय को छूता है, उसमे आशा का सचार करता है।

कहानी का अन्त दुखद है। सम्भवत दो शत्रुतापूर्ण विचारधाराओ के कठोर क्रातिकारी सघर्ष म नायक-नायिका दोनो ही, जो जवान ह, बहुत भले हैं और जिन्ह प्रकृति ने प्यार और खुशियो के लिये ही बनाया है, नष्ट हो जाते हैं। इनका भाग्य उन नये नैतिक आदर्शों की पुष्टि का अनिवार्य और कष्टप्रद मूल्य है, जो ऐतिहासिक दृष्टि से अपना औचित्य न सिद्ध कर सकनेवाले पूर्वविद्यमान आदर्शों का स्थान ले रहे थे।

अराल सागर की नीलिमा और कराकुम रेगिस्तान की लाल रेत की पष्ठभूमि म प्यार और घृणा, मृत्यु और जीवन की उत्कट चाह का नाटक अपने पूरे निखार के साथ 'इकतालीसवा" मे उभरकर सामने आता है। १६२०-२३ के दौरान मध्य एशिया म लाल सेना म काम करते हुए लेखक के मन पर जिन अनुभूतियो की छाप पडी थी, रूसी पाठको को इस कहानी म अपन लिये इस अद्भुत अनूठी पृष्ठभूमि के सभी रगो की सुदर झलक मिलती है।

बोरीस लाव्रेन्योव का १६५६ म देहान्त हुआ। जीवन के अन्तिम

वर्षों तक वे साहित्य-सजन करते रहे, विशेषकर नाटककार के रूप मे। उन्होंने सोवियत साहित्य को बडे उपन्यास, रोचक लघु उपन्यास और लोकप्रिय नाटक दिये। किन्तु १९२४ मे लिखी गई "इक्तालीसवा" कहानी बोरीस लाव्रेन्योव और समूचे नवोदित क्रान्तिकारी रूसी गद्य-साहित्य की एक वास्तविक सुन्दरतम रचना बनी हुई है।

ये० स्तारिकोवा

पहला अध्याय

जो केवल इसलिए लिखा गया कि इसके बिना काम नहीं चल सकता था

मशीनगन की गोलियो की अबाध बौछाड से उत्तरी दिशा मे कज्जाको* की चमकती तलवारो का घेरा थोडी देर के लिए टूट गया। गुलाबी कमिसार येव्स्युकोव ने अपनी ताकत बटोरी, पूरा जोर लगाया और दनदनाता हुआ उस दरार से बाहर निकल गया।

रेगिस्तानी वीराने मे मौत के इस घेरे से जो लोग निकल भागे थे, उनमे गुलाबी येव्स्युकाव, उसके तेईस आदमी और मर्यूत्का शामिल थे।

बाकी एक सौ उन्नीस फौजी और लगभग सभी ऊट साप की तरह बल खाये हुए सकसौल के तना और तामारिस्क की लाल टहनिया के बीच ठण्डी रेत पर निर्जीव निष्प्राण पडे थे।

कज्जाक अफसर बुरीगा को यह सूचना दी गई कि बचे-बचाये दुश्मन भाग गये हैं। यह सुनकर उसने भालू के पजे जैसे हाथ से अपनी घनी मूछो को ताव दिया और जम्हाई लेते हुए अपना गुफा जैसा मुह खोल दिया और शब्दा को खीच-खीचकर बडे इतमीनान से कहा।—

"जहनुम मे जाने दो उन्हे! कोई जरूरत नही उनका पीछा करने की! बेकार घोडे थकेगे। रेगिस्तान खुद ही उनसे निपट लेगा।"

इसी बीच गुलाबी येव्स्युकोव, उसके तेईस आदमी और मर्यूत्का,

---

*कज्जाक—अक्तूबर क्राति के दौरान कज्जाकी सेनाए ही क्राति के विरुद्ध जारशाही के सघर्ष का मुख्य आधार थी।—स०

गीदड़ो की तरह जान छोड़कर असीम मरुस्थल मे अधिकाधिक दूर भागने जा रहे थे।

पाठक तो निश्चय ही यह जानने को बेचैन होगे कि येव्स्युकोव को "गुलाबी" क्यो कहा गया है।

लीजिये, मैं बताता हू आपको।

हुआ यह कि कोल्चाक* ने चमकती-नुकीली सगीनो और इन्सानी जिस्मो से ओरेनबूग रेलवे लाइन की नाकाबन्दी कर दी। उसने इजनो को खामोश कर दिया और वे साइड-लाइनो पर खडे-खडे जग खाने लगे। तब तुर्किस्तान के जनतन्त्र मे चमडा रगने का काला रग बिल्कुल खतम हो गया।

और यह जमाना था बमो-गोलो की धाय धाय, मारकाट और चमडे की पोशाकों का।

लोग घरेलू आराम की बात भूल चुके थे। उन्हे सामना करना होता था गोलियो की सनसनाहट का, बरखा और चिलचिलाती धूप का, गर्मी और सर्दी का। उन्हे तन ढापने के लिये मजबूत पोशाक की जरूरत थी।

इसलिये चमडे पर ही जोर था।

सामान्यत जाकेटो को नीलगू काले रग से रगा जाता था। यह रग उसी तरह पक्का और जानदार था जैसे कि इसके रगे चमडे के कपडे पहननेवाले।

मगर तुर्किस्तान मे इस काले रग का कही नाम निशान नही था।

इसलिए क्रान्तिकारी हेड-क्वाटर को जमन रासायनिक रगो के निजी सग्रहो पर अधिकार करना पडा। फरगाना घाटी की उज्बेक औरते इन्ही रगो से अपने बारीक रेशम को चमकता दमकता रग देती थी। इन्हा रगो से पतले पतले होठो वाली तुर्कमान नारियां अपने मशहूर लेकिन कालीनो पर रग बिरगे बेल-बूटे बनाती थी।

इन्ही रगो से अब ताजा चमडा रगा जाने लगा। तुर्किस्तान की लाल फौज मे कुछ ही दिनो मे गुलाबी, नारगी, पीला, नीला, आसमानी और हरा यानी इन्द्रधनुष के सभी रग नजर आने लगे।

---

*कोल्चाक—जारशाही नौसेना का एडमिरल। साइबेरिया मे सोवियत सत्ता के विरुद्ध लडाई मे सक्रिय भाग लिया। अक्तूबर समाजवादी क्रांति के बाद अपने को रूस का सर्वोच्च शासक घोषित कर दिया। १९२० मे उसकी फौजें पराजित हुई।—स०

सयोग की वात कि एक चेचवरु सप्लाईमन ने कमिसार येव्स्युकोव को गुलावी जाकेट और गुलाबी ही विरजस दे दी।

खुद येव्स्युकोव का चेहरा भी गुलावी था और उस पर वादामी वुदकिया थी। रही सिर की वात तो वहा वालो के बजाय घुघराले रोये थे।

हम यह वात भी जोड देना चाहते है कि कद उसका नाटा था और शरीर भारी भरकम, विल्कुल अडे की शक्ल जैसा। अव यह कल्पना करना कठिन नही होगा कि गुलावी जाकेट और विरजस पहन हुए वह चलता फिरता ईस्टर का रगीन अडा प्रतीत होता था।

मगर ईस्टर के अडे के समान दिखाई देनेवाल येव्स्युकोव को न तो ईस्टर मे आस्था थी और न ईसा मे विश्वास।

उसे विश्वास था सोवियत मे, इटरनेशनल, चेका* और उस काले रग की भारी पिस्तौल पर, जिसे वह अपनी मजवूत और खुरदरी उगलिया मे दवाये रहता था।

यव्स्युकोव के साथ तलवारा के जानलेवा चक्र से जो तेईस फौजी भाग निकले थे वे लाल फौज के साधारण फौजिया जसे फौजी थे, विल्कुल मामूली लोग।

इन्ही के साथ थी वह असाधारण लडकी मर्यूत्का।

मयूत्का एकदम यतीम थी। वह मछुओ की एक छोटी सी बस्ती की रहनेवाली थी। यह वस्ती अस्त्रखान के निकट वोल्गा के चौडे डेल्टा मे स्थित थी और ऊचे-ऊचे और घने सरकडो के बीच छिपी हुई थी।

सात साल की उम्र स उन्नीस साल की होने तक उसका अधिकतर समय एक वेंच पर वैठे-वैठे वीता था। इस वेंच पर मछलिया की अन्तडियो के चिकने धब्बे पडे हुए थे। वह कनवास का सख्त पतलून पहने हुए इस वेंच पर वठी-बैठी हेरिग मछलिया के रुपहले चिकने पेट चीरती रहती थी।

जब यह घोपणा हुई कि सभी शहरो और गावा मे लाल गाड भर्ती किये जा रहे है तो मयूत्का ने अचानक अपनी छुरी वेच मे घोपी, उठी

---

*चेका – क्रान्ति विरोधिया और तोड फोड करनेवाला का सामना करने के लिये १६१८ म नियुक्त किया गया असाधारण आयोग। – स०

ग्रौर कनवास का वही पतलून पहने हुए लाल गार्डों मे ग्रपना नाम लिखाने चल दी।

शुरू मे तो उसे भगा दिया गया। मगर वह हर दिन वहा हाज़िर रहती। तब वे लोग हस दिये ग्रौर दूसरो के समान नियमो पर ही उसे भी भर्ती कर लिया। पर उससे यह लिखवा लिया गया कि पूजी पर श्रम की निर्णायक जीत होने तक वह नारियो के ढर्रे के जीवन के निकट तक नही जायेगी, बच्चे नही जनगी।

मयूत्का बिल्कुल दुबली-पतली थी, नदी तट पर उगनेवाले सरकडे की तरह। बाल उसके कुछ कुछ लालिमा लिए हुए थे। वह उन्हे सिर के चारा ग्रोर चोटिया करके लपेट लेती ग्रौर ऊपर से बादामी रग की तुकमानी टोपी पहन लेती। उसकी ग्राखें थी बादाम जैसी तिरछी, जिनमे पीली-पीली चमक ग्रौर शरारत झलकती रहती थी।

मयूत्का के जीवन मे सबसे मुख्य चीज़ थी—सपने। वह दिन को भी सपने देखा करती। इतना ही नही, तुकबदी भी करती। कागज का जो भी छोटा मोटा टुकडा हाथ लग जाता, उसी पर पेंसिल के एक छोटे से टुकडे से टेढे मेढे ग्रक्षर घसीट देती।

दस्ते के सभी लोगो को इस बात की जानकारी थी कि वह तुकबदी करती है। दस्ता जब कभी किसी ऐसे नगर मे पहुचता, जहा से कोई स्थानीय समाचारपत्र निकलता होता तो मयूत्का उसके दफ्तर मे जाकर लिखने के कागज मागती।

वह उत्तेजना से खुश्क हुए ग्रपने होठो पर ज़बान फेरती ग्रौर बडी मेहनत से ग्रपनी कवितायें नकल करती। वह हर कविता का शीर्षक लिखती ग्रौर नीचे ग्रपने हस्ताक्षर करती—कवयित्री मरीया बासोवा।

मयूत्का भिन्न भिन्न विषयो पर कविता रचती। उसकी कवितायें होती क्रान्ति के बारे म, सघर्ष ग्रौर नेताग्रो के सम्बन्ध मे, जिनमे लेनिन भी शामिल थे—

हम मजदूर किसानो के नेता
हैं लेनिन,
उनकी मूर्ति सजा देंगे हम
चौक मे,

सुख आराम, महल सब
ठुकरायें
जो श्रम-संघर्षों से जूझे,
उनसे हाथ मिलायें।

वह समाचारपत्र के कार्यालय मे अपनी कवितायें लेकर पहुचती। सम्पादकमडल चमडे की जाकेट पहने और कधे पर बदूक उठाये हुए इस दुबली पतली छोकरी को देखकर आश्चर्यचकित होता। सम्पादकगण उससे कवितायें लेते और पढने का वचन देते।

सभी को इतमीनान की नज़र से देखती हुई मयूत्का बाहर चली जाती।

सम्पादकमडल का सेक्रेट्री ये कवितायें झपट लेता और बडे चाव से पढता। फिर क्या होता कि कधे उसके ऊपर को उठ जाते, कापने लगते और जब हसी रोके न रुकती तो उसकी सूरत अजीब-सी हो जाती। तब उसके सहयोगी इद-गिद जमा हो जाते और ठहाकों की गूज के बीच सेक्रेट्री कवितायें पढकर सुनाता।

खिडकियो के दासो पर बैठे सेक्रेट्री के सहयोगी लोटपोट हो जाते (उस जमाने मे कार्यालय मे फर्नीचर नही होता था)।

अगली सुबह को मयूत्का वहा फिर नमूदार होती। वह सेक्रेट्री के हसी के कारण हिलते कापते चेहरे को बहुत ध्यान से देखती, अपने कागज समेटती और गुनगुनाती आवाज़ मे कहती—

"मतलब यह कि छापना सम्भव नही? कच्ची हैं? मैं तो इन्हे रचती हू अपना दिल काट काटकर, बिल्कुल कुल्हाडी चला चलाकर, मगर बात फिर भी बनती नही। खैर, मैं और कोशिश करूगी—क्या किया जाये! न जाने ये इतनी मुश्किल क्यो है? मछली का हैज़ा!"

अपनी तुकमानी टोपी को माथे पर नीचे की ओर खीचती हुई और कधे झटककर वह बाहर चली जाती।

मयूत्का से कविता तो ऐसी-वैसी ही बन पाती, मगर उसका बदूक का निशाना बिल्कुल अचूक बैठता। अपने दस्ते मे उसकी निशानेबाजी का जवाब नही था। लडाई के समय वह हमेशा गुलाबी कमिसार के निकट रहती।

येव्स्युकोव उगली का इशारा करके कहता—

"मर्यूत्का! वह देख! वह रहा अफ़सर!"

मयूत्का उधर नजर घुमाती, होठों पर जबान फेरती और इतमीनान से बन्दूक ऊपर उठाती। धडाका होता, निशाना कभी खाली न जाता।

वह बन्दूक नीचे करती और हर गोली दागने के बाद गिनती करती हुई कहती –

"उन्तालीस, मछली का हैजा! चालीस, मछली का हैजा!"

'मछली का हैजा!'–यह मयूत्का का तकिया-कलाम था।

मां-बहन की गन्दी गालियां उसे पसन्द न थीं। लोग जब उसकी उपस्थिति में गालियां देते तो उसके माथे पर बल पड जाते, वह चुप रहती और उसका चेहरा तमतमा उठता।

मयूत्का ने भर्ती होते समय सैनिक कार्यालय में जो वचन दिया था, वह उसका कडाई से पालन कर रही थी। पूरे दस्ते में एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जो मयूत्का का प्यार पा जाने की डींग हांक सकता।

एक रात यह घटना घटी। गूचा नाम का मगयार कुछ दिनों से मयूत्का की ओर ललचाई नजरों से देखता रहा था। एक रात वह वहां पहुंच गया, जहां मयूत्का सो रही थी। उसके साथ बहुत बुरी बीती। मगयार जब रेंगता हुआ लौटा तो उसके तीन दांत गायब थे और माथे पर एक गुमटे की वृद्धि हो गई थी। पिस्तौल के दस्ते से मयूत्का ने उसकी खबर ली थी।

सिपाही मयूत्का से तरह-तरह के हंसी-मजाक करते, मगर लडाई के समय अपनी जान से कहीं अधिक उसकी जान की चिंता करते।

यह प्रमाण था किसी अज्ञात कोमल भावना का, जो उनकी सख्त और रंग-बिरंगी जाकेटों के नीचे उनके हृदयों की गहराई में कहीं छिपी बैठी थी। यह परिणाम था गर्म और सुखद शरीरवाली पत्नियों की विरह पीडा का, जिन्हें वे घर पर छोड आये थे।

हां तो ऐसे थे ये लोग–गुलाबी येव्स्युकोव, मयूत्का और तेईस सिपाही, जो ओर-छोरहीन मरुस्थल की ठण्डी रेत पर भाग निकले थे।

ये दिन थे फरवरी के, जब मौसम अपनी तूफानी तानें छेड देता है। रेत के टीलों के बीचवाली गुफाओं में फूली-फूली बर्फ का कालीन बिछ चुका था। तूफान और अंधेरे में भी अपना सफर जारी रखनेवाले इन लोगों के ऊपर का आकाश गूंजता रहता या तो चिल्लाती हवाओं से या हृदय को चीर जानेवाली दुश्मन की गोलियों से।

सफर जारी रखना बहुत कठिन था। फटेहाल जूते रेत और बर्फ मे गहरे घस घस जाते थे। भूखे ऊट बिलबिलाते, हुकारते और मुह से झाग निकालते।

तेज हवाओ के कारण सूखी झीलो पर नमक के कण चमक उठते। क्षितिज की रेखा सभी ओर सैकडो मीलो तक आकाश को पृथ्वी से अलग करती नजर आती। यह रेखा ऐसी स्पष्ट और समान थी मानो चाकू से काटकर बनाई गई हो।

सच बात तो यह है कि मेरी इस कहानी मे इस अध्याय की बिल्कुल जरूरत नही थी।

अच्छा तो यही होता कि मैं सीधे-सीधे मुख्य बात की चर्चा करता, उसी विषय से शुरू करता, जिसका आगे चलकर उल्लेख किया गया है।

मगर अन्य बहुत-सी बातो के अलावा पाठक को यह जानने की भी जरूरत थी कि गूर्येव के विशेष दस्ते का जो भाग जसे-तैसे करा-कुदुक कुए से सतीस किलोमीटर उत्तर पश्चिम मे पहुच गया था, वह कहा से आया था, क्या उसने एक लडकी थी और किस कारण कमिसार येव्स्युकोव को "गुलाबी" कहा जाता था।

चूकि काम नही चल सकता था, इसीलिये मैने यह अध्याय लिखा।

हा, मगर मैं आपको यह विश्वास दिला सकता हू कि इसका कोई महत्व नही है।

दूसरा अध्याय

जिसमे क्षितिज पर एक काला धब्बा-सा दिखाई देता है। निकट से देखने पर पता चलता है कि यह सफेद गार्ड का लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा ओत्रोक है

जान-गेलदी कुए से सोई-कुदुक कुए तक सत्तर किलोमीटर और वहा से उश्कान नामक चश्मे तक बासठ किलोमीटर का फासला और था।

सक्सौल के तने पर बन्दूक का दस्ता मारते हुए येव्स्युकोव ने ठिठुरी हुई आवाज मे कहा—

"ठहर जाओ, रात को यही पडाव होगा।"

सकसौल की टहनिया इकट्ठी करके इन लोगो ने आग जलाई। बल खाते हुए काले शोले उठने लगे और आग के चारो ओर नमी का एक काला-सा घेरा दिखाई देने लगा।

फौजियो ने अपने थलो से चावल और चर्बी निकाली। लोहे के बडे म पतीले मे ये दोनो चीजें उबलने लगी और भेड की चर्बी की तेज गध फलना शुरू हुई।

ये लोग आग के इद गिर्द गड्ड मड्ड हुए पडे थे। सभी चुप्पी साधे थे और इनके दात बज रहे थे। वे तन चीरती हुई हवा के ठण्डे झोको से बचने के लिए एक दूसरे से अधिकाधिक सट जाना चाहते थे। पर गर्माने के लिये वे उन्हे आग मे घुसेडे दे रहे थे। उनके बूटो का सख्त चमडा चटक रहा था।

बफ की सफेद धुध मे थके-हारे ऊटो की घटियो की उदास टनटनाहट गूज रही थी।

येव्स्युकोव ने कापती उगलियो से सिगरेट लपेटी।

धुए का बादल उडाते हुए उसन कठिनाई से कहा—

साथियो, अब यह तय करना है कि हम यहा से कहा जायेंगे।'

"हम जा ही कहा सकते है," आग के दूसरी ओर से एक मरी-सी आवाज सुनाई दी। 'हर हालत मे अत तो एक ही है—मौत। गूर्येव लौटना सम्भव नही—खून के प्यासे कज्जाक वहा मौजूद है और गूर्येव के सिवा कोई ऐसी जगह ही नही जहा जाना सम्भव हो।"

"खीवा के सम्बध मे क्या विचार है?"

'छि! सख्त जाडे म कराकुम के पार छ सौ किलोमीटर कसे जाया जायेगा? खायेंगे क्या? क्या पतलूनो म जुए पालकर खायेंगे?"

जोर का ठहाका गूजा। उसी मुर्दा आवाज मे निराशा से भरे ये शब्द सुनाई दिये—

एक ही अत है हमारा—मौत।"

गुलाबी वर्दी के नीचे येव्स्युकोव का दिल बठ गया। मगर उसने अपनी यह हालत जाहिर नही होने दी। उसन कडकती आवाज म कहा—

"तुम कायर! औरो को मत डराओ। मरना तो हर बेवकूफ जानता है। जरूरत है इस बात की कि अक्ल से काम लेकर जिन्दा रहा जाय!"

"अलेक्साद्रोव्स्की किले मे जाया जा सकता है। वहा हमारे ही भाई, यानी मछुए रहते हैं।"

"ऐसा करना ठीक नही होगा," यव्स्युकोव ने बात काटी—"मुझे सूचना मिल चुकी है देनीकिन* ने अपनी फौज वहा उतार दी है। क्रस्नोवोदस्की और अलेक्साद्रोव्स्की पर सफेद फौज का अधिकार है।"

कोई नीद मे कराह उठा।

येव्स्युकाव ने आग से गम हुए अपने घुटने पर जोर से हाथ मारा। फिर कडकती हुई आवाज़ मे कहा—

"यह बकवास बद करो! एक ही रास्ता है साथियो, अराल सागर की ओर! जैसे-तैसे अराल पहुचेंगे, वहा सागर तट के खानाबदोश किर्गीज़ो के पास जाकर कुछ खायें पियेंगे और फिर अराल का चक्कर काटकर कज़ालीन्स्क की ओर बढेंगे। कज़ालीन्स्क मे हमारा हेड-क्वाटर है। वहा जाना तो जैसे अपने घर जाना है।"

उसने ज़ोरदार आवाज़ मे यह कहा और चुप हो गया। उसे खुद भी इस बात का विश्वास नही था कि वे अराल सागर तक पहुच जायेंगे।

येव्स्युकोव के निकट लेटे हुए व्यक्ति ने सिर ऊपर उठाया और पूछा—

"मगर अराल तक खायेंगे क्या?"

येव्स्युकोव ने फिर जोरदार आवाज़ मे जवाब दिया—

"हिम्मत से काम लेना होगा। राजकुमार तो हम है नही! तुम तो चाहते हो मजेदार मछली और मधु! मगर इनके बिना ही काम चलाना पडेगा। अभी तो चावल भी है, थोडा आटा भी है।"

"तीन दिन से अधिक नही चलेगे!"

"तो क्या हुआ! चेरनीश खलीज तक पहुचने मे दस दिन लगेंगे। हमारे पास छ ऊट है। रसद खत्म होते ही ऊटो को काटना शुरू करेंगे। वैसे भी अब इनसे कोई लाभ नही। एक ऊट को काटेंगे और दूसरे पर मास लादकर आगे चल देंगे। बस इसी तरह मजिल तक पहुचेंगे।"

खामोशी छा गई। मर्यूत्का आग के करीब लेटी हुई थी। सिर को

---

*देनीकिन—ज़ारशाही जनरल, अक्तूबर क्रान्ति के दौरान दक्षिणी रूस मे सोवियत विरोधी सेनाओ का प्रधान सेनापति।—स०

हाथों से थामे वह अपनी बिल्ली जैसी आखो से शोला को एकटक ताक जा रही थी। येव्स्युकोव को अचानक बेचैनी-सी अनुभव हुई।

वह उठकर खडा हुआ और उसने अपनी जाकेट स बफ झाडी।

"बस, मामला तय है। मेरा आदेश है—पौ फटते ही अपनी राह चल दो। बहुत सम्भव है कि हम सभी न पहुच पायें," कमिसार की आवाज चौकन्नी हुई चिडिया की भाति ऊची हो गई, "मगर जाना तो हमे होगा ही यह क्रान्ति का सवाल है साथियो सारी दुनिया के श्रमजीवियो के लिये क्रान्ति।'

कमिसार ने बारी बारी से तेईस के तेईस फौजियो की आखो मे झाककर देखा। वह साल भर से उनकी आखो मे जिस चमक को देखने का अभ्यस्त हो गया था, वह आज गायब थी। उनकी आखो म उदासी थी, हताशा थी। उनकी झुकी झुकी पलको के नीचे निराशा और अविश्वास की झलक थी।

'पहले ऊटो को, फिर एक दूसरे को खायेंगे," किसी ने कहा।

फिर खामोशी छा गई।

येव्स्युकोव अचानक औरत की भाति चीख उठा—

' बक बक बद करो! क्राति के प्रति अपना कत्तव्य भूल गये क्या? बस खामोश! हुक्म—हुक्म है! नही मानोगे तो गोली से उडा दिये जाओगे!"

वह खासकर बैठ गया।

वह आदमी जो बदूक के गज से चावल हिला रहा था अप्रत्याशित ही बडी जिन्दादिली से कह उठा—

"नाक क्या सुडकते जा रहे हो? पेट मे चावल भरो! बेकार ही क्या पकाये ह मने! फौजी कहते हो अपने को, जुए हो जुए!"

उन्होंने चमचो से फले फूले और चिकने चिकने चावलो के गोले निकाले। इस कोशिश मे कि वे ठण्डे न हो जायें उन्होने चावलो को जल्दी से निगलकर अपने गले जला लिये। फिर भी मोम के समान ठण्डी चर्बी की मोटी सफेद तह उनके होठो पर जमी रह गई।

आग ठण्डी पडती जा रही थी। रात की काली पृष्ठभूमि म नारगी रग की चिगारियो की बौछार हो रही थी। लोग एक दूसरे के अधिक निकट आ गये ऊघे, खर्राटे लेने लगे और फिर नीद म कराहने और बडबडाने लगे।

मुह अधेरे ही किसी न कधा हिलाकर येव्स्युकोव को जगाया। अपनी

चिपकी हुई पलको को उसने बडी मुश्किल से खोला। वह उठकर बैठ गया और अभ्यासवश बदूक की तरफ हाथ बढा दिया।

"ठहरो।"

मर्यूत्का उसके ऊपर झुकी हुई थी। आधी के नीलगू भूरेपन म उसकी बिल्ली जसी आखें चमक रही थी।

"क्या बात है?"

'साथी कमिसार उठो! मगर चुपचाप! जब आप लोग सो रहे थे तब म ऊट पर सवार होकर निकली। जान-गेलदी से एक किर्गीज़ कारवा आ रहा है।"

येव्स्युकोव ने दूसरी ओर करवट ली। उसने आश्चयचकित होते हुए पूछा—

"कसा कारवा? क्या झूठ बोल रही हो?"

"बिल्कुल सच मछली का हैजा, बिल्कुल सच! किर्गीज़ है। चालीस ऊट है!"

येव्स्युकोव उछलकर खडा हुआ और उसने उगलिया मुह मे डालकर सीटी बजाई। तेईस फौजियो के लिये उठना और अपने ठिठुरे हुए हाथ पाव सीधे करना दूभर हो रहा था। पर जसे ही उन्होंने कारवा का नाम सुना उनकी जान मे जान आ गई।

बाईस फौजी उठे। तेईसवा जहा का तहा लेटा रहा। वह घोडे की छोलदारी ओढकर लेटा हुआ था और उसका सारा बदन काप रहा था।

"जारो का बुखार," फौजी के कालर के अदर उगली से उसके तन को छूकर मयूत्का ने विश्वास के साथ कहा।

"ओह यह तो बुरा हुआ! पर किया ही क्या जा सकता है? इसे एक नमदा ओढा दो और लेटा रहने दो। वापस आकर इसे सम्भाल लेगे। हा तो किधर है कारवा?'

मर्यूत्का ने हाथ स पश्चिम की ओर सकेत किया।

"बहुत दूर नही! कोई छ किलोमीटर होगा। अमीर किर्गीज़ है! ऊटा पर बहुत बडे बडे बडल लदे है!"

"अरे, अब सूरत निकल आई जीने की! बस उन्ह हाथ से निकल नही देना चाहिये। जैसे ही कारवा नज़र आये चारो ओर से घेर लो! दौड धूप की कुछ परवाह न करो! कुछ बाये से कुछ दाये से—बस चल दो!"

उन्होने एक ही पंक्ति मे रेत के टीलो के बीच से दायें-बायें होते हुए चलना शुरू किया। वे झुककर दोहरे हुए जा रहे थे, मगर उनमे जोश था और तेज़ चाल से उनके शरीरो मे गर्मी पैदा हो रही थी।

एक टीले की चोटी से उन्ह मेज की तरह समतल मदान मे ऊटो की एक कतार दिखाई दी।

ऊट अपने बडला के बोझ से दबे जा रहे थे।

"भगवान ने भेज दिया! बडी कृपा उसकी!" न्दाउद्याव नाम के एक चेचकरू फौजी ने फुसफुसाकर कहा।

येव्स्युकोव चुप न रह सका और बिगडते हुए कह उठा—

'भगवान ने? कितनी बार तुम्हे बताया जा चुका है कि भगवान नाम की कोई चीज नही। हर चीज का एक भौतिक नियम है।"

मगर यह वाद विवाद का समय नही था। हुक्म के मुताबिक सभी फौजी रेत के हर ढेर, झाडियो के हर झुरमुट का उपयोग करते हुए तेज़ी स झपट चले। वे अपनी बन्दूको को ऐसे कसकर थामे हुए थे कि उनकी उगलियो म दद होने लगा था। कारवा हाथ से निकल जाये, नहा, ऐसा तो हरगिज़ नही होने दिया जा सकता था। इन्ही ऊटा के साथ तो उनकी आशायें थी, वही तो उनके प्राण थे, उनके बचाव के साधन थे।

कारवा झूमता थामता और मस्ती मे चला आ रहा था। ऊटो की पीठो पर लदे हुए रगीन नमदे अब नजर आने लगे थे। ऊटो के साथ साथ गम लबादे और भेडियो की खाल की टोपिया पहने किर्गीज चल रहे थे।

येव्स्युकोव अचानक एक टीले पर उभरा। उसकी गुलाबी वर्दी चमक रही थी। वह बन्दूक ताने था। उसने चिल्लाकर कहा—

' जहा के तहा रुक जाओ! अगर बन्दूकें ह तो जमीन पर फेंक दो! कोई तमाशा नही करो, वरना सभी भून दिये जाओगे।'

यव्स्युकोव अभी अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि डरे सहमे हुए किर्गीज रेत पर गिर पडे।

तेज़ी स दौडने के कारण हाफते हुए लाल फौज के जवान सभी ओर स कारवा की तरफ लपके।

' जवानो ऊट पकड लो!" येव्स्युकोव चिल्लाया।

मगर येव्स्युकोव की आवाज कारवा की तरफ से आनेवाली गोलियो की एक सधी हुई और ज़ोरदार बौछार मे डूब गई।

सनसनाती हुई गोलिया मानो कुत्तो की तरह भौंक रही थी। येव्स्युकोव की बगल मे ही कोई हाथ फैलाकर रेत पर गिरा।

"लेट जाओ! अक्ल ठिकाने कर दो इन शैतानो की!" एक टीले की ओट मे होते हुए येव्स्युकोव ने चिल्लाकर कहा। गोलिया अधिक तेजी से आने लगी।

जमीन पर बिठा दिये गये ऊटा के पीछे से गोलिया आ रही थी। गोलिया चलानेवाले नजर नही आ रहे थे।

गोलिया सीधी निशाने पर आ रही थी। किर्गीज ऐसे अच्छे निशानेबाज नही होते, इसलिये यह उनका काम नही था।

लाल फौज के लेटे हुए जवानो के चारा ओर रेत पर गोलिया बरस रही थी। मरुस्थल गज रहा था। मगर धीरे धीरे कारवा की ओर से गोलिया आनी बन्द हो गइ।

लाल फौज के सिपाही छिप छिपकर और झपटते हुए आगे बढने लगे।

जब कोई तीस कदम का फासला रह गया तो येव्स्युकोव को ऊट के पीछे फर की टोपी के ऊपर सफेद कनटोपवाला सिर दिखाई दिया। उसे कधे और कधा पर सुनहरी फीतिया भी नजर आई।

"मर्यूत्का! वह देख! अफसर!" उसने उपने पीछे रगकर आती हुई मयूत्का की ओर गदन घुमाकर कहा।

"देख रही हू।"

उसने इतमीनान से निशाना बाधा और गोली चलाई।

शायद इसलिये कि मर्यूत्का की उगलिया बिल्कुल ठिठुरी पडी थी, या इसलिये कि उत्तेजना और दौड धूप के कारण वह काप रही थी, उसका निशाना चूक गया। उसने अभी "इक्तालीस, मछली का हैजा!" कहा ही था कि ऊट के पीछे से सफेद कनटोप और नीले कोटवाला व्यक्ति उठकर खडा हो गया और उसने अपनी बन्दूक ऊची उठाई। बन्दूक की सगीन के साथ सफेद रूमाल लहरा रहा था।

मयूत्का ने अपनी बन्दूक रेत पर फेंक दी और रोने लगी। वह अपन गन्दे और हवा से झुलसे हुए चेहरे पर आसू मलती जा रही थी।

येव्स्युकोव अफसर की ओर दौडा। लाल फौज का एक सिपाही येव्स्युकोव से पहले वहा जा पहुचा और दौडते हुए उसने अपनी सगीन भी सीधी कर ली थी ताकि अफसर की छाती पर जोर से प्रहार कर सके।

"मारना मत! जिन्दा पकड़ लो," कमिसार चिल्लाया।
नील कोटवाला को पत्थर जमीन पर गिरा दिया गया।
अफसर के पास अन्य साथी ऊंटों के पीछे भाग पड़े थे।
लाल सेना के सैनिकों ने हंसते और गालियाँ देते हुए ऊंटों की नुकेलें पकड़ीं और उन्हें दल में बांध लिया।
किर्गीज़ येव्स्युकोव के पीछे-पीछे हो लिये और उसकी जाकेट, बूटों, पतलून, पेटी और तलवार आदि को छूते हुए मिन्नत-समाजत करते और गिड़गिड़ाने लगे। उनकी आंखें दया की याचना कर रही थीं और वे तिरछी नज़र से उसके चेहरे को देख रहे थे।
कमिसार ने उन्हें डांटकर दूर किया, उनसे दूर भागा, उन्हें डांट डपटा। उसने दयार्द्रवित होते हुए नाक भौं सिकोड़कर उनकी चपटी नाकों और फूले फूले चेहरों में पिस्तौल की नली घुसेड़ी।
'रुको, दूर रहो। मिन्नत-समाजत करना बन्द करो!"
सफेद दाढ़ीवाले एक बुज़ुर्ग किर्गीज़ ने, जो औरों की तुलना में अधिक अच्छे कपड़े पहने था, येव्स्युकोव की पेटी पकड़ ली।
उसने फुसफुसाते और गिड़गिड़ाते हुए जल्दी-जल्दी और टूटी फूटी रूसी में कहा—
अरे जनाब बहुत बुरा किया आपने ऊंट तो किर्गीज़ की जान होता है। ऊंट गया तो किर्गीज़ की जान गई अरे सरकार, ऐसा ज़ुल्म नहीं करें। रकम चाहिये—यह हाज़िर है। चांदी के सिक्के, ज़ार के सिक्के, कागज़ी नोट हुक्म कीजिये कितना चाहिये! ऊंट लौटा दीजिये।"
'अरे मूर्ख, यह क्या नहीं समझता कि ऊंटों के बिना हम बक्त हम भी मौत के मुंह में पहुंच जायेंगे। मैं इन्हें चुराकर थोड़े ही लिये जा रहा हूं, क्रान्ति के लिये इनकी आवश्यकता है, अस्थाई रूप से। तुम कम्बख्त तो यहां से पैदल भी अपने घर पहुंच जाओगे, मगर हमें तो मौत का सामना करना होगा।"
'अरे सरकार, बहुत बुरा कर रहे हैं। ऊंट लौटा दीजिये। माल ले लीजिये, रकम ले लीजिये, किर्गीज़ गिड़गिड़ाया।
"जहन्नुम में जाओ तुम! कह दिया और बस! बकबक बन्द करो। यह लो रसीद और चलते फिरते नज़र आओ!"
येव्स्युकोव ने अखबार के एक टुकड़े पर रसीद लिखकर किर्गीज़ को दी।

किर्गीज ने यह रसीद रेत पर फेंक दी, गिर पडा और हाथो से मुह ढापकर रोने लगा।

बाकी किर्गीज चुपचाप खडे थे। उनकी तिरछी काली आखें काप रही थी और उनसे चुपचाप आसू झर रहे थे।

येव्स्युकोव घूमा। उसे बन्दी बनाये गये अफसर का ध्यान आया।

वह दो फौजियो के बीच खडा था। उसका चेहरा शान्त था। वह फेल्ट के खूबसूरत स्वीडिश ऊचे बूट पहने था और दाया पाव आगे को किये हुए शान से खडा था। वह सिगरेट पीता हुआ कमिसार को तिरस्कार की दृष्टि से देख रहा था।

"कौन हो तुम?" येव्स्युकोव ने पूछा।

"सफेद गार्ड का लेफ्टीनेन्ट गोवोरूखा-ओत्रोक। और तुम कौन हो?" अफसर ने धुए का बादल उडाते हुए जवाब मे पूछा।

और उसने अपना सिर ऊपर उठाया।

उसके सिर ऊपर उठाने पर लाल फौज के सिपाहियो और येव्स्युकोव ने जब उसकी आखें देखी तो दग रह गये। उसकी आखें थी एकदम नीली नीली। ऐसा लगता था मानो साबुन के झाग के बीच बढिया फ्रासीसी नील के दो गोले तैर रहे हो।

तीसरा अध्याय

जिसमे ऊटो के बिना मध्य एशिया के मरुस्थल मे यात्रा की कठिनाइयो का उल्लेख किया गया है और कोलम्बस के साथियो के अनुभव का हवाला दिया गया है

मर्यूत्का की सूची मे गार्ड के लेफ्टीनेन्ट गोवोरूखा-ओत्रोक को इकतालीसवा होना चाहिये था।

मगर या तो ठण्ड के कारण या उत्तेजित होने की वजह से मर्यूत्का का निशाना चूक गया था।

इस तरह जीवित लोगो की सूची मे यह लेफ्टीनेन्ट एक अतिरिक्त सख्या था।

येव्स्युकोव के आदेशानुसार लेफ्टीनेन्ट की तलाशी ली गई। उसकी खूबसूरत जाकेट की पीठ मे एक गुप्त जेब मिली।

लाल फौज के आदमियो ने जब यह जब खोज निकाली तो लेफ्टीनेट एक वहशी घोडे की तरह उछला-कूदा। मगर उसे कसकर काबू मे रखा गया। उसके कापते हुए होठ और चेहरे का उडा हुआ रग ही उसकी उत्तेजना और परेशानी को व्यक्त कर रहा था।

येव्स्युकोव ने बहुत सावधानी से पैकेट खोला और उसके भीतर रखी हुई दस्तावेज को बहुत ध्यान से पढा। उसने सिर हिलाया और सोच मे डूब गया।

दस्तावेज मे लिखा था कि रूस के सर्वोच्च शासक एडमिरल कोल्चाक ने गाड के लेफ्टीनेन्ट गोवोरूखा ओत्रोक, वदीम निकोलायेविच, को जनरल देनीकिन की कैस्पियन तटवर्ती सरकार के सम्मुख अपनी ओर से प्रतिनिधित्व करने का उत्तरदायित्व सौंपा है।

पत्र मे यह सकेत भी था कि लेफ्टीनेन्ट को कुछ गुप्त बाते भी बताई गई ह जो वह जनरल द्रस्सेनो को जबानी बतायेगा।

येव्स्युकोव ने बडी सावधानी से पैकेट को लपेटकर अपनी जाकेट की भीतरवाली जेब मे रखा और लेफ्टीनेन्ट से पूछा—

"हा, तो अफसर साहब, क्या है आपकी गुप्त बात? कुछ छिपाये बिना सब कुछ साफ-साफ बता देने मे ही आपकी भलाई है। आप अब लाल फौज के सिपाहियो के कैदी है और म उनका कमाडर, कमिसार अर्सेन्ती येव्स्युकोव हू।'

लेफ्टीनन्ट ने अपनी चचल नीली आखे येव्स्युकोव की ओर उठाइ। वह मुस्कराया और खटाक-से अपनी एडिया बजाई।

' बडी खुशी हुई आपसे मिलकर, श्रीमान येव्स्युकोव। मगर अफसोस है कि मरी सरकार ने आप जैसी शानदार हस्ती स कूटनीतिक बातचीत करन का अधिकार मुझे नही दिया है।"

यव्स्युकाव क कुन्यियो वाले चेहरे का रग उड गया। पूरे दस्ते के सामन यह लेफ्टीनन्ट उसका मजाक उडा रहा था।

कमिसार न पिस्तौल निकाल ली।

"सफेद हरामी! बातें न बना। सीधे सीधे सब कुछ बता दे, वरना यह गोली तुम्हारे पार-पार हो जायेगी।"

लफ्टीनन्ट न कधे मटक।

"बेशक तुम कमिसार हो, यदि मार डालोगे तब तो कुछ भी हाथ पल्ले नही पडेगा!"

कमिसार ने भला-बुरा कहते हुए पिस्तौल नीची कर ली।

"मैं तुझे छठी का दूध याद करा दूगा, कुत्ते के पिल्ले! तू अभी सब कुछ बतायेगा मुझे!" वह बडबडाया।

लेफ्टीनेन्ट पहले की भाति ही होठ के एक सिरे को दबाकर मुस्कराता रहा।

येव्स्युकोव ने थूका और वहा से हट गया।

"क्यो साथी कमिसार, भेज दें इसे दूसरी दुनिया मे?" लाल फौज के एक सिपाही ने पूछा।

कमिसार ने नाखन से अपनी नाक खुजायी।

"नही इससे काम नही चलेगा। वह सख्त जान है, बहुत सख्त। इसे जैसे-तैसे कजालीस्क पहुचाना होगा। वहा हेड-क्वाटर मे वे इससे सब कुछ उगलवा लेगे।"

'इसको कहा साथ-साथ लिये फिरेगे! खुद ही तो पहुच जायें?'

"क्या सफेद अफसरो की भर्ती शरू कर दी अब?"

येव्स्युकोव तुनककर बोला—

"तुम्ह मतलब? मैं साथ ले चल रहा हू, म ही जिम्मेदार हू। बस खत्म।"

जब घूमा तो मर्यूत्का पर नजर पडी।

"सुना मर्यूत्का! यह अफसर साहब तुम्हारी देखरेख मे रहेगा। देखो, अपनी आखें खुली रखना। अगर यह भाग गया तो तुम्हारी खाल खीच लूगा!"

मर्यूत्का ने चुपचाप बन्दूक कधे पर रख ली। वह बन्दी के पास गई।

"इधर आओ तो! मेरी निगरानी मे रहोगे। मगर इस भुलावे म मत रहना कि मैं औरत हू, इसलिये निकल भागोगे। तीन सौ कदम पर भागते हुए भी तुम्हे गोली से उडा दूगी। एक बार निशाना चूक गया, दोबारा ऐसा नही होने का, मछली का हैजा!"

लेफ्टीनेन्ट ने कनखियो से मर्यूत्का को देखा। हसी के मारे उसके कधे हिल रहे थे। उसने शिष्टता से सिर झुकाकर कहा—

"ऐसी सुदरी का बदी होना मेरे लिये गर्व की बात है।"

"क्या? क्या बक रहे हो?" उसे तिरस्कार की दृष्टि से देखते हुए मयूत्का ने पूछा। "लुटेरे बदमाश! माजूरका नाच नाचने के सिवा शायद कुछ भी नहीं जानते? बेकार बक-बक मत करो। जबान बंद करो और चलो!"

उन्होंने एक छोटी-सी झील के किनारे रात बिताई।

बर्फ की तह के नीचे खारे पानी में से भयाडीती और गली-सड़ी चीज़ों की गंध आ रही थी।

ये लोग खूब ही मजे की नींद सोये। किर्गीजों के ऊंटों से उन्होंने कालीन और नमदे उतारकर अपने चारों ओर लपेट लिये थे। मुर्दों की तरह सोये!

रात के वक्त मयूत्का ने रस्सी से लेफ्टीनेंट के हाथ-पैर कसकर बांध दिये, रस्सी को उसकी कमर के गिर्द लपेटकर उसके दूसरे सिरे को अपने हाथ पर बांध लिया।

सिपाहियों ने जी भरकर मजाक उड़ाया। फूली-फूली आंखों वाला सेम्यानी चिल्लाया—

'अरे भाइयो, मयूत्का ने अपने प्रेमी को जादू की डोर से बांध लिया है। अब उसे ऐसी घुट्टी पिलायेगी कि वह लट्टू हो जायेगा।"

इन हंसोड़ों को घृणा की दृष्टि से देखते हुए मयूत्का ने कहा—

भौंकते रहो जितना जी चाहे, मछली का हैजा! तुम्हें हंसी आती है अगर भाग गया तो?"

'उल्लू हो तुम! उसका क्या दिमाग चल निकला है? इस रेगिस्तान में भला भागकर वह कहां जायेगा?

'रेगिस्तान हो या न हो, पर इस तरह अधिक बेहतर है। सो जा तू, सूरमा!'

मयूत्का ने लेफ्टीनेंट को नमदे के नीचे धकेल दिया और खुद कुछ हटकर सो गई।

नमदे का कम्बल या चादर ओढ़कर सोने में तो बहुत मजा आता है। नमदे से जुलाई की गर्मी घास और दूर-दूर तक फैले हुए सीमाहीन खेतों की अनुभूति होती है। सुख चैन की नींद में डूबा हुआ शरीर बिल्कुल गर्म और नम हो जाता है।

येव्स्युकोव अपने कालीन के नीचे खर्राटे ले रहा था। मयूत्का के

चेहरे पर स्वप्निल-सी मुस्का थी। लेफ्टीनन्ट गावारुखा ग्रावाव चित लेटा हुआ गहरी नींद सो रहा था। उसके पतले पतले होठ एक सुदर रेखा बना रहे थे।

नही सो रहा था तो सिफ सतरी। वह नमद के सिरे पर बैठा था और बन्दूक उसके घुटना पर रखी थी। बदूक उसे पत्नी और प्रेयसी से भी अधिक प्यारी थी।

सतरी बफ की सफेद धुध के बीच से उस तरफ नजर लगाये था, जिधर से ऊटा की पटिया की धीमी धीमी टन-टन सुनाई द रही थी।

चवालीस ऊट हैं अब। मजिल तक पहुच ही जायेंगे, चाहे कठिनाइया का सामना भी करना पडे।

लाल फौज के सिपाहिया के मन मे अब डर-सशय नही था।

तज हवा के झाक चीखते हुए आ रह थे और सतरी के तन को चीरते चले जा रहे थे। ठण्ड से सिकुडते हुए सतरी ने पीठ पर नमदा लपेट लिया। बर्फीली छुरिया न उसका तन काटना बद कर दिया और शरीर मे गर्मी आ गई।

बफ, धुध, रेत।

अपरिचित एशियाई देश।

"ऊट कहा ह? तेरा बेडा गक हो, ऊट कहा ह? लानत है तुम पर! सो रहा है? सा रहा है, कम्बख्त? यह तूने क्या कर डाला कमीने? तेरी चमडी उधेड डालूगा!"

बगल म बूट की जोरदार ठोकर लगने से सतरी का सिर चकरा उठा। वह बहकी-बहकी नजर से चारा ओर देखन लगा।

बफ और धुध।

हल्का हल्का धुधलका, सुबह का धुधलका। रेत।

ऊट गायब थे।

ऊट जहा खडे थे वहा ऊटो और आदमिया के पैरा के निशान थे। वहा निशान थे किर्गीजो के नुकीले जूतो के।

लगता था कि तीन किर्गीज रात भर दस्ते का पीछा करते रहे थे और जैसे ही सन्तरी की आख लगी थी ऊटा को ले उडे थे।

लाल फौज के सिपाही चुपचाप खडे थे। ऊट गायब थे। ढूढा भी जाये तो कहा? रेगिस्तान मे खोज लेना सम्भव नही

'तुझ कुत्ते के पिल्ले को अगर गोली भी मार दी जाये तो वह भी कम है!" येव्स्युकोव ने सतरी से कहा।

सतरी खामोश था। आसू की बूदे उसकी आखो की कोरो म मोतिया की तरह चमकर रह गई थी।

लेफ्टीनेन्ट नमदे के नीचे से निकला। इधर उधर देखकर उसने सीटी बजाई और मजाक उडाते हुए कहा—

'यह रहा सोवियत अनुशासन! भगवान ही मालिक है!"

चुप रह पाजी!" येव्स्युकोव गुस्से से गरजा और फिर पराई-सी आवाज मे धीरे-से फुसफुसाया— 'यहा खडे-खडे क्या कर रहे हो भाइयो, बढ चलो!'

अब केवल ग्यारह व्यक्ति एक ही पक्ति मे घसिटते हुए चल रहे थे। वे थककर चूर थे और लडखडाते हुए रेतीले टीलो को पार कर रहे थे।

दस सिपाही इस भयानक रास्ते मे दम तोड चुके थे।

सुबह कोई न कोई बहुत बुरी हालत मे आखिरी बार मुदी हुई आखें मुश्किल से खोलता, लकडी की तरह सख्त और सूजे हुए पैर फलाता और भारी भारी आवाजें निकालता।

गुलाबी येव्स्युकोव, लेटे हुए इस व्यक्ति के करीब जाता। कमिसार का चेहरा अब जाकेट की तरह गुलाबी नही रह गया था। वह सूख गया था और उस पर दुख मुसीबतो की छाप साफ नजर आती थी। चेहरे की बुदिया तावे के पुराने सिक्को जैसी लगती थी।

कमिसार इस सिपाही को गौर से देखता और सिर हिलाता। फिर उसकी पिस्तौल की नली इस आदमी की चिपकी-सूखी कनपटी म एक सूराख कर देती। एक काला-सा और लगभग रक्तहीन धब्बा बाकी रह जाता। झटपट उस पर रेत डालकर य लाग आगे चल देते। सिपाहियो की जाकेटें और पतलून तार-तार हो चुके थे। बूट टूटकर रास्ते म गिर गये थे। उन्होने परो पर नमदे के टुकडे और ठण्ड स सुन्न हुई उगलियो पर चिथडे लपेट लिये थे।

अब दस आदमी लडखडाते, हवा के झोको मे डगमगाते हुए आगे बढ़ रहे थे।

हा, एक व्यक्ति था, जो बहुत शात भाव से तनकर चल रहा था। यह था गार्ड का लेफ्टीनेन्ट गावारूखा ओत्रोक।

लाल फौज के सिपाहियो ने कई बार येव्स्युकोव से कहा—

"साथी कमिसार! कब तक इसे इसी तरह साथ साथ लटकाये फिरेगे? बेकार ही इसे भी खिलाना पड रहा है! फिर इसके कपडे, इसके जूते भी बढिया ह, उन्ह बाटा जा सकता है।"

मगर येव्स्युकोव न बहुत कडाई से ऐसा करने से मना कर दिया।

"इसे या ता हेड-क्वाटर मे पहुचाऊगा या फिर खुद भी इसके साथ ही खत्म हो जाऊगा। वह बहुत सी बात बता सकता है। ऐसे आदमी को याही खत्म कर देना ठीक नही। उसे उचित सजा मिलेगी।"

लेफ्टीनेन्ट की कुहनिया रस्सी से बधी हुई थी और रस्सी का दूसरा सिरा मयूत्का की कमर से। मयूत्का बहुत मुश्किल से घसिटती हुई चल रही थी। उसके रक्तहीन और सफेद चहरे पर बिल्ली जसी पीली और चमकती हुई आखें अब और भी अधिक बडी-बडी नजर आने लगी थी।

मगर लेफ्टीनेन्ट बिल्कुल भला चगा था। हा, उसके चेहरे का रग अवश्य कुछ फीका पड गया था।

येव्स्युकोव एक दिन लेफ्टीनेन्ट के पास गया। उसने उसकी गहरी नीली आखो मे आखें डाली और बडी कठिनाई से कहा—

"शैतान ही जानता है तुझे! तू आदमी है या कुछ और? शरीर पर मास नही, मगर शक्ति है दो के बराबर! कहा से आई तुझमे इतनी शक्ति?"

लेफ्टीनेन्ट के होठा पर सदा की सी चिढानवाली मुस्कान फैल गई। उसने शात भाव से जवाब दिया—

'तुम्हारी समझ मे नही आयगी यह बात। सस्कृति का अतर है। तुम्हारी आत्मा तुम्हारे शरीर की दासी है और मेरा शरीर मरी आत्मा के इशारे मानता है। मै अपन शरीर को सभी कुछ सहन करन का आदश दे सकता हू।"

तो यह बात है," कमिसार ने शब्दा पर जोर देकर कहा।

दोना ओर रेतीली पहाडिया सिर उठाये खडी थी—नम-नम, ढालू

ग्रौर लहराती हुई। इनकी चोटियों पर रत सापा की तरह तेज्र हवा मे फनफना ग्रौर लहरा रही थी। लगता था कि रेगिस्तान का कभी ग्रन्त नही होगा।

जब-तब कोई न कोई दात भीचकर रेत पर गिर पडता। वह हताश होकर कहता –

"ग्रब ग्रागे नही चला जाता। मुझे यही छोड दो। ग्रौर हिम्मत नही रही।"

येव्स्युकोव उसके करीब जाता, डाटता डपटता ग्रौर धकेलते हुए कहता –

'चल ग्रागे! क्रान्ति को पीठ दिखाते हुए शम नही ग्राती?"

ये लोग जसे-तैसे उठते। ग्रागे चल देते। एक दिन एक सिपाही रेंगता हुग्रा एक पहाडी की चोटी पर चढा, ग्रपना सूखा हुग्रा सिर घुमाकर वह चीख उठा –

'भाइयो, ग्रराल समुद्र!"

इतना कहकर वह मुह के बल गिर पडा। येव्स्युकोव ग्रपनी बची-खुची शक्ति समेटकर पहाडी पर चढा। उसने ग्रपनी फूली हुई ग्राखो के सामने चकाचौंध करती हुई नीलिमा देखी। उसने ग्राखे मूद ली ग्रौर ग्रपनी टेढी उगलियो से रेत खुरचने लगा।

कमिसार न कोलम्बस का नाम नही सुना था। उसे यह भी मालूम नही था कि "जमीन!" शब्द सुनकर स्पेनी मल्लाह भी ग्रपनी उगलियो स इसी भाति जहाज के डेक को खुरचन लगे थे।

चौथा ग्रध्याय

जिसमे मर्यूत्का पहली बार लेफ्टीनेन्ट से बातचीत करती है ग्रौर कमिसार एक समुद्री ग्रभियान दल भेजता है

दूसरे दिन तट पर बसी हुई किर्गीजो की एक बस्ती नजर ग्राई।

इसकी पहली निशानी थी उपला के धुए की तेज गध जो रेतीली पहाडियो की ग्रोर से ग्रा रही थी। उनके खाली पेटा म बेतहाशा चूहे गोडने लगे।

फिर उन्हे खेमा के मटमैले गुम्बज दिखाई दिये। छोटे छोटे कदवाले, झबरे कुत्ते भौंकते हुए उनकी तरफ दौडे।

किर्गीज ग्रपन अपने खेमा के दरवाज़े पर जमा हो गये। वे चलते फिरते मानवीय पजरो को दया और आश्चय की दृष्टि से देख रहे थे।

बैठी हुई नाकवाला एक बूढा अपनी बकरदाढी सहलाता और फिर छाती पर हाथ फेरता हुआ बोला—

' सलाम अलैकम। किधर जा रहे हो जवान ? "

येव्स्युकोव ने धीरे से हाथ मिलाया।

' हम लाल फौज के सिपाही ह। कज़ालीन्स्क को जा रहे हैं। कृपया हम घर ले जाकर खाना खिलाओ। सोवियत इसके लिये तुम्हारा आभार मानेगी।"

किर्गीज ने अपनी बकरदाढी हिलाई और होठ चबाये—

अरे हुजूर   लाल सिपाही। बोल्शेविक। केन्द्र स आय है ? '

"नही बाबा। केन्द्र से नही, गूर्येव से आ रहे ह।"

"गूर्येव से ? अरे हुजूर, अरे हुजूर। करा-कुम को पार करते आये ह ? "

किर्गीज़ की तिरछी आखो मे इस व्यक्ति के लिये आदर और भय की भावना चमक उठी। यह फरवरी महीने की बर्फीली हवाओ से लोहा लेता हुआ करा-कुम का भयानक मरुस्थल पैदल पार करके गूर्येव से अराल सागर पहुचा था।

बूढे ने ताली बजाई। कुछ औरत भागती हुई आइ। बूढे ने घरघराती आवाज़ म उन्हे कुछ हुक्म दिया।

उसन कमिसार की बाह थामी—

"चलो जवान खेमे मे। थोडा सो लो। फिर उठकर पुलाव खाना।"

सिपाही खेमे मे मुर्दों की तरह जा पडे और ऐस सोये कि रात होन तक उन्होने करवट भी न ली। किर्गीज़ो न पुलाव तैयार किया और मेहमानो को खिलाया। उन्होने सिपाहियो के कधो की उभरी हुई हड्डियो को सहानुभूति से थपथपाया।

"खाओ जवान, खाओ! तुम भूख गये हो! खाओ, तगडे हो जाओगे।'

ये लोग खाने पर बस टूट ही पडे। चर्बीवाले पुलाव से इनके पेट फूल गये और बहुतो की तो तबीयत भी खराब हो गयी। व भागकर मदान म जाते, गले मे उगलिया डालकर तबीयत हल्की करत और लौटकर फिर खाने लगते। अब उनके पेट भरे हुए थे, तन गम थे। वे फिर सो गये।

मगर मयूत्का और लेफ्टीनेन्ट नही सोये।

मयूत्का अगीठी मे जलते हुए अगारो के करीब बैठी थी। वह बीती हुई मुसीबतो को भूल चुकी थी।

उसने अपने थैले से पेंसिल का एक टुकडा निकाला और सचित्र मासिक पत्रिका 'नया जमाना' के एक पृष्ठ पर कुछ अक्षर लिखे। यह पत्रिका उसन एक किर्गीज औरत से माग ली थी। इस पूरे के पूरे पष्ठ पर वित्त मन्त्री काउट कोकोवत्सेव का चित्र अकित था। मयूत्का ने काउट के चौडे माथे और सुनहरी दाढी पर टेढे मेढे अक्षर लिखे।

रस्सी अभी भी मयूत्का की कमर म बधी थी और उसका दूसरा सिरा पीठ पर बधे हुए लेफ्टीनेन्ट के हाथो को कसे हुए था।

मयूत्का ने केवल एक घण्टे के लिये लेफ्टीनेन्ट के हाथ खोले थे ताकि वह पुलाव खा सके। इसके बाद उसने लेफ्टीनेन्ट के हाथ फिर कसकर बाध दिये।

लाल फौज के सिपाही मजाक करते—

"बिल्कुल ऐस जसे जजीर मे कुत्ता बधा हो।'

'मयूत्का लगता है कि तुम तो दिल दे बठी हो? बाधकर रखो अपने प्रियतम को। कही ऐसा न हो कि परी दश की कोई राजकुमारी उडन खटोले पर उडती हुई आये और तुम्हारे साजन को उडा ले जाये।'

मयूत्का चुप्पी साधे रहती।

लेफ्टीनेन्ट खेमे की एक चोब स टेक लगाये बैठा था। उसकी चचल नीली आखे धीरे धीरे हिलने डुलनेवाली पेंसिल को बहुत ध्यान स दख रही थी।

आग की ओर झुकत हुए उसन पूछा—

क्या लिख रही हो?"

मयूत्का न अपनी लटकती हुई सुनहरी जुल्फ के बीच म उस पर नजर डाली और कहा—

तुम्हे मतलब?'

"शायद तुम पत्र लिखना चाहती हो? तुम बोलती जाओ, मै लिख दूगा।"

मर्यूल्का जरा हस दी।

"बहुत चालाक बनते हो! मतलब यह कि तुम्हारे हाथ खोल दू तुम मुझे एक हाथ जमाओ और नौ दो ग्यारह हो जाओ! ऐसी बुद्धू न समझो तुम मुझे! तुम्हारी मन्द की मुझे जरूरत नही। मै खत नही, कविता लिख रही हू।"

लेफ्टीनेन्ट की पलके आश्चय से फैल गई। उसन चोब से पीठ हटाई—

"क वि-ता? तुम कविता लिखती हो?"

मयूस्का न पसिल से लिखना बन्द कर दिया और शम से लाल हो गई।

"घूर क्या रहे हो? हैं? तुम क्या समझते हो कि बस तुम ही बडे हजरत हो जो माजूर्का नाच नाचना जानते हो और यह कि मै एक बेवकूफ देहाती लडकी हू! तुम से ज्यादा बेवकूफ नही हू!'

लेफ्टीनेन्ट ने कधे फटके, लेकिन उसके हाथ नही हिले।

'मै तुम्ह बेवकूफ नही समझता हू। सिफ हैरान हो रहा हू। कविता करने का भला आजकल कौनसा जमाना है?"

मर्यूल्का ने अपनी पसिल एक ओर रख दी और झटके के साथ सिर ऊपर उठाया। उसके हल्के लाल रग के बाल कधे पर फैल गये।

"सचमुच बडे ही अजीब आदमी हो तुम! तुम शायद यही समझते हो कि रोयो के नम-नम विस्तर पर लेटकर ही कविता रची जा सकती है? पर अगर मेरी आत्मा बेकरार हो कविता करने का तो? कैसे हमने भूखे पेट और ठण्ड से ठिठुरते हुए रेगिस्तान पार किया, मै इसे शब्दो मे व्यक्त करने के सपने देखती हू। काश, म लोगो क दिलो तक अपनी बात पहुचा सकती! म तो अपन दिल के खून से कविता रचती हू, मगर कोई छापता ही नही। म बस जमा करती हू। लोग कहते है कि मुझे पढना चाहिये। मगर आजकल पढन का वक्त ही कहा है? म तो सीधे-सीधे ढग से अपने मन की बात लिखती हू!"

लेफ्टीनन्ट जरा सा मुस्कराया।

"सुनाओ तो! बहुत जिज्ञासा है मुझे। म कविता का थोडा-बहुत समझता हू।"

"तुम्हारी समझ मे नही आयेगी यह। तुम्हारी नसो मे अमीरो का खून है, बहुत चिकना चिकना। तुम फूलो और सुन्दरियो के बारे म रची गई कवितायें पसन्द करते हो और मैं लिखती हू गरीबो के बारे मे, शान्ति के सम्बध मे," मयूत्का न दुखी होते हुए कहा।

"समझूगा क्या नही?" लेफ्टीनेन्ट न जवाब दिया। "बहुत सम्भव है कि उनकी विषय वस्तु मेरे लिए परायी हो, मगर आदमी आदमी को समझ तो सकता ही है!"

मयूत्का न कुछ भिझकते हुए गोवोरुखा-ओत्रोक का चित्र उल्टा और आखें झुका ली।

'खैर चाहते हो तो सुनो! मगर हसना नही। तुम्हारे बाप न तो बीस साल की उम्र तक तुम्हारी देखभाल के लिये धाय रख छोडी होगी मगर मुझे तो अपनी हिम्मत से ही इस उम्र तक पहुचना पडा था।"

'नही हसूगा! कसम खाता हू।'

'तो सुनो! मैने सब कुछ ही कविता मे लिख डाला है। कैसे हम कज़ाको से जूझे, कैसे बचकर रेगिस्तान मे पहुचे।'

मयूत्का ने खासकर गला साफ किया। उसने नीची आवाज म शब्दो पर ज़ोर दे देकर कविता-पाठ शुरू किया। वह भयानक ढग से अपनी आखें नचा रही थी।

> आय, आये हम पर कज़ाक चढकर
> लिया हमने उनसे लोहा डटकर
> दुश्मनो की सख्या थी भारी।
> हमने बाजी जीती, पर हारी॥
> रखकर हथेली पर जान हम लडे।
> थोडे थे बहुत हम, फिर भी अडे॥
> तेईस हम बचे, और गय मारे!
> मार्च से हम हटे, हार॥

'बस इसस आगे यह कविता किसी तरह चल ही नही पा रही मछली का हैजा! समझ मे नही आता कि ऊटो की चर्चा कैसे करू?' मयूत्का न परेशान होत हुए कहा।

लेफ्टीनन्ट की नीली आखें तो छाया म थी। केवल आखो की सफ़ेदी

पर अगीठी की चमकती हुई आग की झलक पड रही थी। उसने कुछ देर बाद कहा—

"हा खासी अच्छी है! बहुत सी अनुभूतिया ह, भावनाये हैं। समझी न? साफ पता चलता है कि दिल की गहराई से निकली पक्तिया ह।" इतना कहने के बाद उसका सारा शरीर एकबारगी हिला और हिचकी की सी आवाज हुई। उसने माना इस आवाज को छिपाते हुए जल्दी से कहा—"देखा बुरा न मानना, मगर कविता के रूप म बहुत कमजोर हैं ये पक्तिया। इन्हे माजने की जरूरत है, इनमे कला की कमी है।"

मयूरका ने उदासी से कागज को अपने घुटनो पर रख दिया। वह चुपचाप खेमे की छत ताकने लगी। फिर उसने कधे झटके।

"मैं भी तो यही कहती हू कि इसमे भावनायें हैं। जब मैं अपनी भावनायें व्यक्त करती हू तो मेरे अन्दर की हर चीज सिसकने लगती है। रही यह बात कि इन्हे माजा नही गया तो सभी जगह यही सुनने को मिलता है, बिल्कुल इसी तरह जैसे तुमने कहा है— 'आपकी कविताओ मे मजाव नही, छापा नही जा सकता।' मगर इन्हे माजा कैसे जाये? क्या गुर है इसका? आप पढे लिखे आदमी ह, शायद आपको यह गुर मालूम होगा?"

मयूरका भावावेश म लेफ्टीनन्ट को 'आप' तक कह गई।

लेफ्टीनेन्ट कुछ देर चुप रहा और फिर बोला—

"मुश्किल है इस सवाल का जवाब देना। कविता रचना तो, देखो न, एक कला है। हर कला के लिये अध्ययन जरूरी है। हर कला के अपने नियम, अपने कानून होते हैं। मिसाल के तौर पर अगर इजीनियर को पुल बनाने के सभी नियम मालूम न हो तो वह या तो पुल बना ही नही पायेगा या फिर ऐसा निकम्मा पुल बनायेगा जो किसी काम-काज का नही होगा।"

"यह तो पुल की बात हुई। इसके लिये तो हिसाब और समझ-बूझ की दूसरी बहुत-सी बातो की जानकारी जरूरी है। मगर कविता तो मेरे मन म बसी है, जन्मजात है। हो सकता है कि यह प्रतिभा ही हो?"

"प्रतिभा हो, तो भी क्या है? अध्ययन स प्रतिभा का भी विकास होता है। इजीनियर इसीलिये डाक्टर नही, बल्कि इजीनियर है कि उसमे

जन्म से ही इजीनियरिंग की ओर रुझान था। लेकिन अगर वह पढ़ने लिखने में दिलचस्पी न लेता तो उसका कुछ न बनता-बनाता।"

'अच्छा? हा ऐसा ही लगता है, मछली का हैजा! लडाई खत्म होते ही ऐसे स्कूल मे भर्ती हो जाऊगी जहा कविता लिखना सिखाते है। ऐसे स्कूल भी तो होते होगे न?"

'शायद होते ही होगे," लेफ्टीनेन्ट ने सोचते हुए कहा।

'जरूर जाऊगी ऐसे स्कूल मे पढ़ने। कविता तो मेरा जीवन बनकर रह गई है। मेरी आत्मा तडपती है अपनी कविताओं को किताब के रूप में छपा हुए देखने को और बेचैन रहती है हर कविता के नीचे 'मरीया बासोवा' यह नाम देख पाने को।"

अगीठी बुझ चुकी थी। अधेरे मे खेमे से टकराती हुई हवा की सरसराहट सुनाई दे रही थी।

'सुनो ना,' मयूत्का ने अचानक कहा। "रस्सी से ता तुम्हारे हाथों मे दर्द होता होगा न?"

'नही, बहुत तो नही। बस, जरा सुन्न हो गये है।

"अच्छा देखो, तुम कसम खाओ कि भागोगे नही। मै तुम्हारे हाथ खोल दूगी।'

'मै भागकर जा ही कहा सकता हू? रेगिस्तान मे, ताकि गीदड मुझे नोच खाये। मै ऐसा बेवकूफ नही हू।"

खैर फिर भी कसम खाओ। दोहराओ मेरे पीछे पीछे ये शब्द—अपने अधिकारो के लिये लडनेवाले सर्वहारा की कसम खाकर लाल फौजी मरीया बासोवा को वचन देता हू कि मै भागना नही चाहता हू।''

लेफ्टीनेन्ट ने कसम दोहराई।

मयूत्का ने रस्सी की गाठ ढीली कर दी फूली हुई कलाइयो को निजात मिली। लेफ्टीनेन्ट ने आराम से अपनी उगलिया हिलाई-डुलाई।

'अच्छा, अब सो जाओ," मयूत्का ने जम्हाई ली। अब भी अगर भागोगे तो दुनिया मे सबसे कमीने आदमी होगे। यह लो, नमदा, ओढ लो।'

धन्यवाद, मै अपना कोट ओढ लूगा। शुभ रात्रि, मरीया '

'मरीया फिलातोव्ना,' मयूत्का ने बडे गर्व से लेफ्टीनेन्ट को अपना पूरा नाम बताया और नमदे के नीचे दुबक गई।

येव्स्युकोव को हेड-क्वाटर तक अपनी खबर पहुचाने की जल्दी पडी थी।

मगर बस्ती म कुछ दिना तक आराम करना, ठिठुरन से छुट्टी पाना और पट भर कर खाना जरूरी था। एक सप्ताह बाद उसने तट के साथ साथ चलते हुए अरालस्क की बस्ती तक पहुचने और फिर वहा से कजालीस्क जाने का निणय किया।

दूसर सप्ताह मे कमिसार को इधर से गुजरनेवाले किर्गीजो की जवानी यह मालूम हुआ कि पतझर के तूफान न किसी मछुए की नाव को चार किलोमीटर दूरी पर एक खाडी मे ला पटका है। किर्गीजो न बताया कि नाव बिल्कुल सही-सलामत है। वह बिना किसी दावेदार के ऐसे ही पडी है और मछुए सम्भवत डूब गये हैं।

कमिसार नाव को देखन गया।

नाव लगभग नई थी, शाहबलूत की मजबूत पीली लकडी की बनी हुई। तूफान स उसको कोई हानि नही पहुची थी। केवल पाल फट गया था और पतवार टूट गई थी।

येव्स्युकाव न लाल फौज के सिपाहिया से सलाह मशविरा किया। उसने समुद्र के रास्ते सिर दरिया के दहाने तक तत्काल एक टोली भेजन का फैसला किया। नाव मे आसानी से चार आदमी बैठ सकत थ और थोडी रसद भी भेजी जा सकती थी।

'ऐसा करना बेहतर होगा," कमिसार न कहा। "इस तरह कदी को जल्दी से वहा पहुचाया जा सकेगा। कौन जाने पदल सफर म क्या हो जाये! हेड-क्वाटर तक पहुचाना जरूरी है। दूसरे, हेड-क्वाटर को हमारी खबर मिल जायेगी। वहा से घुडसवारा के जरिये हमे कपडे और कुछ दूसरी चीजें मिल जायेंगी। अनुकूल हवा हाने पर तो नाव द्वारा तीन चार दिना मे अराल को पार करके पाचवे दिन कजालीस्क पहुचा जा सकता है।"

येव्स्युकोव ने रिपोट लिखकर तैयार की। लेफ्टीनन्ट से हासिल हुई दस्तावेज के साथ उसने उसे कनवास के एक थैले मे सी दिया। यह दस्तावेज वह हर समय अपनी जाकेट की अन्दरवाली जेब म सम्भालकर रखता था।

किर्गीज नारिया न पाल की मरम्मत की और स्वय कमिसार ने टूटे हुए तख्तो से पतवार बनाई।

फरवरी की एक ठण्डी सुबह थी। विस्तृत और समतल नीली सतह पर नीचा सूरज पालिश किये हुए पीतल के थाल की तरह लटक रहा था। कई ऊट नाव को घसीटकर बर्फ की सीमा तक लाये।

उन्होंने नाव को खुले समुद्र म डाला और मुसाफिर इस पर सवार हुए।

येव्स्युकाव न मयूत्का स कहा—

'तुम इस दल की नेता होगी। तुम पर सारी जिम्मेदारी होगी। इस अफसर का ध्यान रखना। अगर यह निकल भागा तो तुम्हारे जीने पर लानत। इसे जिदा या मुर्दा हेड-क्वाटर तक पहुचाना ही है। अगर कहा सफेद गार्डों क हत्थे चढ जाओ तो इसे जिदा मत रहन देना। अच्छा जाओ!"

पाचवा अध्याय

यह सारा अध्याय डायाल डेफो के उपन्यास 'राबिनसन क्रूसो' से चुराया गया है। हा, इतना अन्तर अवश्य है कि इसमे राबिनसन को फ्रायडे के लिये बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पडती है

अराल दिलकश सागर नही है।

तट एकदम सपाट ह, जिन पर झाडिया उगी हुई ह, रेत और रेत की चलती फिरती पहाडिया ह।

अराल के द्वीप कडाही मे रखे समोसो की तरह नजर आते ह। वे ऐसे सपाट हैं मानो उन पर पालिश कर दी गई हो। वे एकदम निर्जीव प्रतीत होते हैं।

यहा न हरियाली है, न परिंदे और न कोई दूसरे जीव-जन्तु। इसान यहा सिफ गमियो मे नजर आते हैं।

अराल का सबसे बडा द्वीप है बारसा-केलमेस।

इसका क्या मतलब है, कोई नही जानता। मगर किर्गीज इसका अथ 'इसान की मौत बतात ह।

गमियो मे अरालस्क की बस्ती से मछुए इस द्वीप पर आते ह। बारसा केलमेस मे खूब मछलिया हाथ आती हैं समुद्र मछलिया से अटा पडा रहता है।

मगर पतझर मे जैसे ही समुद्र की सतह पर सफेद झाग की टोपिया नजर आने लगती है, मछुए अरालस्क बस्ती की शान्त खाडी मे लौट जात ह और फिर वसन्त तक वहा नजर नही आते।

अगर तूफान शुरू होने के पहले ही मछुए सारी मछलिया तट तक ले जाने मे सफल नही हो जात तो वे नमक लगी मछलिया को जाडे भर के लिये लकडी के वाडा मे द्वीप पर ही छोड देते ह।

सख्त जाडे मे जब समुद्र चेर्नीशोव खलीज से वारसा द्वीप तक जम जाता है, ता गीदडा की तो खूब बन आती है। व दौडत हुए द्वीप पर पहुचते है और नमकीन मछलिया इतनी अधिक मात्रा मे खाते ह कि उनके लिये हिलना डुलना भी मश्किल हो जाता है और वही मर जाते है।

वसन्त आता है तो सिर-दरिया की पीली वाढ वफ की चादर का तोडती है। तब मछुए द्वीप पर लौटते है। मगर पतझर मे वहा छाडी हुई मछलिया गायब पाते है।

नवम्बर से फरवरी तक इस समुद्र म वडी हलचल रहती है, सभी ओर जोरा के तूफान आते हैं। वाकी समय म थाडी हवा चलती है और गमियो मे अराल सागर दपण की तरह शान्त और समतल हो जाता है।

अराल ऊव पैदा करनवाला समुद्र है।

अराल मे केवल एक ही आकपक चीज है—उसकी नीलिमा, असाधारण नीलिमा।

गहरी नीलिमा, मखमली मुलायम नीलिमा, अथाह नीलिमा।

भूगोल की सभी पुस्तका मे इसी तरह से वणन किया गया है इस सागर का।

मयूत्का और लेफ्टीनेन्ट को रवाना करत हुए कमिसार को यह आशा थी कि आगामी सप्ताह मे मौसम शान्त रहेगा। बस्ती के किर्गीज बुजुर्गों ने भी यही कहा था कि शान्त मौसम के चिह्न हैं।

इस तरह मयूत्का, लेफ्टीनेन्ट और दो सिपाहिया—सेम्यान्नी और व्याखिर—को समुद्री रास्ते से कजालीन्स्क की ओर ले जानेवाली नाव अपने सफर पर रवाना हो गई। सेम्यान्नी और व्याखिर का चुनाव इसलिये किया गया था कि उन्हे नौ-चालन के सम्बन्ध मे कुछ जानकारी थी।

अनुकूल हवा से पाल फूल रहा था, पानी मे प्यारी-प्यारी लहरिया पैदा हो रही थी। पतवार की छपछप लोरिया दे रही थी। नाव के दोनो ओर गाढा-गाढा फेन पैदा हो रहा था।

मयूत्का न नपटीनट व हाथ बिल्कुल ढीले किए। नाव न भला वह कहा भागकर जायगा? लेफ्टीनेन्ट अब नाव चलाने म गम्यास्ना ग्रौर व्यागिर का हाथ बटाने लगा।

वह खुद अपने को कस्पान की तरफ ले जा रहा था।

जब उसकी बारी न होती तो वह नमरा मोड़कर नाव के तल म जा लेटता। किन्ही गुप्त गहरे रहस्यो का ध्यान करके, जिन्ह उसके सिवा कोई दूसरा नही जानता था वह मुस्कराता रहता।

मयूत्का उसके इस अन्दाज स परेशान हो उठती।

क्या यह हर समय दात निकालता रहता है? जैसे कि अपने घर को जा रहा हो। उसका अन्त तो बिल्कुल स्पष्ट है—हेड-क्वाटर म पहुचेगा, वहा उससे पूछ-ताछ होगी ग्रौर उसके बाद खेल खत्म। जरूर इसके पेच कुछ ढीले है।'

मगर लेफ्टीनेन्ट मयूत्का के विचारो स बिल्कुल अनजान, पहले की तरह ही मुस्कराता रहा।

मयूत्का जब सब्र न कर पाई तो उसने पूछ ही लिया—

तुमने नाव चलाना कहा सीखा?

गोवोरुखा-ग्रोत्रोक ने सोचकर जवाब दिया—

'पीटसबग म मेरा अपना याट था बडा सा। म उसम समुद्र म जाता था।

यॉट?"

ऐसा पालवाला बजरा।'

'ग्रोह! ऐसे बजरे से तो म अच्छी तरह परिचित हू। अस्त्राखान के क्लब मे बुजुआ लोगो के ऐसे बहुत से बजरे मने देखे है। ढेरो थे उनके पास! सभी हसो की तरह सफेद ग्रौर खासे बडे-बडे। मगर मेरा सवाल दूसरा था। क्या नाम था उसका?"

"नेल्ली।"

'यह क्या नाम हुआ?"

"मेरी बहन का नाम था यह। उसी के नाम पर मने यॉट का नाम रखा था।"

'ईसाइयो के तो ऐसे नाम नही होते।"

'उसका नाम तो था येलेना मगर अंग्रेजी ढग स—नेल्ली।'

मयूत्का चुप हो गई। वह सफेद सूरज को देखने लगी, जिसकी ठण्डी ग्रौर सफेद मिठास हर चीज का मधुमय बना रही थी। वह पानी की नीलिमा को ग्रपनी वाहो मे कसने को नीचे उतर रहा था।

मयूत्का न फिर वात चलाई—

"यह पानी कितना नीला है! कैस्पियन का पानी हरा है। ग्रौर यहा दखो तो कैसा नीला है!"

लेफ्टीनेन्ट ने कुछ ऐसे जवाव दिया मानो ग्रपने से बात कर रहा हो, खुद को जवाब दे रहा हो—

"फारेल के ग्रनुसार इसका लगभग तीसरा नम्बर है।'

"क्या?" मर्यूत्का चौक्कर उसकी ग्रार घूमी।

"यह तो मैं ग्रपने से ही कुछ कह रहा था। पानी के बारे मे। मैंन हाइड्रोग्राफी की एक किताब मे पढा था कि इस समुद्र का पानी बहुत चमकता हुग्रा नीला है। फोरेल नामक एक वज्ञानिक न विभिन्न समुद्रा के पानी की एक तालिका बनाई है। सबसे ग्रधिक नीला पानी शान्त महासागर का है। इस तालिका के ग्रनुसार इस समुद्र का स्थान तीसरा है।"

मर्यूत्का ने ग्रपनी ग्राखें कुछ मूद ली मानो पानी की नीलिमा व्यक्त करनेवाली तालिका को ग्रपनी कल्पना म देख रही हो।

"बहुत ही नीला है यह पानी। किसी दूसरी चीज स इसकी तुलना करना सम्भव नही। यह ऐसा नीला है जैसे कि ' ग्रचानक उसकी बिल्ली जैसी पीली ग्राखे लेफ्टीनेन्ट की नीली ग्राखो पर जमकर रह गई। वह ग्रागे को झुकी, उसका पूरा शरीर इस तरह सिहरा माना उसन ग्रसाधारण बात खोज ली हो। उसके होठ ग्राश्चय से खुले रह गये। वह फुसफुसाई—"ऊई मा! तुम्हारी ग्राखें भी तो बिल्कुल ऐसी ही नीली ह, इस पानी जैसी! यही तो मैं सोच रही थी कि इनम कोई जानी पहचानी चीज है। मछली का हैजा!"

लेफ्टीनन्ट खामोश रहा।

क्षितिज नारगी रग मे डूब गया। दूरी पर पानी मे काले धब्बे नजर ग्रा रहे थे। बर्फीली हवा सागर की सतह मे हलचल पैदा करन लगी थी।

पूर्वी हवा है," सेम्याग्नी ने ग्रपनी फटी वर्दी को लपेटते हुए कहा।

शायद तूफान ग्रायेगा," व्याखिर बोला।

"ग्राता है तो ग्राये। दो घण्टे ग्रौर नाव चलायेंगे ता बारसा नजर ग्रान लगेगा। तेज हवा चलेगी तो रात या वही ठहर जायेंगे।"

चुप्पी छा गइ। उठती हुई काली-काली लहरो पर नाव हिचकोले खान लगी।

ग्राकाश मे बडे-बडे काले बादल दिखाई देने लगे।

"बेशक ऐसा ही है। तूफान ग्रा रहा है।'

"बारसा द्वीप जल्द ही नजर ग्रायेगा। बाई ग्रोर को होगा वह। ग्रजीब ऊल जलूल जगह है वह बारसा भी। उस पर चाहे जहा भी चले जाग्रो सभी जगह रेत ही रेत है। बस हवा फर्राटे भरती रहती है ग्रर पाल को ढीला करो, जल्दी करो! यह तुम्हारे जनरल का पतलून नही है!"

लेफ्टीनेंट समय पर पाल ढीला न कर पाया। नाव न एक पहलू से पानी म धचका खाया ग्रौर फेन ने मुसाफिरो के चेहरा पर ग्रपना हाथ जमाया।

मुझ पर क्या बरस रह हो? मरीया फिलातोव्ना से भूल हो गयी थी।"

"मुझ से भूल हुई? क्या कह रहे हो, मछली का हैजा! पाच साल की उम्र से पतवार पर मेरा हाथ रहा है!'

ऊची ऊची काली लहरे नाव का पीछा कर रही थी। व मुह फाडे हुए ग्रजगरा जसी दिखाई दे रही थी। वे नाव के पहलुग्रो पर टूटी पर रही थी।

हाय मा! कब ग्रायेगा यह कम्बख्त बारसा! ग्रधेरा कसा है, हाथ का हाथ नही सूझता।'

व्याखिर न बाइ ग्रोर नजर दौडाई। वह खुशी से चिल्ला उठा—

वह रहा वह रहा कम्बख्त कही का!'

झाग ग्रौर धुध के बीच एक सफेद तट रखा साफ चमक रही थी।

'जार लगाकर बढाग्रो तट की ग्रोर' सेम्यानो चिल्लाया। भगवान न चाहा ता वहा पहुच जायेंगे!'

नाव क पिछले हिस्से चरचराय, बल्लिया भी कराही। एक लहर ता उछलकर नाव क पहलू स भीतर ग्रा घुसी ग्रौर मुसाफिर टखना घुटना तक पानी म डूब गये।

'पानी निकालो!" मर्यूत्का उछलकर खडी हो गइ ग्रौर चिल्लाई।

"पानी निकाला? मगर किमस, ग्रपन सिर से?'

"टापियो से।"

सेम्यान्नी और व्याखिर न झटपट टोपिया उतारी और तेजी से पानी निकालन लगे।

लेफ्टीनेन्ट घडी भर को हिचका, फिर उसन भी अपनी फर की टापी उतारी और पानी निकालने म उनका साथ देने लगा।

वह नीची और सफेद तट-रेखा तेजी से नाव के निकट आ रही थी, बफ से ढके हुए तट का रूप लेती जा रही थी। उबलते हुए फेन के कारण वह और भी अधिक सफेद दिखाई द रही थी।

हवा गरजती और फुकारती हुई आती और लहरो का और ऊचा उठा देती।

एक तूफानी थाका पाल पर झपटा, जो ताद की तरह बाहर को निकल पडा।

कनवास का पुराना पाल तोप के गाले की तरह फटा।

सेम्यान्नी और व्याखिर मस्तूल की तरफ भागे।

"रस्स को थामो," पतवार पर पूरी तरह झुकते हुए मयूत्का चिल्लाई।

हहराती और गरजती हुई एक बडी लहर पीछे की ओर मे आई। नाव एक ओर को झुक गई और ठण्डी ठण्डी तथा चमकती हुई मोटी सी धार इसके ऊपर से गुजर गई।

नाव जब सीधी हुई तो ऊपर तक पानी से भरी हुई थी और सेम्यान्नी और व्याखिर का कही अता पता नही था। पानी से सराबोर और फटे हुए पाल के टुकडे हवा म लहरा रहे थे।

लेफ्टीनेन्ट कमर तक पानी मे बैठा हुआ अपन ऊपर जल्दी-जल्दी सलीब बना रहा था।

"शतान! लानत तुझ पर! पानी निकाल!" मयूत्का ने अपने जीवन मे पहली बार बहुत सी मोटी मोटी और भद्दी गालिया दी।

लेफ्टीनेन्ट भीगे पिल्ले की तरह उछलकर खडा हो गया और पानी बाहर निकालन लगा।

मयूत्का रात के अधकार, शोर और हवा म पुकार रही थी—

"से म्या आ न्नी ई! व्या आ खि इर!"

फेन का थपेडा मुह पर लगा। कोई जवाब नही मिला।

डूब गये, शतान!"

हवा न तूफान की लपेट म आई हुई नाव को तट की ओर धकेल दिया। इद गिद का पानी तो जैसे उबल रहा था। पीछे से एक और लहर आई और नाव की तह जमीन से जा टकराई।

"चलो बाहर!' नाव से बाहर छलाग लगाते हुए मयूत्का चिल्लाई। लेफ्टीनेंट उसके पीछे-पीछे कूदकर बाहर आ गया।

"नाव को घसीट लो।

पानी के जोरदार छीटो से आखे मुदी जा रही थी। ऐसे म उन्होंने नाव को रस्से से तट पर खीचा। वह रेत मे मजबूती से जम गई। मयूत्का न बदूक सम्भाली।

'रसद के बोरे निकाल लाओ!'

लेफ्टीनेंट न चुपचाप मयूत्का का हुक्म बजाया। खुश्क जगह देखकर मयूत्का न बदूकें रेत पर डाल दी। लेफ्टीनेंट ने बोरे रख दिये।

मयूत्का न एक बार फिर अधकार म पुकारा—

'सम्या आ जो! व्याखिइर!"

कोई जवाब नही मिला।

मयूत्का बोरो पर बैठकर औरतो की तरह रो पडी।

लेफ्टीनेंट उसके पीछे खडा था। उसके दात बज रहे थे।

उसने अपने कधे झटके और मानो हवा से कहा—

"गैड गाड! यह तो बिल्कुल परी-कहानी ही है! राबिनसन क्रूसो और फ्राइडे की।

छठा अध्याय

जिसमे दूसरी बातचीत होती है और यह स्पष्ट किया
जाता है कि शून्य से तीन दर्जे ऊपर तेटीग्रेड वाले
समुद्री पानी म नहाने से क्या हानि होती है

लेफ्टीनेंट ने मयूत्का का कधा छुआ।

उसने कुछ कहने की कोशिश की, मगर दांतो के बजते हुए उसके जबड़े ने उसे कुछ कहने न दिया। उसने मुट्ठी रखकर जबड़े को जोर से दबाया और अपनी बात कही—

"रोने से कुछ हासिल नही होगा। चलना चाहिये। यही तो बैठे नही रहना है। जम जायेंगे।"

मर्यूत्का ने सिर ऊपर उठाया। हताश होते हुए उसने कहा—

"जायेंगे भी तो कहा। हम द्वीप पर है। हमारे चारो ओर पानी है।"

"फिर भी चलना चाहिये। मै जानता हू कि यहा लकडी के बाडे हैं।"

"तुम्हे कहा से मालूम है? तुम क्या कभी आये हो यहा?"

"नही, आया तो कभी नही। जिन दिना हाई स्कूल मे पढता था उन्ही दिनो मैंने पढा था कि मछुए मछलिया रखने के लिये यहा बाडे बनाते है। हम कोई बाडा खोजना चाहिये।"

"अच्छा मान लो कि बाडा मिल जाता है। इसके बाद?"

"यह सुबह देखा जायेगा। उठो, फ्रायडे।'

मयूत्का ने सहमकर लेफ्टीनेन्ट की ओर देखा।

"तुम्हारा दिमाग तो नही चल निकला? हे भगवान! क्या करूगी मै तुम्हारा? आज फ्रायडे नही, बुद्ध है।'

"खैर सब ठीक है! तुम मेरी बाता की ओर ध्यान न दो। हम इसकी बाद मे चर्चा करेंगे। अब उठो!"

मयूत्का उसकी बात मानते हुए चुपचाप खडी हो गई। लेफ्टीनेन्ट बन्दूकें उठाने के लिये झुका मगर मयूत्का ने उसका हाथ पकड लिया।

"रुको! गडबड नही करो! तुमने वचन दिया है कि भागोगे नही।"

लेफ्टीनेन्ट न हाथ पीछे हटा लिया, जोर से चीखा और ठहाके लगाने लगा—

"लगता है कि मेरा नही, तुम्हारा दिमाग चल निकला है। जरा सोचो तो क्या मै इस समय भागने की बात सोच सकता हू? बन्दूकें इसलिये उठाना चाहता था कि तुम्ह इन्हे उठाने मे तकलीफ होगी।"

मयूत्का शात हो गई, मगर मधुर और गम्भीर ढग से उसन कहा—

"सहायता के लिये धन्यवाद! मगर मुझे हुक्म दिया गया है कि तुम्ह हेड-क्वाटर तक पहुचा दू इसलिये जाहिर है कि तुम्हे बन्दूकें नही दे सकती, मुझ पर तुम्हारी जिम्मेदारी है।"

लेफ्टीनेन्ट ने कधे झटके और बोरे उठा लिये। वह आगे आगे चल दिया।

बर्फ मिली रेत उनके पैरो के नीचे चरमरा रही थी। नीचे, सुनसान और समतल तट का कोई ओर छोर नही था।

दूरी पर कोई भूरी चीज बर्फ से ढकी हुई नजर आई।

मर्यूत्का तीन बन्दूको के बोझ से दबी जा रही थी।

"कोई बात नही मरीया फिलातोव्ना, थोडी और हिम्मत रखो! जरूर यह बाडा ही है!"

"काश कि बाडा ही हो! मेरा तो दम निकला जा रहा है। ठण्ड से बिल्कुल अकड गई हू।"

वे झुककर बाडे मे दाखिल हुए। भीतर घुप अन्धेरा था। सभी ओर नमक लगी मछली और जग लगे नमक की सडायध फैली हुई थी।

लेफ्टीनेन्ट ने मछलियो के ढेर को हाथ से छुआ।

'ओह! मछली है! कम से कम भूखो मरने की नौबत नही आयेगी।"

"काश रोशनी होती! फिर भी सभी ओर खोज करनी चाहिए! शायद हवा से बचने के लिये कोई कोना मिल जाय!" मयूत्का ने आह भर कर कहा।

"बिजली की आशा तो यहा नही की जा सकती।"

'मछली जलाई जाये देखो तो इनमे कितनी चर्बी है।'

लेफ्टीनेन्ट ने फिर ठहाका लगाया।

"मछली जलाई जाये? तुम तो सचमुच पागल हो गई हो!

"वह क्यो?" मर्यूत्का ने खीझकर कहा। "वोल्गा तट पर हमारे यहा तो बहुत जलाई जाती है। लकडियो से बेहतर जलती है!"

"पहली बार सुन रहा हू मगर जलायेंगे कैसे? मेरे पास चकमाक तो है किन्तु चैलिया कहा से "

'वाह रे सूरमा! समझ गयी कि मा के घाघरे की छाया म ही उम्र गुजारी है। लो ये कार्तूस फाडो और मै दीवार से कुछ चलिया छुडाती हू।"

बुरी तरह ठिठुरी हुई उगलियो से लेफ्टीनन्ट ने बहुत कठिनाई स तीन कार्तूस फाडे। चैलिया लाते हुए मयूत्का अन्धेरे मे लफ्टीनेन्ट पर गिरते गिरते बची।

"बारूद यहा छिडको! एक ही जगह पर चकमाक निकालो!"

चकमाक से नारगी शोला निकला। मयूत्का ने उसे बारूद के ढेर मे घुसेड दिया। एक फुफकार-सी हुई, फिर धीरे-से पीली चिंगारिया की फुलझडी-सी छूटी और सूखी चैलियो मे आग लगनी शुरू हुई।

"जल गई आग," मर्यूत्का खुशी से चिल्लाई। "मछलिया लाओ सबसे अधिक चर्बीवाली।"

जलती हुई चैलिया पर उन्होने ढग से मछलिया जमाई। शुरू मे उनसे सू-सू की आवाज हुई और फिर चमकदार और गम गम चिंगारिया निकलने लगी।

"अब इस आग मे सिफ इधन ही डालते जाना होगा। छ महीने तक मछलिया काफी रहेगी।"

मयूत्का ने सभी ओर नजर दौडाई। मछलियो के बडे-बडे ढेरो पर चिंगारियो की नाचती हुई परछाइया पड रही थी। बाडे की लकडी की दीवारो मे अनगिनत दरारे और सूराख थे।

मर्यूत्का ने बाडे का निरीक्षण किया। वह एक कोने से चिल्लाई—

"यहा एक सही-सलामत कोना है। आग म मछली और डाल दा कि बुझ न जाये। मै यहा चारा ओर ओट कर दूगी। तब यह बिल्कुल कमरे जैसा बन जायेगा।"

लफ्टीनेन्ट आग के पास बैठा था। उसके कधे झुके हुए थे, उसके शरीर मे गर्मी दौड रही थी। मर्यूत्का कोने से मछलिया उठा उठाकर फेंक रही थी। आखिर उसने पुकारकर कहा—

"सब तैयार हो गया! रोशनी लाओ!"

लेफ्टीनेन्ट ने जलती हुई मछली दुम से पकडकर उठाई। वह कोने म पहुचा। मयूत्का ने तीन ओर से मछलियो की दीवार बना दी थी और बीच मे थाडी-सी खाली जगह रह गई थी।

"यहा बैठकर आग जला लो। मने बीच म मछलिया का ढेर लगा दिया है। मैं तब तक रसद लाती हू।"

लेफ्टीनेन्ट ने एक जलती हुई मछली मछलिया के ढेर के बीच टिका दी। आग बहुत धीरे धीरे और मानो मन मारकर जली। मर्यूत्का वापस आई। उसने बन्दूकें कोने म खडी कर दी और बोरे जमीन पर रख दिये।

"ओह, मछली का हैजा! साथियो के लिये अफसोस होता है। बेकार ही डूब गये।"

"हम कपड़े सुखा लेने चाहियें। वरना ठण्ड लग जायेगी।"

तो सुखाते क्यों नहीं? मछलियों की आग खूब तेज है। उतारो कपड़े, सुखाओ।"

लेफ्टीनेन्ट झिपका।

'पहले तुम सुखा लो मरीया फिलातोव्ना। मैं तब तक वहां इन्तजार करता हूं। फिर मैं अपने कपड़े सुखा लूंगा।"

लेफ्टीनेन्ट का कांपता हुआ चेहरा देखकर मयूत्का को उस पर तरस आया।

"देख रही हूं कि तुम बिल्कुल बुद्धू हो। असली रईसजादे हो। तुम्हें डर किस बात का लगता है? क्या कभी कोई नंगी औरत नहीं देखी?"

"नहीं, यह बात नहीं है मैंने सोचा कि शायद तुम्हें अच्छा न लगे।'

'बकवास है! हम सभी एक जैसे हाड़ मांस के बने हुए हैं। फर्क ही क्या है! कपड़े उतारो बुद्धू!" वह चीख उठी। "तुम्हारे दांत तो मशीनगन की तरह किटकिटा रहे हैं। तुम तो मेरे लिये बिल्कुल मुसीबत हो!'

बन्दूकों पर लटके हुए कपड़ों से भाप उठ रही थी।

लेफ्टीनेन्ट और मयूत्का आग के सामने, एक दूसरे के सम्मुख बैठे थे और अपने को गर्मा रहे थे।

मयूत्का, लेफ्टीनेन्ट की गोरी-गोरी, कोमल और पतली-सी पीठ को बहुत ध्यान से और टकटकी बांधकर देख रही थी। वह हुमकी।

"तुम ऐसे गोरे क्यों हो, मछली का हैजा! लगता है कि तुम्हें मलाई मल मलकर नहलाया जाता रहा है।"

लेफ्टीनेन्ट का चेहरा लज्जारुण हो उठा। उसने मयूत्का की ओर देखा, कुछ कहना चाहा, मगर मयूत्का की गोल-गोल छाती पर आग की पीली परछाइयां नाचती देखकर उसने अपनी नीली-नीली आंखें झुका लीं।

कपड़े सूख गये। मयूत्का ने अपने कंधे पर चमड़े की जाकेट डाल ली।

अब सोना चाहिये। हो सकता है कि कल तक तूफान खत्म हो जाये। यही खुशकिस्मती है कि नाव नहीं डूबी। शायद कभी न कभी सिर-

दरिया तक पहुच ही जायेंगे। वहा मछुए मिल जायेंगे। तुम सो जाम्रो, मैं भ्राग की देखभाल करूगी। जब नीद से मेरी भ्राखें घुटने लगेंगी तो तुम्हें जगा दूगी। इसी तरह हम बारी-बारी से भ्राग की रखवाली करेंगे।"

लेफ्टीनेन्ट ने भ्रपने कपडे नीचे बिछाये भ्रौर ऊपर से कोट भ्रोढ लिया। वह गहरी नीद सो गया भ्रौर नीद मे बडबडाता रहा। मर्यूत्का उसे टकटकी बाधकर देखती रही।

फिर उसने कधे झटके।

"यह तो मेरे सिर भ्रा पडा है। बडा ही नाजुक है! कही ठण्ड न लग गई हो इसे! घर पर तो शायद मखमल मे ही लिपटा रहता होगा। भ्रोह क्या चीज है यह जिन्दगी, मछली का हैजा!"

सुबह को जब छत की दरारो से रोशनी झाकने लगी तो मयूत्का ने लेफ्टीनेन्ट को जगाया।

'देखो, तुम भ्राग का ध्यान करो भ्रौर मैं तट की भ्रोर जाती हू। देखकर भ्राती हू कि कही हमारे साथी तैरकर निकल ही न भ्राये हो भ्रौर तट पर बैठे हो।

लेफ्टीनेन्ट बडी मुश्किल से उठा। सिर हाथो मे थामकर उसने डूबती-सी भ्रावाज मे कहा—

सिर म दद है।"

कोई बात नही यह तो धुए भ्रौर थकान का नतीजा है। ठीक हो जायेगा। बोरे मे रोटी निकाल लो, मछली भून लो भ्रौर खा लो।"

मयूत्का न बन्दूक उठाई, जाकेट से साफ की भ्रौर चल दी।

लेफ्टीनन्ट घुटनो के बल रेंगकर भ्राग के पास पहुचा। उसने बोरे से समुद्र के पानी मे भीगी हुई रोटी निकाली। उसने रोटी का टुकडा काटा, थोडा सा चबाया भ्रौर बाकी उसके हाथ से नीचे गिर गया। लेफ्टीनन्ट भ्राग के करीब फश पर ही ढह पडा।

मयूत्का ने लेफ्टीनेन्ट का कधा झकझोरा भ्रौर चीखकर कहा—

"उठो! बेडा गक। मुसीबत!"

लेफ्टीनेन्ट की भ्राखें फैल गईं होठ खुले रह गये।

'उठो कह रही हू! मुसीबत भ्रा गई! लहरे नाव बहा ले गइ। हम तो भ्रब कही के न रहे।"

लेफ्टीनेन्ट उसका मुह ताकता हुभ्रा खामोश रहा।

मयूत्का ने उसे बहुत ध्यान से देखा और ग्राह भरी।

लेफ्टीनेंट की नीली ग्राखें धुधली धुधली ग्रौर खाली-खाली-सी नजर ग्रा रही थी। बदहवासी मे उसका गाल मयूत्का के हाथ पर ग्रा रहा। लेफ्टीनेंट का गाल ग्रगारे की तरह जल रहा था।

'ग्ररे हिम्मत हारनेवाले, तो तुमे ठण्ड लग ही गई! ग्रब म करगी तो क्या?

लेफ्टीनेंट के होठ फुसफुसाये।

मयूत्का झुककर सुनने लगी—

'मिखाईल इवानोविच मुझे बुरे ग्रक नही दीजियेगा मै पाठ याद नही कर पाया कल तैयार कर लूगा '

यह तुम क्या बक रहे हो?" मयूत्का ने तनिक झिझकते हुए पूछा।

'ग्ररे लेना इसे जगली मृग " लेफ्टीनेंट ग्रचानक चिल्लाया ग्रौर एकबारगी उछल पडा।

मयूत्का पीछे हट गई ग्रौर उसने हाथो से मुह ढक लिया।

लेफ्टीनेंट फिर गिर गया ग्रौर उगलियो से रेत खुरचने लगा।

वह जल्दी जल्दी कुछ ग्रट शट बके जा रहा था।

मयूत्का ने निराशा से चारो ग्रोर नजर दौडाई।

उसने जाकेट उतारकर जमीन पर फेंक दी ग्रौर लेफ्टीनेंट के चेतनाहीन शरीर को बडी कठिनाई से घसीटकर जाकेट पर लाई। मयूत्का ने लेफ्टीनेंट को उसका कोट ग्रोढा दिया।

वह ग्रपने को सवथा ग्रसहाय ग्रनुभव करती हुई झुककर उसके निकट बैठ गई। उसके दुबले पतले गालो पर धीरे धीरे ग्रासू लुढकने लगे।

लेफ्टीनेंट करवटे लेता हुग्रा कोट को बार बार उतारकर फेंक देता था। मगर मयूत्का हर बार उसे ठोडी तक ढक देती थी।

मयूत्का ने देखा कि लेफ्टीनेंट का सिर एक तरफ को ढुलक गया है। उसने उसके सिर के नीचे बोरे रख दिये। उसने ऊपर की ग्रोर देखा मानो ग्राकाश को सम्बोधित कर रही हो ग्रौर दर्दभरी ग्रावाज म कहा—

"ग्रगर यह मर गया तो मै येस्युकोव को क्या जवाब दूगी? हाय क्या मुसीबत है!

वह बुखार से जलते हुए लेफ्टीनेंट के शरीर पर झुक ग्रई ग्रौर उसन उसकी धुधलाई हुई नीली ग्राखो मे झाका।

मर्यूत्का के दिल को ठेस लगी। उसने हाथ बढाकर लेफ्टीनेन्ट के उलझे हुए घुघराले बालो को धीरे से सहलाया। उसका सिर अपने हाथो मे लेकर वह कोमल स्वर मे फुसफुसाई—

"अरे नीली आखो वाले मेरे बुद्धू!"

सातवा अध्याय

शुरू मे पहेली, अन्त मे बिलकुल साफ

चादी की नफीरिया, नफीरियो पर लगी हुई घटिया।

नफीरिया बजती है, घटिया टनटनाती है, बफ जसी कोमल टनटनाहट पैदा करती हुई—

टन टनाटन, टन

टन, टनाटन, टन

नफीरिया गूजती ह—

तू-तू-तू-तड्, तू-तू-तू-तड्।

यह साफ तौर पर फौजी माच है। बेशक माच है, वही जो हमेशा परेड के समय होती है।

मैदान भी वही है, जिसमे मेपल के वक्षो की हरी हरी रेशमी पत्तिया मे से छनकर आनेवाली धूप फैली हुई है।

बैंडमास्टर बड का निर्देशन कर रहा है।

बडमास्टर बैंड की तरफ पीठ करके खडा है और उसके लम्बे कोट की काट से दुम बाहर निकली हुई है, लोमडी की सी वडी लाल दुम। दुम के सिरे पर सुनहरा गेंद है और गेंद मे कामेरटोन लगा है।

दुम इधर उधर हिल डल रही है, कामेरटोन बाजा को सकेत देता है और यह भी बताता है कि ताशे और बिगुल कब वजें। जब कोई वादक किसी सोच मे डूब जाता है तो उसके माथे पर तड से कामेरटोन लगता है।

बडवाले अपनी पूरी कोशिश से बैंड बजा रहे हैं। बैंडवाले बहुत अजीब से हैं।

बैंड बजानेवाले मामूली और विभिन्न रेजिमेन्टो के सिपाही ह। यह पूरी फौज का बड है।

मगर बैंड बजानेवालो के मुह नही हैं उनकी नाको के नीचे बिल्कुल सपाट जगह है। नफीरिया उनके बायें नथनो मे घसी हुई ह।

वे दायें नथनो से सास लेते हैं, बायें नथनो से नफीरिया बजाते ह। नफीरियो से विशेष प्रकार की आवाज निकलती है, झनझनाती हुई और मन को बहलाती हुई।

अटेंशन!"

"बदूक—काधे पर!"

"रेजिमेंट!"

"बटालियन!"

"कम्पनी!'

'बटालियन नम्बर एक—फारवड माच!'

नफीरिया—तू-तू तू-तड्। घटिया—टन टन टन।

काले चमकदार जूते पहने हुए कप्तान श्वेरसोव बडी शान से नाचता है। कप्तान के कसे हुए और चिकने कूल्हे सूअर के लोथडे के समान ह। उसके पाव ताल दे रहे ह—धप, धप।

"बहुत खूब जवानो!'

'ढम ढमाढम!"

लेफ्टीनेंट!"

"लेफ्टीनेंट! जनरल साहब आपको याद कर रहे ह।'

'किस लफ्टीनेंट को?"

"तीसरी कम्पनी के! लेफ्टीनन्ट गावोरुखा ओलोव को जनरल साहब याद कर रहे ह।"

जनरल घोडे पर सवार है, घोडा चौक के बीचोबीच खडा है। जनरल का चेहरा लाल और मूछें पकी हुई ह।

'लेफ्टीनेंट, यह क्या हिमाकत है?"

ही-ही-ही! हा हा हा!

क्या दिमाग चल निकला है? हसने की जुरत? म तुम्हारा दिमाग ठिकाना कर तुम किसस बात कर रहे हो?'

"हो-हो-हो! अरे हा आप जनरल नही, बिल्ला हैं हुजूर!

जनरल घोडे पर सवार है। जनरल कमर तक तो जनरल है और उसके नीचे का धड बिल्ले का है। किसी अच्छी नसल के बिल्ले का भी

नही, हर घर के पिछवाडे मे नजर आनेवाले साधारण नसल के मटमैले और धारीदार बिल्ले का।

वह अपने पजा से रकाबा को दबाये है।

"मै तुम्हारा कोट माशल करूगा लेफ्टीनेट! कैसी अनसुनी बात है। गाड का अफसर और उसकी आते बाहर निकली हुई हो!"

लेफ्टीनन्ट ने नजर झुकाकर देखा और उसका मानो दम निकल गया। उसके कमरबद के नीचे से आत बाहर निकली हुई थी, पतली-पतली और हरी हरी। ये आते आश्चयचकित करनेवाली तेजी से घूम रही थी उसन अपनी आत पकडी, मगर वे फिसल गइ।

"गिरफ्तार कर लो इसे! इसन शपथ की अवहेलना की है!'

जनरल ने रकाब से पजा निकाला, नाखून खोले और लेफ्टीनेट की तरफ बढाये। पजे मे रुपहली एड लगी हुई थी और उसकी एक कडी की जगह एक आख जडी हुई थी।

साधारण आख। गोल, पीली पुतली और ऐसी पैनी कि लेफ्टीनन्ट के दिल मे उतरती चली गई।

इस आख ने प्यार से आख मारी और लगी कुछ कहने। आख कसे बोलने लगी यह कोई नही जानता, मगर वह बोल रही थी—

'नही डरो! नही डरो! आखिर होश मे आ गया!

एक हाथ ने लेफ्टीनन्ट का सिर ऊपर उठाया। लेफ्टीनन्ट न आखे खोल दी। उसने एक दुबला पतला-सा चेहरा देखा, जिस पर लाल लटें लटकी हुई थी। और आख, प्यार भरी और पीली थी, बिल्कुल वैसी ही जैसी कि उसने एड मे जडी हुई देखी थी।

"अरे जालिम, तुमने तो मुझे बिल्कुल ही डरा दिया था। पूरे हफ्ते-भर से तुम्हारे सिरहाने बैठी परेशान हो रही हू। मुझे तो लग रहा था कि तुम चल बसोगे। इस द्वीप पर हम एकदम एकाकी है। न कोई दया-दारू है, न किसी तरह की कोई मदद। सिफ उबलते पानी का सहारा था। शुरू म तो तुम वह भी उगल देत थे। खराब, नमकीन पानी को अन्तडिया स्वीकार नही करती थी।'

लेफ्टीनन्ट बहुत ही कठिनाई म प्यार और चिन्ता के य शब्द समझ पाया।

उसने सिर उठाया और इस तरह इधर-उधर देखा मानो कुछ भी समझ न पा रहा हो।

सभी ओर मछलियो के ढेर थे। आग जल रही थी, गज पर केतली लटक रही थी, पानी उबल रहा था।

'यह सब क्या है? कहा हू मैं?"

"अरे, भूल गये? नही पहचानते? मैं मयूत्का हू!'

लेफ्टीनेन्ट ने अपने नाजुक और पीले हाथ से माथे को रगडा।

उसे सब कुछ याद हो आया, वह धीरे से मुस्कराया और फुसफुसाया –

'हा याद आया। राबिसन और फ्रायडे!'

लो फिर बहक चले? यह फ्रायडे तो तुम्हारे दिमाग मे जमकर बैठ गया है। मालूम नही कि आज कौनसा दिन है। मैं तो इनका हिसाब ही भूल गई हू।"

लेफ्टीनेन्ट फिर मुस्कराया।

"दिन नही! यह तो नाम है ऐसी एक कहानी है कि जहाज टूट जाने के बाद एक आदमी एक वीरान द्वीप पर जा पहुचा। वहा उसका एक दोस्त बना। उसका नाम था फ्रायडे। कभी नही पढी यह कहानी तुमने?' वह जाकेट पर ढह पडा और खासने लगा।

नही कहानिया तो बहुत पढी है, मगर यह नहा। तुम आराम से लेटे रहो हिलो डुलो नही। वरना फिर से बीमार हो जाओगे। म कुछ मछलिया उबालती हू। खाने से बदन मे जान आ जायेगी। पूरे हफ्ते भर, पानी के सिवा तुम्हारे मुह मे एक दाना भी तो नही गया। देखो तो तुम्हारे बदन मे जरा भी खून नही रह गया, बिल्कुल सफेद हो गये हो मोम की तरह। लेट जाओ!"

लेफ्टीनेन्ट ने कमजोरी अनुभव करते हुए आखें बन्द कर ली। उसके सिर मे धीरे धीरे बिल्लौरी घटिया बज रही थी। उसे बिल्लौरी घटियोवाली नर्फोरिया की याद हो आई। वह धीरे से हस दिया।

"क्या बात है?' मयत्का न पूछा।

"ऐसे ही कुछ याद आ गया सरसाम की हालत म एक अजीब सा सपना देखा था।'

तुम सपने मे कुछ चिल्लाते रहे थे। तुम लगातार आडर देते थे,

डाटते डपटते थे   क्या कुछ नही हुआ। हवा सीटिया बजाती थी, सभी ओर वीराना था और मैं द्वीप पर तुम्हारे साथ अकेली थी और तुम होश मे नही थे। डर के मारे मेरा दम निकला जा रहा था।" वह सिहर उठी। "समझ मे नही आ रहा था कि क्या करू।"

"तो कैसे तुमने काम चलाया?'

'बस जसे-तैसे चला ही लिया काम। सबसे ज्यादा डर तो मुझे इस बात का था कि तुम भूख से मर जाओगे। पानी के सिवा कुछ भी तो नही था। बची-बचायी रोटी को ही पानी मे उबालकर तुम्हे पिलाती रही। अब तो सिफ मछली ही बच रही है। नमकीन मछली बीमार के लिये क्या मानी रखती है? मगर जैसे ही यह देखा कि तुम होश मे आ रहे हो और आखें खोल रहे हो तो मेरे मन का बोझ हल्का हो गया।"

लेफ्टीनेन्ट ने अपना हाथ बढाया। धूल मिट्टी स लथपथ होने के बावजूद सुन्दर और पतली पतली उगलिया उसने मयूत्का की बाह पर रख दी। धीरे से उसकी बाह थपथपाते हुए लेफ्टीनेन्ट ने कहा—

"धन्यवाद, प्यारी!"

मयूत्का के चेहरे पर लाली दौड गयी और उसने लेफ्टीनेन्ट का हाथ हटा दिया।

"आभार प्रकट नही करो। धन्यवाद की कोई आवश्यकता नही। तुम क्या सोचते हो कि अपनी आखो के सामने आदमी को मरने दिया जा सकता है? म जानवर हू या इन्सान?"

"मगर मैं तो कैडेट पार्टी का सदस्य हू   तुम्हारा दुश्मन हू। मुझे बचाने की तुम्हें क्या पडी थी? खुद तुममे जान नही रह गई।"

मयूत्का घडी भर को चुप रही, उलझन मे उलझी हुई सी। फिर उसने हाथ हिलाया और हस दी।

"तुम दुश्मन? हाथ तक तो उठा नही सकते। बडे आये दुश्मन! मेरी किस्मत मे यही लिखा था। गोली तुम पर सीधी नही बैठी। निशाना चूक गया, सो भी जिन्दगी म पहली बार। अब जिन्दगी भर तुम्हारे लिये परेशान होना पडेगा। लो, खाओ!"

मयूत्का न लेफ्टीनन्ट की ओर पतीली बढाई। उसमे चर्बीवाली सुनहरी मछली तैर रही थी। मास की हल्की हल्की और प्यारी प्यारी गन्ध आ रही थी।

लेफ्टीनेन्ट ने पतीली से मछली का टुकड़ा निकाला। मज़े लेते हुए वह उसे खाने लगा।

"बेहद नमकीन है। गला जला जा रहा है।

कुछ भी तो इलाज नहीं इसका। अगर मीठा पानी होता तो मछली को उसमें डालकर नमक निकाल लिया जाता। मगर बदकिस्मती कि वह भी नहीं है। मछली नमकीन–पानी भी नमकीन! कमी मुसीबत है, मछली का हैज़ा!"

लेफ्टीनेन्ट ने पतीली एक तरफ हटा दी।

क्या हुआ? और नहीं खाओगे क्या?

नहीं। मैं खा चुका। तुम खाओ!"

"गोली मारो इसे, हफ्ते भर यही तो खाती रही हूं। गले में अटककर रह जायेगी यह मेरे।

लेफ्टीनेन्ट कोहनी के बल लेट गया।

काश कि सिगरेट होती!" उसने आह भरकर कहा।

"सिगरेट? तो कहा क्या नहीं मुझसे। सेम्यानी के थले से मुझे कुछ तम्बाकू मिला है। थोड़ा भीग गया था मैंने उसे सुखा लिया है। जानती थी कि तुम तम्बाकूनोशी करना चाहोगे। बीमारी के बाद सिगरेट पीने की चाह और भी बढ़ जाती है। यह लो।'

लेफ्टीनेन्ट के मन पर बहुत प्रभाव पड़ा। उसने कांपती उंगलियों से तम्बाकू की थली ले ली।

'तुम तो हीरा हो माशा! धाय से बढ़कर हो!

शायद धाय के बिना जी ही नहीं सकते," उसने रुखाई से जवाब दिया और उसके गाल लाल हो गये।

"अब सिगरेट लपेटने के लिये कागज नहीं। तेरे उस गुलाबीमुंहे ने मेरे सभी कागज छीन लिये थे और पाइप मैं खो बैठा हूं।'

'कागज" मयूत्का सोचने लगी।

फिर निर्णायक झटके के साथ उस जाकेट की ओर मुड़ी, जो लेफ्टीनेन्ट ओढ़े था। उसने जाकेट की जेब में हाथ डालकर एक छोटा सा बंडल निकाला।

उसने बंडल खोलकर उसमें से कुछ कागज निकाले और लेफ्टीनेन्ट की ओर बढ़ाये।

"यह लो।"

लेफ्टीनेन्ट न कागज लिये और उन्हे ध्यान स देखा। फिर मर्यूत्का की ओर नजर उठाई। उसकी आखो की नीलिमा मे हैरानी परेशानी चमक रही थी।

"ये तो तुम्हारी कवितायें हैं! तुम्हारा दिमाग चल निकला है क्या? म नही लूगा!"

"ले लो, तुम पर शैतान की मार! मेरा दिल नही दुखाओ, मछली का हैजा!" मर्यूत्का चिल्लाई।

लेफ्टीनेन्ट ने गौर से उसकी तरफ देखा।

"धन्यवाद! मैं यह कभी नही भूलूगा!"

उसन कागज के सिरे से एक छोटा-सा टुकडा फाडा, तम्बाकू लपेटकर सिगरेट बनाई और धुआ उडाने लगा। फिर वह लेटकर सिगरेट के नीले धुए के घेरे के बीच से कही दूर देखने लगा।

मयूत्का उसे टकटकी बाधकर देखती रही। फिर अप्रत्याशित ही उसने कहा—

"मै तुम्हे देखती हू और एक बात किसी तरह भी समझ नही पाती। तुम्हारी आखें ऐसी नीली क्यो हैं? जिन्दगी मे कभी ऐसी आखें नही देखी। ऐसी नीली हैं तुम्हारी आखें कि आदमी इनमे डूब सकता है।"

"मालूम नही," लेफ्टीनेन्ट ने जवाब दिया। "जन्म से ही ऐसी हैं। बहुत-से लोगो ने मुझसे कहा है कि इनका रग असाधारण है।"

"हा, यह सच है! तुम्हारे कैदी बनाये जाने के कुछ ही देर बाद मैंने सोचा कि इसकी आखे ऐसी क्यो ह। ये खतरनाक ह!"

"किस के लिये?"

"औरता के लिये। अनजाने ही मन मे उतर जाती है। उसे मोह लेती है।"

"तुम्ह भी मोह लिया क्या?"

मयूत्का भडक उठी।

"देखो तो शैतान को! राज जानना चाहता है। लेट जाओ, मैं पानी लाने जा रही हू।"

मयूत्का उठी, उसने लापरवाही से केतली उठाई, मगर मछलियो के ढेर से आगे जाकर चचलता से हसते हुए मुडी और पहले की भाति बोली—

"अरे, नीली आखोवाले बुद्धू!"

आठवा अध्याय

जिसके लिए किसी व्याख्या की आवश्यकता नही

मार्च की धूप है—वातावरण म वसन्त का रग।

मार्च की धूप अराल सागर पर फैली हुई है—नज़र की हद तक नीली मखमल पर। चिलचिलाती धूप अपने तेज़ दातो स काटती-सी लगती है, आदमी का खून मानो उबल उबल पडता है।

अब तीन दिनो से लेफ्टीनेन्ट बाहर निकलता है।

वह बाडे के बाहर बैठकर धूप सेकता है, अपने चारो ओर देखता है। उसकी आखो मे अब खुशी झलकती है, उनम चमक आ गई है और वे नीले सागर की तरह नीली नज़र आती है। इसी बीच मयूत्का ने सारा द्वीप छान डाला है।

अपने इसी छान-बीन के काम के आखिरी दिन वह सूर्यास्त के समय खुश खुश लौटी।

सुनते हो! कल हम यहा से जा रहे है।'

"कहा?"

'वहा, कुछ दूरी पर! यहा से कोई आठ किलामीटर के फासले पर।'

"वहा क्या है?'

'मछुओ की झोपडी मिल गई है। यू समझो कि बस महल है! बिल्कुल खुश्क और ठीक-ठाक है। खिडकियो का मजबूत शीशा तक सही सलामत है। उसमे तन्दूर और मिट्टी के कुछ टूटे फूटे बतन भी हैं। वे सब काम आ जायेंगे। सबसे बडी बात तो यह है कि सोन के लिये तख्ते लगे हुए ह। अब ज़मीन पर लोटने-पोटने की ज़रूरत नही रहेगी। हमे तो शुरू म ही वहा जाना चाहिये था

"मगर यह मालूम ही किसे था?

"यही तो बात है! इतना ही नही, एक और खोज कर डाली है मैंने। बढिया खोज!"

"वह क्या है?"

"तन्दूर के पीछे खाने-पीने का कुछ सामान भी है। रसद छिपी हुई है। बहुत नही है। चावल है और कोई आठ-दस सेर आटा। आटा कुछ

खराब हो गया है, मगर खैर खाया जा सकता है। लगता है कि पतझर म जैसे ही तूफान आता देखा होगा, मछुआ न वहा से भागने की जल्दी की होगी और हडबडी मे रसद समेटना भूल गये होगे। अब खूब मजे रहेगे हमारे!"

अगली सुबह वे नई जगह के लिये चल दिये। ऊट की तरह लदी लदायी मर्यूत्का आगे आगे चल रही थी। उसने सभी कुछ अपने ऊपर लाद लिया था, लेफ्टीनेंट को कुछ भी नही उठाने दिया था।

"नही, नही, तुम नही उठाओगे! फिर बीमार पड जाओगे। लेने के देने पड जायेंगे। तुम कोई फिक्र नही करो! देखने मे बेशक दुबली-पतली, मगर मजबूत हू!"

दोपहर तक वे दोनो अपनी मजिल पर पहुच गये। उन्होने बर्फ हटाई और दरवाजे को कब्जो मे लगाकर खडा किया। उन्होंने तन्दूर को मछलियो से भरकर जलाया और आग तापने लगे। उनके चेहरा पर सुखद मुस्कान खेल रही थी।

"वाह क्या शाही ठाठ है!"

"बहुत खूब हो तुम माशा! उम्र भर तुम्हारा एहसान मानूगा! तुम न होती तो दम निकल गया होता।"

"सो तो जाहिर है, मेरे नाजुक बदन!"

वह चुप होकर आग पर हाथ तापने लगी।

'गम है, खूब गम है हा तो अब हम आगे क्या करेगे?"

"क्या करेगे? इन्तजार!"

"किस चीज का?"

"वसत का। थोडा ही समय रह गया है–आधा माच गुजर चुका है। वस यही कोई दो हफ्तो की और देर है सम्भवत तब मछुए यहा अपनी मछलियो के लिये आयेंगे और हम उस पार पहुचायेंगे।"

"काश, ऐसा ही हो। मछलिया और सडे हुए आटे के सहारे हम बहुत दिनो तक जिन्दा नही रह सकेगे। दो हफ्ते और जी लेगे, और तब यह सब कुछ हमारे लिये मछली का हैजा हो जायेगा! यह तुम क्या मुहावरा बोला करती हो हर वक्त–'मछली का हैजा'? कहा सीखा तुमने इसे?"

"अपने अस्त्राखान म। मछुए इसी तरह बातचीन करत हैं। गाली गलौज की जगह म इसी स काम चलाती हू। गाली वाली दा मुझे पसद नही। जब कभी गुस्सा आता है तो यही कहकर दिल की भडास निकाल लेती हू।"

उसन बदूक के गज से तदूर म मछलिया हिलाइ और पूछा—

"अरे हा, तुमने कभी मुझसे एक कहानी की चर्चा की थी, किसी द्वीप के बारे म फायडे के सम्बध म। याही ठाली बठे रहन से यही अच्छा है कि वह कहानी सुनाओ। दीवानी हू म तो कहानियो की! ऐसा होता था कि गाव की औरते मेरी मौसी के घर जमा हाती था और गुगनीखा नाम की एक बुढिया को भी अपन साथ लाती थी। सौ बरस या शायद इससे भी ज्यादा उम्र थी उसकी। नपालियन के रूस आने तक की याद थी उस। जैसे ही वह कहानी कहना शुरू करती, म इसी तरह कोने म गुडी मुडी होकर बैठ जाती। सास तक न लेती कि कही कोई शब्द न छूट जाये।"

तुम राबिसन क्रूसो की कहानी सुनान को कह रही हो न? आधी कहानी तो मै भूल चुका हू। एक जमाने पहले पढी थी।

तुम याद करने की कोशिश करो। जितनी याद आ जाये, उतनी ही सुना दो।

'अच्छा, कोशिश करता हू।

लेफ्टीनेन्ट ने जरा आखें मूद ली और कहानी याद करने लगा।

मर्यूत्का ने सोनेवाले तख्ते पर अपनी चमडे की जाकेट बिछा ली और तदूर के निकटवाले कोने मे बैठ गई।

"यहा आ जाओ, यह कोना ज्यादा गम है।'

लेफ्टीनेन्ट कोने मे जा बठा। तदूर खूब गम हो चुका था उससे सुखद गर्मी आ रही थी।

"अरे, तुम शुरू करो न। जान देती हू म इन कहानियो पर!"

लेफ्टीनेन्ट ने ठुड्डी पर हाथ रखा और कहानी कहनी शुरू की—

"लिवरपूल नगर मे एक अमीर आदमी रहता था। उसका नाम था राबिसन क्रूसो '

"यह नगर कहा है?'

'इगलड मे हा, वहा एक धनी रहता था राबिसन क्रूसो "

"ज़रा रुको! अमीर आदमी कहा न तुमने? ये सारी कहानिया अमीरो और बादशाहो के बार मे ही क्या हाती है? ग़रीबो के बारे मे कहानिया क्यो नही होती?"

"मालूम नही," लेफ्टीनन्ट ने हतप्रभ हाते हुए जवाब दिया। "मने कभी इसके बारे मे सोचा नही।"

"ज़रूर इसीलिये ऐसा है कि अमीरा ने ही ये कहानिया लिखी है। मुझ ही को ले लो। कविता रचना चाहती हू, मगर इसके लिये मेरे पास ज्ञान की कमी है। खूब बढिया ढग से लिखती म ग़रीबा के बार मे! खैर कोई बात नही। पढ लिख जाऊगी, तब लिखूगी।"

'हा तो   इस राबिन्सन क्रूसो के दिमाग मे दुनिया के गिर्द चक्कर लगाने की बात आई। वह देखना चाहता था कि और लोग कैसे रहते-सहते है। वह पालोवाले एक बडे जहाज़ मे अपने नगर से चला "

तन्दूर म आग चटक रही थी, लेफ्टीनन्ट रवानी से कहानी कह रहा था।

धीरे धीरे उसे सारी कहानी, छोटी छाटी तफ़सीले भी याद आती जा रही थी।

मर्यूत्का दम साधे बैठी थी। कहानी के सबसे प्रभावपूर्ण अशो पर वह गहरी सास लेती।

लेफ्टीनन्ट ने जब राबिन्सन क्रूसो के जहाज़ की दुर्घटना की चर्चा की तो मर्यूत्का ने घृणा से कधे झटके और पूछा—

"इसका मतलब यह है कि राबिन्सन क्रूसो के सभी साथी मर गये?"

"हा, सभी।'

'तब तो ज़रूर जहाज़ के कप्तान के भजे मे भूसा भरा था या फिर दुर्घटना के पहले वह बहुत पी गया था। मै तो हरगिज़ यह मानने को तयार नही कि कोई अच्छा कप्तान अपने जहाज़ियो को इस तरह मरने देगा। कैस्पियन सागर म कई बार हमारे जहाज़ इसी तरह दुर्घटना के शिकार हुए ह और दो-तीन से ज्यादा आदमी कभी नही डूबे, बाकी सभी को बचा लिया गया।"

'यह तुम कैसे कह सकती हो? हमारे सेम्यानी और ग्याखिर भी तो डूब गये ह न! इसका मतलब यह है कि तुम बहुत घटिया कप्तान हो या फिर दुर्घटना के पहले तुमने बहुत चढा ली थी?"

मर्यूत्का ने गहरी सास ली।

"चारा शाने चित कर दिया तुमने, मछली का हैजा! अच्छा, आगे सुनाओ कहानी!"

फायडे से भेंट होने का जब जिक्र आया तो मयूत्का न फिर टोका—

"हा तो अब समझी कि क्यो तुमने मुझे फ्रायडे कहा था। तुम खुद तो मानो राबिंसन ही हो न? तुमने कहा न कि फायडे काला था? हब्शी? मने हब्शी दखा था। हा, अस्त्राखान के सरकस मे आया था।"

जब समुद्री डाकुओ के हमले का जिक्र आया तो मयूत्का की आखें चमक उठी और उसने लेफ्टीनेन्ट से कहा—

'एक पर दस टूट पडे? बहुत बुरी बात थी न यह तो, मछली का हैजा!"

लेफ्टीनन्ट ने आखिर कहानी खत्म की।

मयूत्का लेफ्टीनेन्ट के कधे से टेक लगाये हुए मानो जादू मे बधी-सी बैठी रही। उसने जैसे कि स्वप्न देखते हुए कहा—

'खूब कहानी है यह। सम्भवत तुम बहुत कहानिया जानते हो? हर दिन एक कहानी कहा करो।'

क्या सचमुच तुम्हे अच्छी लगी?'

बहुत ही अच्छी। इस तरह हर शाम जल्दी जल्दी बीत जायेगी। समय का पता भी नही लगेगा।'

लेफ्टीनेन्ट ने जम्हाई ली।

'नीद आ रही है क्या?'

"नही बीमारी के बाद कमजार हो गया हू।'

"हाय, बेचारा!"

मयूत्का ने फिर प्यार स उसके बाल थपथपाये। लेफ्टीनन्ट न हैरान होकर अपनी नीली आखें उसकी ओर उठाइ।

उन आखा म कुछ ऐसी गर्मी थी, जो मयूत्का के हृदय की गहराइया तक का छू गई। वह अपनी सुध-बुध भूल गई। वह झुकी और उसने अपने खुश्क तथा फटे हुए हाठ लफ्टीनन्ट क कमजार और खूटिया से भरे हुए गाल पर रख दिय।

नौवा अध्याय

जो यह प्रमाणित करता है कि हृदय यद्यपि किसी नियम कानून को नहीं मानता तथापि मनुष्य की चेतना यथार्थ से मुह नहीं मोड सकती

मयूत्का के अचूक निशाने के शिकार होनेवालो की सूची मे सफेद गार्ड के लेफ्टीनेन्ट गोवोरूखा ओत्रोक का नम्बर इकतालीसवा होना चाहिये था।

मगर हुआ यह कि मयूत्का की खुशियो की सूची म उसका स्थान पहला हो गया।

मयूत्का जी जान से लेफ्टीनेन्ट पर मर मिटी, उसके पतले-पतले हाथो पर, उसकी प्यारी मधुर आवाज पर और सबसे ज्यादा तो उसकी नीली आखो पर।

उन आखो से, उनकी नीलिमा से मयूत्का की जिदगी जगमगा उठी।

वह अराल सागर की ऊब भूल गई, बेहद नमकीन मछली और सडे हुए आटे के उबकाई लानेवाले जायके का भी उसे ध्यान नही रहा। काले विस्तार के पार जाकर जीवन की रेल-पेल मे हिस्सा लेने की अदम्य और तीव्र चाह भी अब मिट गई। दिन के समय वह साधारण काम काज करती – रोटियां पकाती और उबकाई पैदा करनेवाली मछली उबालती, जिसकी वजह से उनके मसूडे सूज गये थे। कभी-कभी वह तट पर जाकर यह भी देख लेती कि लहरो पर कही वह पाल तो उनकी ओर नही आ रहा, जिसका इन्तजार था।

शाम को जब वसन्त के आकाश से कजूस सूरज अपना किरणजाल समेटने लगता तो वह अपने कोनेवाले तख्ते पर जा बैठती। वह लेफ्टीनेन्ट के कधे पर अपना सिर टिका देती और कहानी सुनती।

बहुत-सी कहानियां सुनाइ लेफ्टीनेन्ट ने। अच्छा कमाल हासिल था उसे कहानियां कहने मे।

दिन बीतते गये, लहरो की तरह धीरे धीरे, बोझिल बोझिल-से।

एक दिन लेफ्टीनेन्ट झोपडी की देहली पर बठा, धूप सेकता हुआ मयूत्का की उगलियो की ओर देख रहा था, जो अभ्यस्त होने के कारण

बडी फुर्ती मे एक मोटी मछली को साफ कर रही थी। लेफ्टीनेंट ने आँखें झपकायी और कधे झटककर कहा—

"हुम बिल्कुल बकवास है! जहन्नुम मे जाये!"

"क्या हुआ प्यारे?"

"मै कहता हू सब बकवास है सारी जिन्दगी ही फुजूल है। शुरू शुरू के सस्कार, लादे गये विचार! बिल्कुल बकवास! तरह-तरह के रस्मी नाम, उपाधिया! गाड का लेफ्टीनेंट? भाड मे जाये गाड का लेफ्टीनेंट! मैं जीना चाहता हू। सत्ताईस बरस तक जी चुका, लेकिन सच यह है कि जीकर तो बिल्कुल देखा ही नही। बेतहाशा दौलत लुटाई, किसी आदर्श की खोज मे देश विदेश भटका, मगर मेरे हृदय मे किसी कमी, किसी असन्तोष की जानलेवा आग धधकती रही। अब सोचता हू कि अगर तब कोई मुझे यह कहता कि अपने जीवन के सबसे भरपूर दिन मैं इस बेहूदा सागर के बीच, इस समोसे की शक्लवाले द्वीप पर गुजारूगा तो म कभी विश्वास न करता।"

"क्या कहा तुमने, कैसे दिन?"

'सबसे ज्यादा भरपूर। नही समझी? कैसे कहू, कि तुम आसानी से समझ जाओ? ऐसे दिन, जब सारी दुनिया के विरुद्ध म अकेला ही अपने का मोर्चा लेता हुआ अनुभव नही कर रहा हू, जब मुझे अकेले ही समय नही करना पड रहा है। म इस समूचे वातावरण मे खोकर रह गया हू।' उसने अपनी बाहे फैलाकर मानो समूचे वातावरण को उसमे समेट लिया। "ऐसे लगता है मानो मैं इस सारे वातावरण का अभिन्न अग बन गया हू। इसकी सास, मेरी सासे हैं। ये देखो ये मौजें सास ले रही हैं साथ साथ साथ ये मौजें नहीं, मेरी सासे हैं, मेरी आत्मा की सास है, यह मैं हू।'

मर्यूत्का ने चाकू रख दिया।

"देखो तुम तो विद्वानो की भाषा मे बाते करते हो। तुम्हारी सभी बाते मेरी समझ मे नही आती। मैं तो सीधे-सादे ढग से यह कहता हू—मैं अब अपने को सौभाग्यशालिनी अनुभव करती हू।'

"शब्द अलग अलग ह, मगर भाव एक ही है। अब तो मुझे ऐसा लगता है कि अगर इस बेहूदा गम रेत को छोडकर कही न जाया जाये, हमेशा के लिये यही रहा जाये, इस फली हुई गम धूप की गर्मी में घुल

मिल जाया जाये, जानवर की तरह सन्तोष का जीवन बिताया जाये, तो कही अच्छा हो।"

मर्यूत्का टकटकी बाधे रेत को देखती रही मानो कोई जरूरी बात याद कर रही हो। फिर उसके होठो पर एक अपराधी की सी हल्की मुस्कान नजर आई।

"नही बिल्कुल नही! मै तो कभी यहा न रहती। आलसी बनकर रहना खटकने लगता है, एसे तो आदमी धीरे धीरे खत्म हो जाता है। ऐसा भी तो कोई नही, जिसके सामने अपनी खुशी जाहिर की जा सके। सभी ओर मुर्दा मछलिया हैं। अच्छा हो अगर मछुए जल्द ही मछलिया मारने के लिये आ जायें। अरे हा, अब तो मार्च खत्म होनेवाला है। मैं जिन्दा लोगो के बीच जीने के लिए तडप रही हू।"

"तो क्या हम जिन्दा लोग नही?"

"हा, हैं तो! मगर जैसे ही सडा-सडाया और बचा-खुचा आटा एक हफ्ते बाद खत्म हो जायेगा और जब कोई भयानक बीमारी सारे जिस्म पर धावा बोलेगी, तब देखूगी कि तुम कैसी तान अलापोगे? फिर प्यारे तुम्हे यह भी तो भूलना नही चाहिये कि आज तदूर से लगकर बैठने का जमाना नही है। देखो न, वहा हमारे साथी मोर्चा ले रहे है, अपना खून बहा रहे हैं। एक-एक आदमी मानी रखता है। ऐसे समय मे मैं आराम से बैठकर मजे नही उडा सकती। बेकार ही तो मैंने फौज मे भर्ती होते वक्त कसम नही खाई थी।"

लेफ्टीनेन्ट की आखो मे आश्चर्य की चमक झलक उठी।

"क्या मतलब है तुम्हारा? फिर से फौज मे लौटने का इरादा रखती हो?"

"तो और क्या?"

लेफ्टीनेन्ट दरवाजे की चौखट से तोडे हुए लकडी के एक टुकडे से चुपचाप खेलता रहा। फिर उसने तेज धारा की सी गहरी आवाज मे कहा—

"अजीब लडकी हो तुम! देखो, तुम्हे यह कहना चाहता था माशा! मै तग आ गया हू इस सारी बकवास से! कितने बरस हो गये खून बहते हुए, नफरत की आग जलते हुए। जन्म से ही मैं सिपाही नही था। कभी तो मेरी भी इन्सान की सी, अच्छी जिन्दगी थी। जर्मनी से युद्ध होने के पहले मैं विद्यार्थी था, भाषा और साहित्य पढता था, अपनी प्यारी और विश्वसनीय किताबो की दुनिया मे रहता था। ढेरो किताबें थी मेरे पास।

मेरे कमरे की तीन तरफ की दीवारें नीचे से ऊपर तक किताबों से अटी पडी थी। उन दिनों कभी-कभी ऐसा होता कि पीटसबर्ग में शाम का कुहासा सडक के राहगीरों को अपने पंजे में दबोच लेता, उन्हें मानो निगल जाता। तब मेरे कमरे में अंगीठी खूब गर्म होती, नीले शेडवाला लैम्प जलता होता। आराम कुर्सी में किताब लेकर बैठा हुआ मैं अपने को बिल्कुल ऐसे ही अनुभव करता जैसे कि इस समय—सभी तरह की चिन्ताओं से मुक्त। आत्मा खिल उठती, मन की कलियों के चटकने तक की आवाज भी सुनाई देती। वसन्त में बादाम के पेड की तरह उसमें फूल खिलते। समझती हो?"

'हूम ..." मयूत्का के कान खडे हो गये थे।

फिर किस्मत का लिखा वह दिन आया, जब यह सब कुछ खत्म हो गया ... टुकडे-टुकडे हो गया, तार-तार होकर हवा में उड गया ... वह दिन मुझे ऐसे याद है मानो कल की ही बात हो। मैं अपने देहाती बंगले के बरामदे में बैठा था और मुझे यह तक याद है कि कोई किताब पढ रहा था। सूर्यास्त हो रहा था, सभी ओर लाल रक्त फैला हुआ था। रेलगाडी द्वारा पिता शहर से आये। उनके हाथ में अखबार था, खुद परेशान थे। उन्होंने सिर्फ एक शब्द कहा, मगर वह एक शब्द ही पहाड की तरह भारी, मौत की तरह भयानक था ... जंग। यह था वह शब्द—सूर्यास्त की लाली की तरह खूनी। पिता ने और कहा—'वादीम, परदादा, दादा और पिता ने देश की पुकार के सम्मुख सदा सिर झुकाया। आशा करता हूं तुम भी?' पिता की आशा निराशा नहीं हुई। मैंने किताबों से विदा ली। तब मैंने सच्चे दिल से ही ऐसा निर्णय किया था ..."

'एकदम हिमाकत!" मयूत्का कंधे झटककर चिल्लाई। "यह तो बिल्कुल वही बात हुई कि अगर मेरा बाप नशे में धुत्त होकर दीवार से अपना सिर दे मारे तो मुझे भी जरूर ऐसा ही करना चाहिये? मेरी समझ में यह बात नहीं आती।'

लेफ्टीनेन्ट ने गहरी सांस ली।

"हां ... तुम यह नहीं समझ पाओगी। कभी तुम्हें अपनी छाती पर यह बोझ नहीं उठाना पडा। कुल का नाम, मान प्रतिष्ठा, कर्त्तव्य ... हमें बहुत एहसास था इसका।'

'तो क्या हुआ? मैं भी अपने दिवंगत पिता को बहुत प्यार करती

थी। पर यदि उसका दिमाग चल निकलता तो मेरे लिये उसके कदमो पर चलना ज़रूरी नही था। तुम्हे चाहिये था कि उन्ह अगूठा दिखा देते।"

लेफ्टीनेन्ट मुह बनाकर कटुता से मुस्कराया।

"नही दिखाया मने उन्ह अगूठा। लडाई ने ही मुझे अपन खूनी रास्ते पर घसीट लिया। अपने हाथो से मैंने अपना यह मानवताप्रिय हृदय बदबू के ढेर मे, विश्व मरघट म दफना दिया। फिर क्रान्ति हुई। मैंने उस पर प्रियतमा की भाति विश्वास किया मगर उसने मैं कितने ही बरसो तक जार की फौज मे अफसर रह चुका था, मगर कभी मने किसी सिपाही पर उगली तक नहीं उठाई थी। फिर भी मुझे गोमेल स्टेशन पर भगोडो ने पकड लिया, मेरे पद चिह्न फाड डाले, मेरे मुह पर थूका, चेहरे पर गन्दगी पोत दी। भला क्यो? मैं भागा और उराल जा पहुचा। मातभूमि पर मेरा विश्वास तब भी बाकी था। मैं फिर से लडने लगा—रौंदी गयी मातभूमि के लिय, उन पद-चिह्ना के लिये, जिनका इतना अपमान किया गया था। लडा और यह अनुभव किया कि मेरी कोई मातृभूमि नही रही, कि मातृभूमि भी क्रांति की भाति ढोल म पोल है। दोनो ही खून के प्यासे ह। पद चिह्नो के लिये लडने मे कोई तुक नही थी। मुझे याद आई सच्ची, एकमात्र मानवीयतापूर्ण मातभूमि की—विचारो की मातभूमि की। किताबो की याद हो आई मुझे। यही चाहता हू कि उनके पास लौट जाऊ, उनसे क्षमा मागू, उन्ही के साथ रहू और मानवजाति को उसकी मातृभूमि, क्रान्ति, उसके रक्तपात क कारण ठोकर मार दू।"

"समझी! मतलब यह है कि दुनिया टूटकर दो टुकडे हुई जा रही है, लोग सच की तलाश कर रह हैं, खून बहा रहे हैं और तुम नम-नम साफे पर किस्से कहानिया पढोगे?'

"मैं नही जानता और जानना भी नही चाहता," लेफ्टीनन्ट परेशान होकर चिल्लाया और उछलकर खडा हो गया। "सिर्फ इतना जानता हू कि प्रलय की घडी नजदीक है। तुमने ठीक ही कहा है कि पृथ्वी टूटकर दो टुकडे हुई जा रही है। टुकडे टुकडे हुई जा रही है दुनिया कही की! वह सड गल चुकी है, खण्ड-खण्ड हो रही है। वह एकदम खाली है, उसकी सारी दौलत लूट ली जा चुकी है। वह इसी खोखलेपन की वजह से खत्म हुई जा रही है। कभी वह जवान थी, लहकती-महकती थी, उसमे बहुत कुछ छिपा पडा था। उसमे नये-नये देशो की खोज, अनजाने धन

दौलत को ढूढ पाने का आकर्षण था। वह सब कुछ खत्म हो चुका, उसमें से कुछ नया खोजने को बाकी नही रहा। आज मानवजाति की सारी समझ बूझ इसी बात मे लगी हुई है कि जो कुछ उसके पास है उसे ही बचाकर रख सके, जैसे-तैसे एक शताब्दी, और एक वर्ष, और एक घडी बीत जाये। तकनीक। मुर्दा गणित। और विचार, जिन्हें गणित ने दीवालिया बना दिया है, ये सभी मानव के विनाश की समस्याओ के समाधान मे लगे हुए है। अधिक से अधिक लोगो का नाश जरूरी है ताकि बाकी लोग अपनी तोंदें और जेबें अधिक फुला सकें। भाड मे जाये यह सब! अपने सत्य के सिवा किसी दूसरे सत्य की मुझे जरूरत नही। तुम्हारे बोल्शेविकों ने ही भला कौनसा सत्य खोज निकाला है? इसान की जीती-जागती आत्मा को क्या आडर और राशन मे नही बदल डाला? बस, बहुत हो चुका! म इससे भर पाया! अब अपने हाथो पर खून के और धब्बे नही लगाना चाहता!"

"वाह रे, दूध के धोये? हाथ पर हाथ धरकर बैठनेवाले? तुम यही चाहते हो न कि तुम्हारी जगह दूसरे लोग रास्ते का कूडा-करकट साफ करे?"

"हा! बेशक करें! जहन्नुम मे जाये यह सब! जिन्हे यह पसन्द है वे इस पचडे मे पडें। सुनो माशा! जैसे ही यहा से छुटकारा पायेंगे, सीधे काकेशिया जायेंगे। सुखूमी के करीब मेरा एक छोटा-सा बगला है। वहा पहुचूगा और किताबें लेकर बैठ जाऊगा। और बस जहन्नुम मे जाये दुनिया! चुपचाप और शान्तिपूर्ण जीवन बिताऊगा। मुझे अब सच की और जरूरत नही—मैं अमन चाहता हू। और तुम पढोगी लिखोगी। तुम तो पढना चाहती हो न? तुम्ही तो शिकायत करती हो कि पढ नही पाई। अब पढना। म तुम्हारे लिये सब कुछ करूगा। तुमने मुझे मौत के मुह से निकाला है, मैं यह तो नही भूल सकता।"

मर्यूत्का उछलकर खडी हो गई। तीरो की तरह उसने शब्दों की झडी लगा दी—

"तो मैं तुम्हारे शब्दो का यही मतलब समझू कि म मिठाइया ढकोसती रहूगी, जबकि हर मिठाई पर किसी के खून के धब्बे होगे? हम रायेंवाले नर्म-नर्म बिस्तर पर ऊपर-नीचे होते रहेंगे जबकि दूसरे लोग सब के लिये अपना खून बहाते रहगे? यही कहना चाहते हो न तुम?"

"तुम ऐसी भद्दी बात क्यो कहती हो?" लेफ्टीनन्ट ने दुखी होते हुए कहा।

"भद्दी बात? तुम्हें तो हर चीज नम-नाजुक चाहिये न, मिसरी की तरह मीठी-मीठी! नही, यह नही हो सकता। जरा सुनो। तुम बोल्शेविकों के सत्य पर नाक भौं सिकोडते हो। कहते हो कि तुम उस सच को जानना नही चाहते। मगर उस सत्य को तुमने कभी जाना भी? जानते हो वह किस चीज स सराबोर है? किस तरह लोगो के पसीने और आसुओ से भीगा हुआ है?'

"नही जानता," लेफ्टीनेन्ट ने बुझी-सी आवाज मे उत्तर दिया। "मगर मुझे सिफ यह जरूर अजीब-सी बात लगती है कि तुम लडकी होकर ऐसी कठोर, ऐसी उजड्ड हो गई हो कि इन नशे मे धुत्त और गन्दे-मन्दे आवारागर्दों के साथ मार-काट मे हिस्सा लेना चाहती हो।"

मर्यूत्का ने कूल्हे पर हाथ रख लिये। वह फट पडी—

"उनके तन गन्दे हो सकते हैं, मगर तुम्हारी तो आत्मा गन्दी है। मुझे शर्म आती है कि ऐसे आदमी पर लुट गई। बहुत कमीने, बहुत बुजदिल हो तुम। प्यारी माशा, हम-तुम सुख चैन से टागें फैलाकर बिस्तर पर लेटेंगे," उसने चिढाते हुए कहा। "दूसरे खून-पसीना एक करके धरती की काया पलट रहे ह, और तुम? तुम कुत्ते के पिल्ले हो!"

लेफ्टीनेन्ट का चेहरा सुर्ख हो गया। उसके पतले होठ भिचकर एक रेखा जसे बन गये।

'जबान को लगाम दो! अपने को भूल रही हो तुम कमीनी औरत!"

मर्यूत्का एक कदम आगे बढी, उसने हाथ उठाया और लेफ्टीनेन्ट के खूटियो से भरे, कमजोर-से चेहरे पर कसकर तमाचा जड दिया।

लेफ्टीनेन्ट पीछे हटा, वह काप रहा था और उसकी मुट्ठिया कसी हुई थी। उसने फुफकारते हुए कहा—

"खुशकिस्मती समझो कि औरत हो! फूटी आखो तुम्हे नही देखना चाहता नीच कही की!"

वह झोपडी मे चला गया।

भौचक्की-सी मर्यूत्का अपनी दद करती हुई हथेली को देखती रही, फिर उसने हाथ झटका और मानो अपने आप से ही कहा—

"बडा आया नवाबजादा! मछली का हैजा!"

दसवां अध्याय

जिसमें लेफ्टीनेन्ट गोवोरुखा-ओत्रोक जमीन को हिला देनेवाला धमाका सुनता है और कहानीकार कहानी के अंत की जिम्मेदारी से किनारा कर लेता है

झगड़ा होने के तीन दिन बाद तक लेफ्टीनेन्ट और मर्यूत्का के बीच कोई बातचीत न हुई। मगर सुनसान द्वीप पर उनके लिये एक दूसरे से अलग रहना संभव नहीं था। फिर वसंत भी आ गया था, सो भी एकदम ही और खासी गर्मी लेकर।

द्वीप को ढकनेवाली बर्फ की पतली सी तह कई दिन पहले ही वसन्त के गहरे सुनहरे पैरों तले रौंदी जा चुकी थी। सागर के गहरे नील दर्पण की पृष्ठभूमि में अब तट ने पीला रंग धारण कर लिया था।

दोपहर के समय रेत जलने लगती। उसे छूने से हथेलियां जल उठतीं।

सूरज गहरे-नीले आकाश में सोने के थाल की तरह घूमता। वसन्ती हवाओं ने उस पर पालिश करके उसे जगमगा दिया था।

द्वीप पर ये दो व्यक्ति थे, धूप, हवाओं और बीमारी के सताये हुए। ये सब उन्हें बेहद परेशान कर रहे थे। ऐसे में लड़ाई झगड़ा करने में कोई तुक नहीं थी।

वे दोनों सुबह से शाम तक रेत पर लेटे रहते, टकटकी बांधकर उस गहरे नील दर्पण को देखते रहते, उनकी सूजी हुई आंखें किसी पाल के निशान को ढूंढती रहतीं।

"मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती! अगर तीन दिन तक मछुए नहीं आये तो कसम खाकर कहती हूं कि मैं एक गोली अपने सिर के पार कर दूंगी!" मर्यूत्का ने एक दिन निराश होकर अन्यमनस्क नीले सागर की ओर देखते हुए कहा।

लेफ्टीनेन्ट ने धीरे से सीटी बजाई।

"मुझे तो कमीना और बुजदिल कहा था और अब तुम देखती हो कि खुद क्या हो! थोड़ा और सब्र करो—सरदार बन जाओगी। तुम्हारा रास्ता बिल्कुल सीधा है—आवारागर्दों के किसी टोले की सरदार बन जाओगी।'

"तुम फिर क्या ये बीती हुई बाते ले बैठे हो? वही पुराना पचडा! ठीक है कि मुझे गुस्सा आ गया था। इसीलिये तुम्हे भला-बुरा कहा था क्योकि ऐसा करना जरूरी था। यह जानकर मेरे दिल को गहरी चोट लगी थी कि तुम बिल्कुल निकम्मे हो, बिल्कुल कायर हो। मुझे दुःख होता है कि तुम ऐसे हो। तुमने तो मेरे दिल मे घर कर लिया है, मेरा दिमाग खराब कर डाला है, नीली आखोवाले शैतान!"

लेफ्टीनेन्ट ने जोर का ठहाका लगाया और गर्म रेत पर चित लेटकर हवा मे अपनी टागे लहराने लगा।

"क्या तुम्हारा दिमाग तो नही चल निकला?" मयूत्का ने कहा।

लेफ्टीनेन्ट ने फिर जोर का ठहाका लगाया।

"अरे ओ, गूगे! कुछ बोलता क्यो नही!"

लेकिन लेफ्टीनेन्ट तब तक अपने ठहाके लगाता रहा, जब तक कि मयूत्का ने उसकी पसलियो मे अपनी उगलिया नही चुभोई।

लेफ्टीनेन्ट उठा और उसने हसी के कारण आखो मे आ जाने वाले आसुओ की बूदें साफ की।

"यह तुम ठहाके किस बात पर लगा रहे हो?"

"खूब लडकी हो तुम, मरीया फिलातोव्ना, किसी को भी इस तरह हसा सकती हो। मुर्दा भी तुम्हारे साथ नाचने लगेगा!"

"क्यो नही? तुम्हारे ख्याल के मुताबिक तो उस लट्टू की तरह भवर मे चक्कर लगाना अच्छा है, जो न एक किनारे हो, न दूसरे? खुद भी चक्कर मे रहे और दूसरे को भी चक्कर मे डाल दे?"

लेफ्टीनेन्ट ने फिर से कहकहा लगाया। उसने मयूत्का का कधा थपथपाया।

"तुम्हारी जय हो, नारियो की महारानी। मेरी प्यारी फ्रायडे! तुमने तो मेरी दुनिया ही बदल डाली, मेरी रगो मे अमृत का प्रभाव पैदा कर दिया है। तुम्हारी उपमा के अनुसार मै अब किसी भवर मे लट्टू की तरह चक्कर खाना नही चाहता। मै खुद महसूस कर रहा हू कि अभी किताबो की दुनिया मे जाने का वक्त नही आया। नही, मुझे अभी और जीना है। अपने दात और मजबूत करने है, भेडिये की तरह काटते फिरना है ताकि मेरे इर्द गिर्द के लोग मेरे दातो से डर जाये!"

"क्या मतलब? क्या सचमुच तुम्हारी अक्ल ठिकाने आ गई?"

"हा, मेरी अक्ल ठिकाने आ गई, प्यारी! ठिकाने आ गई मेरी अक्ल! धन्यवाद, तुमने कुछ रास्ता दिखा दिया। अगर हम किताबें लेकर बैठ जायगे और तुम्हे सारी दुनिया की बागडोर सौंप देंगे तो तुम लोग ऐसा बेडा गर्क करोगे कि पाच पीढिया खून के आसू रोयेंगी। बिल्कुल बुद्धू हो तुम, मेरी प्यारी। जब दो सस्कृतियो की टक्कर हो रही है तो बात एक किनारे ही होनी चाहिये। जब तक "

उसने बात बीच मे ही छोड दी।

उसकी गहरी नीली आखें क्षितिज पर जमी थी, उनमे खुशी की चिगारिया नाच रही थीं।

उसने समुद्र की ओर इशारा किया और धीमी तथा कापती हुई आवाज मे कहा—

"पाल।"

मर्यूत्का इस तरह उछलकर खडी हुई मानो उसमें बिजली दौड गई हो। उसने देखा—

दूर, बहुत दूर, क्षितिज की गहरी नीली रेखा पर एक सफेद बिंदु सा चमक रहा था, झलमला रहा था—एक पाल हवा मे लहरा रहा था।

मर्यूत्का ने हथेलियो से अपनी छाती दबा ली। चिरप्रतीक्षित इस पाल पर विश्वास न करते हुए उसने उस पर अपनी आखें गडा दी।

लेफ्टीनेन्ट उसकी बगल मे आ गया। उसने मर्यूत्का के हाथ पकड लिये, खीचकर उन्हे छाती से अलग किया, नाचने लगा और मर्यूत्का को अपने चारो ओर चक्कर देने लगा।

वह नाच रहा था, फटे पतलून मे अपनी पतली-पतली टागो को ऊपर की ओर उछालता हुआ अपनी कणकटु आवाज मे गा रहा था—

"सागर के उस नीले, नाल
कुहासे मे
एकाकी ही पाल
श्वेत-सी झलक दिखाता
बढता आता
ता-ता-ता! ता-ता-ता!"

"बद करो यह बकवास!" मर्यूत्का ने खुशी से हसते हुए कहा।

"मेरी प्यारी माशा! पगली! सुन्दरियो की महारानी! अब जान बचने की सूरत निकल आई! अब हम बच गये!"

"शैतान, कम्बख्त! देखते हो न कि तुम्हे भी इस द्वीप से इसानो की दुनिया मे जाने की प्रबल चाह है!"

"है, प्रबल चाह है! कह तो चुका हू मै तुमसे कि मुझे इसकी बहुत चाह है!'

"जरा ठहरो हमे उन्हे सकेत करना चाहिये। उन्हे इस तरफ बुलाना चाहिये!"

"इसकी क्या जरूरत है? वे खुद ही इधर आ रहे हैं।"

"और अगर अचानक किसी दूसरे द्वीप की तरफ मुड गये तो? किर्गीजो ने तो कहा था न कि यहा अनगिनत द्वीप है। हो सकता है कि हमारे करीब से निकल जायें। जाओ झोपडी मे से एक बदूक उठा लाओ"

लेफ्टीनेन्ट झपटकर झापडी मे गया। वह बदूक को हवा मे ऊचा उछालता हुआ फौरन वापस आया।

"यह खेल बद करो!" मर्यूत्का चिल्लाई। 'तीन गोलिया दाग़ दो।"

लेफ्टीनेन्ट ने बदूक का कुदा कन्धे से लगाया। शीशे की सी खामोशी को चीरती हुई तीन आवाजें हवा म गूज गइ। हर गोली के दगने पर लेफ्टीनेन्ट लडखडाया। अब उसे इस बात का एहसास हुआ कि वह बहुत कमजोर हो गया है।

पाल अब साफ नजर आने लगा था। वह बडा, कुछ कुछ गुलाबी और पीला था। वह मस्त पक्षी के पानी पर तैरते हुए पख की भाति मालूम होता था।

"यह क्या बला है?" नाव को ध्यान से देखते हुए मर्यूत्का बडबडाई। "कसी नाव है यह? मछुओ की नाव जैसी तो बिल्कुल नही। उनसे तो बहुत बडी है।'

नाववालो ने गोलियो की आवाज सुन ली थी। पाल लहराकर दूसरी ओर झुक गया और नाव मुडकर सीधी तट की ओर आने लगी।

गुलाबी पीले पाल के नीचे नीले सागर की पष्ठभूमि मे यह नाव काले धब्बे जैसी दिखाई दे रही थी।

"यह नाव तो मछलियो के इसपेक्टर की सी लगती है। मगर व आजकल यहा किसलिये आये हैं, समझ म नही आ रहा," मयूत्का धीरे धीरे बडबडाई।

नाव जब कोई सौ मीटर की दूरी पर रह गई तो वह बाइ ओर को घूमी। उस पर एक आदमी दिखाई दिया। उसने अपन दोना हाथो का प्याला सा बनाकर मुह के सामन किया और जोर से पुकारकर कुछ कहा।

लेफ्टीनेन्ट चौकन्ना हुआ। वह आगे की ओर झुका, उसन बन्दूक को रेत पर फेंक दिया और दो ही छलागा म पानी तक जा पहुचा। उसने अपन हाथ फैलाये और खुशी से मस्त होकर चिल्ला उठा— हुर्रा! य ता हमारे आदमी ह! जल्दी कीजिय श्रीमान! जल्दी कीजिये!"

मयूत्का ने बहुत ध्यान से नाव को देखा। उसे पतवार चलानेवाले व्यक्ति के कधा पर सुनहरी फीतिया झलमलाती नजर आयी।

मयूत्का एक डरी-सहमी चिडिया की तरह फडफडाई।

उसके स्मतिपट पर एक चित्र उभरा। चित्र यह था—

बफ नीला पानी येव्स्युकोव का चेहरा। उसके शब्द—"अगर सफेद गार्डों के हत्थे चढ जाओ तो इसे जिन्दा उनके हवाले न करना।"

उसने आह भरी, अपन होट काटे और झपटकर बन्दूक उठा ली।

वह बदहवास सी चिल्ला उठी—

"अरे, कम्बख्त अफसर! लौट वापिस! म तुम्ह कहती हू लौट आओ कम्बख्त!'

लेफ्टीनेन्ट टखना तक पानी मे खडा हुआ हाथ हिलाता रहा।

अचानक उसे अपने पीछे जमीन फटने के समान जोर का धमाका सुनाई दिया। ऐसा धमाका मानो आग और तूफान एक साथ पथ्वी पर टूट पडे हो। उसकी समझ मे कुछ नही आया। वह इस मुसीबत से बचने के लिय एक तरफ का उछला और टुकडे टुकडे हुई जा रही पथ्वी का धमाका ही वह आखिरी आवाज थी, जो उसन सुनी।

मयूत्का भौचक्की-सी गिरे हुए जवान को देख रही थी। वह अपना बाया पाव अनजान और अकारण ही जमीन पर लगातार पटक रही थी।

लेफ्टीनन्ट सिर के बल पानी म जा गिरा। उसके फटे हुए सिर से लाल धारें बह-बहकर समुद्र के दपण म घुलमिल रही थी।

मयूत्का एक कदम आगे बढी, फिर झुकी। वह चीत्कार कर उठी, उसने अपनी वर्दी को छाती पर फाड डाला और बन्दूक नीचे गिरा दी।

पानी म गुलाबी रग के कोमल धागे के साथ लटकी हुई आख तैर रही थी। उसम आश्चय और दुख की झलक थी। समुद्र सी नीली आख मयूत्का को दख रही थी।

वह घुटना के बल पानी मे गिर पडी। उसने बेजान और विकृत सिर को उठाने की कोशिश की और अचानक लाश पर ढह पडी। वह तडपन लगी, उसने अपना चेहरा खून से लथपथ कर लिया और दुखभरी आवाज मे चिल्लाने लगी—

"मेरे प्यारे! यह क्या कर डाला मैंने? आखें खोलो! मेरी तरफ देखो मेरे प्यारे! अरे आ, नीली आखावाले!"

नाव मे तट पर पहुचे हुए लोग उन्हे ऐसे देख रहे थे माना उन्हे काठ मार गया हो।

मामूली बात

सिनेमाघर

सडक पौ फट रही है
दीवार पर हडवडी मे टेढा तिरछा चिपकाया गया परचा

अत्यावश्यक सूचना!

लाल सैनिक नगर छोड रहे ह।
स्वयसेवक मेना* के दस्ते नगर के आस पास पहुच गये हैं।
लोगो से शात रहने का अनुरोध किया जाता है।

धूल मिट्टी से लथ पथ एक लाल सनिक इस परचे के पास से बदूक को घसीटता हुआ गुजरता है।

परचे पर उसकी नजर पडती है अचानक पागलो की तरह बेहद गुस्से मे आकर वह उसे फाड डालता है।

उसके होठ हिलते डुलते हैं स्पष्ट है कि वह आग बबूला होकर खूब कोस रहा है।

---

* 'स्वयसेवक मेना"—सफेद गार्डों की क्राति विरोधी सेना, जिसे ज़ार के जनरलो ने दोन तट पर सगठित किया। १९१८–१९२० के दौरान विदेशी हस्तक्षेपकारियो के सक्रिय समर्थन पर आधारित यह सेना सोवियत सत्ता के विरुद्ध क्रियाशील रही।—स०

विदेशी

खस्ताहाल चौखटे म जडा हुआ, अदर की ओर फफूदी के हरे धब्बावाला दपण कभी दो टुकडे हो गया था, अनाडी हाथो ने उसे जोडा था और सिर के पास उसके दोनो भाग ऊचे-नीचे हो गय थे।

चुनाचे इस विटक के कारण दपण म प्रतिबिम्बित चेहरा दो हिस्सो म बट गया था और मुह विकृत होकर बायें कान की ओर बेहूदा ढग स खिच गया था।

कुर्सी की टेक पर एक कोट लटक रहा था और दपण के सामने एक व्यक्ति दाढी बना रहा था। वह सलटी रग का चुस्त पतलून और चपटी नाकवाले बादामी रग के अमरीकी जूते पहन था।

नगर के आसपास की बस्ती म बारूद के टूटे-फूटे तहखाना के बीच हज्जाम की यह दूकान बहुत ही गन्दी थी, यहा मक्खिया भिनभिनाती था और ठर्रे, गदे कपडा तथा सडे हुए आलुग्रा की दुगध आती थी।

ऐसा ही गदा मदा अस्त व्यस्त बालोवाला और कुछ कुछ नशे मे खोया हुआ इस दूकान का मालिक खिडकी के पास मुह फुलाये बठा था। न जाने क्यो उसन ऐसी जगह पर अपना यह धधा शुरू किया था जहा कुत्ते भी केवल गदगी करने के लिये ही आत थे। वह इस आगन्तुक को कनखियो से देख रहा था, जो बहुत ही अटपटे वक्त, मुह अधेरे ही आ टपका था जिसन दरवाजे को, लगभग तोड डाला था उसकी सेवा स इनकार कर दिया था और टूटी फूटी रूसी मे गम पानी और उस्तरा मागा था।

छोटी सी खिडकी के शीशे, जिन पर धूल जमी हुई थी, तोपो की निकट आती हुई धाय धाय से हर बार बुरी तरह हिल उठत और हर जोरदार धमाके के वक्त दाढी बनाता हुआ व्यक्ति अपनी शान्त और सावधान भूरी आखो से खिडकी की ओर देखता।

अलुमीनम के प्याले मे साबुन के बफ जसे सफेद झाग के बीच उसकी दाढी और मूछो के साफ किय हुए छल्ले सुनहरी नारगी झलक दिखा रहे थे।

दाढी बनाने के बाद उसन उस्तरा एक तरफ को रख दिया गम पानी मे बढिया रूमाल भिगोकर चेहरा साफ किया और पतलून की जेब से चादी की पाउडरदानी निकालकर पाउडर लगाया।

चिक्ने गालो श्रौर ठोडी के गुल पर उसन अपनी उगलिया फेरी श्रौर उसवा भिचा हुग्रा तथा वठोर मुह श्रचानक एक क्षण को मस्त, गुलाबी फूल की तरह खिल उठा।

लेकिन उसी क्षण तोप के धमाके स खिडकी फिर काप उठी।

दूकान का मालिक सिहरा श्रौर मानो नीद से जागते हुए फटी-सी श्रावाज म उन्नइनी भाषा म बोला—

'भून रहे हैं! बिल्कुल पास आ गये है!"

'Comment!' श्राप क्या बोलता?"

विदेशी फुर्ती स मालिक की श्रोर घूमा श्रौर उसे यह खीझ भरी बुडबुडाहट सुनाई दी।

'म क्या बोलता? यह भी खूब रही! पचास साल से उन्नइनी बोल रहा हू, सभी की समझ म श्रा गई, मगर इसकी समझ म नही श्राई! दीन ईमानवाले तो समझ जात ह पर काफिरो के पल्ले कुछ नही पडता!

श्रोह!' विदेशी न शब्द को खीचते हुए कहा।

दूकान के मालिक को उस समय श्रौर भी श्रधिक हैरानी हुई, जब विदशी न जेब स कत्थई रग की शीशी निकाली, नाखून से काफी श्रदर को धसी हुइ डाट निकाली श्रौर रकाबी म बहुत ही तेज गधवाला कोई तरल पदाथ डाला। इसके बाद बाल बनानेवाला ब्रुश उसमे भिगोकर वह माथ मे गुद्दी की श्रार बालो पर फेरने लगा।

श्राश्चय से मुह बाये हुए दूकान के मालिक न देखा कि भीगे सुनहर बाल पहन तो घुघराय श्रौर फिर धीरे धीर काले हो गये।

विदशी खडा हुग्रा, उसन रूमाल स सिर पाछा श्रौर बहुत सावधानी से चीर निकाला।

उसने कालर का बटन बद किया, टाई बाधी श्रौर जब वह कोट पहन रहा था तो उसे दूकान मालिक की ऊब भरी बुडबुडाहट सुनाई दी—

"यह भी श्रच्छा तमाशा है! श्रापन अपने बालो के साथ यह क्या कर डाला? श्राप कोई विदूषक या मसखर ह क्या! "

नाइ! श्रम मसखरा नाइ श्रम व्यापारी! श्रमारा नाम लिग्रोन! लिग्रान कुतर्युरिये! "

'सो तो नजर ही श्रा रहा था कि श्राप ईमाई नही ह। श्रापका

नाम भी लोगा जैसा नही, बल्कि कुत्ता जैसा है कुत्ते कुत्ते कितना कूडा-करकट है इस दुनिया मे।"

दूकान मालिक ने घृणा से फर्श पर थूका।

लिग्रोन कुतयुरिये ने खूटी से अपना हल्का ओवरकोट उतारा, टोप को गुद्दी पर टिकाया और दूकान मालिक के हाथ मे बडा सा नोट थमा दिया।

दूकान मालिक ने पलके झपझपायी। मगर उसके सम्भलने के पहले ही विदेशी सडक पर पहुच चुका था और बागो की बाडा के साथ-साथ नगर की ओर कदम बढा रहा था। नगर की दूरस्थ चिमनियो के पीछे से ताजादम और लाल लाल सूरज सामने आने लगा था।

सबसे मे आये हुए हज्जाम ने नोट को सिकोडा मरोडा, उसके गालो की छोटी छोटी झुरिया चालाकी भरा जाल-सा बन गयी, उसने धूर्तता से खिडकी की ओर देखा, अस्त-व्यस्त बालोवाला सिर हिलाया और जोर देते हुए स्पष्ट शब्दो मे कहा—

"जरूर कोई सिरफिरा है!"

"Au revoir, बहादुर jeune homme!"

पतझर शुरू होने के पहले का गर्म, सुहाना दिन था।

लिग्रोन कुतयुरिये पटरी पर उसी दिशा म मस्ती स चल दिया, जिधर बहुत-से लोग चीटियो की भाति चले जा रहे थे।

एकदम सुनसान लेकिन चौडी सडक के सिरे पर खड्ड के ऊपर एक पुराना बाग था। नीचे, खड्ड म एक छिछली, कुछ कुछ हरी झलकवाली नदी बालू और गेरुआ मिट्टी को काट रही थी।

खड्ड के सिरे पर सफेद फीते की भाति एक वीथी थी। उसके दोनो ओर लोहे का सजावटी जगला था और वह सदियो पुराने सघन चिनार वृक्षो स आच्छन्न थी।

जगला उसके साथ सट और उस पर लटके हुए लोगो के भार म दबा जा रहा था।

नदी के दूसरी ओर, दलदल के बीच म, जो पीले नरसलो मे दबा हुआ था और जिसमे जहा-तहा पानी की टेढी मेढी नीली धाराये नजर आ

रही थी, तल्ला के सक्रे माग पर ढेरा-ढेर धातु से चमक्ते हुए, छोटे-छोटे लाल कीडे मकोडा जैसे लोग चलते दिखाई दे रहे थे।

लिग्रोन कुतयुरिये लगातार लोगा से क्षमा मागता और अपना टोप उठाकर सम्मान प्रकट करता हुआ जब जगले के पास पहुच गया तो दूर से, बायी ओर से, जहा स्टेशन था, जोरदार चार धमाके हुए। उन्होंने हवा को मानो चीर डाला, वह ज़ोर से चीख उठी और दूर क तल्ला के सक्रे माग तथा चीड वक्षा की नीची घुघ के ऊपर चार सफेद बादल से छा गये।

लागा से घिरा हुआ जगला एक स्वर से कह उठा—

'अ अ हा!"

"निशाना ठीक नही बैठा," किसी न दढ और विश्वासपूण आवाज म कहा।

ये शब्द अभी कहे भी नही गये थे कि हवा फिर स चीख उठी और तल्ला के माग पर फिर से सफेद बादल छा गये और उन्होने उस पूरी तरह ढक दिया।

"यह बात हुई! बडा अचूक निशाना रहा!"

लिग्रोन कुतयुरिये के करीब खडे हुए लाल बालोवाले स्थूलकाय व्यक्ति ने दरिन्दे की भाति हाठो पर जबान फेरी।

तख्तो क सक्रे माग पर लाल कीडे मकोडे घबराहट मे इधर उधर भागत दिखाई दिये।

अहा, अब पता चल रहा है इन्ह! बदमाशो क होश ठिकाने आ रहे ह!"

"मगर अफसोस है कि व फिर भी बच निकलगे!"

' सभी तो नही! बहुत से यही ढेर हो जायेंगे!"

'शाबाश है कोर्नीलाव* के जवाना को! "

' इन सब का भुरक्स निकाल दिया जाये! पाजी, लुटेरे बदमाश!"

श्रैप्नल क अधिकाधिक धमाके होने लगे, निशाने अधिकाधिक अचूक

---

*कोर्नीलोव—रूसी जारशाही सेना के एक जनरल। सोवियत सत्ता के विरुद्ध सघप किया। दोन क्षेत्र मे सगठित प्रतिक्रान्तिकारी "स्वयसेवक सेना" का कमाडर था।—स०

बैठने लगे। खुला सा ओवरकोट पहन, सुनहरे बालोंवाली सुंदर सी जवान औरत के पास खड़े हुए एक बुजुर्ग व्यक्ति ने लिओन कुतर्युरिये को सम्बोधित करते हुए पूछा —

"क्या कहते हैं इसे ... जिससे गोलाबारी की जा रही है ?"

'श्रैप्नेल, श्रीमान ! ... ऐसा पाइप होता ... जिसमें बहुत छोटा छोटा गोली रहता। बहुत बुरा चीज होता ! Tres desagreable!'

बुजुर्ग ने फिर से क्षितिज पर आँखें गड़ा दीं। सुनहरे बालोंवाली सुंदरी बड़ी-बड़ी आँखों में मस्ती लाकर और कामुक ढंग से होंठ फुलाकर मुस्करा दी।

"इसे बक शाट कहते हैं न ?' उसने पूछा। सम्भवत वह इस विशेष शब्दावली का उपयोग करके बहुत खुश थी और शान दिखा रही थी।

Oui madam! बक शाट ! ... '

लिओन कुतर्युरिये ने अपना टोप तनिक ऊपर उठाया और जंगले से दूर हट गया। मुड़कर देखने पर उसे सुंदरी की नजर में निराशा की झलक मिली। वह खुशमिजाजी से हवा में एक चुम्बन उड़ाकर और बजरी पर छड़ी बजाता हुआ आगे बढ़ चला।

रेत लाँघता हुआ वह फाटकों की तरफ चल दिया जहाँ पंख फैलाये हुए शाही उकाब धुंधली सुनहरी चमक दिखा रहा था। खेलते-कूदते लड़कों ने पत्थर मार मार कर उसके दोनों सिर तोड़ डाले थे।

सड़क पर पहुँचकर वह बंदरगाह को जानेवाली ढाल की ओर चल दिया। किन्तु उसे अपने पीछे यह शोर सुनाई दिया — 'देखो ! ... वे आ रहे हैं ! ... ' और सरपट दौड़े रहे घोड़ों की टापें गूंज उठीं।

लिओन कुतर्युरिये पटरी के सिरे पर रुक गया और उसने सड़क पर नजर डाली।

सुनहरे-लाल ... लगभग नारंगी रंग का अंग्रेजी घोड़ा सफेद पदमोंवाली अपनी टांगों को ऊँचे लहराता और अपने सवार को हल्का फुल्का अनुभव करते हुए तेजी से दौड़ा आ रहा था। उसकी लगाम कसी हुई थी और इसलिए उसके मुँह से झाग निकल रहा था। उसके पीछे तीस फौजी घुड़सवारों का दस्ता था।

तेज घुड़सवारी, उत्तेजना और विजय-मद से तमतमाये चेहरेवाला

जब उसने अगले से हाथ उठाया तो यह देखकर उसे बड़ा अपमान हुआ कि रूमाल के कफ पर जंग का निशान लग गया है।

'Sacrebleu!" फ्रांसीसी ने झल्लाकर कहा और जेब से रूमाल निकालकर बड़े यत्न से जंग साफ करने लगा।

वह शाम तक मजे मजे और बेमतलब सड़कों पर घूमता और नगर में प्रवेश करते हुए स्वयंसेवकों के पैदल और घुड़सवार दस्तों का छड़ी और टोप हिलाकर तथा मुस्कराकर स्वागत करता रहा। वह पैदल दस्ते के बीच घुस जाता, फौजियों और अफसरों से बातें करता तथा सिर झुकाकर और पैर रगड़कर उन्हें विजय की बधाई देता।

उसका चेहरा प्यारा पेरिसी बुलवारों के मस्तमौजियों जैसा खिला हुआ और भोलापन लिये था। अफसर और सैनिक उसकी बहुत ही अटपटी रूसी सुनकर लोट पोट होते। किन्तु फ्रांसीसी इस बात का बुरा न मानता खुद भी हँसता और मजा लेता। हाँ, कफ पर जंग का धब्बा जरूर उसे जब-तब परेशान करता प्रतीत होता क्योंकि वह जेब से अक्सर रूमाल निकाल कर उस मुसीबत के मारे धब्बे को रगड़ता और फ्रांसीसी में गालियाँ देता।

दिन नदी-पार के जंगल में जाकर ढल गया। शाम की नम ताजगी के साथ ही नगरवासी हर दिन की भांति अपने घरों में जा छिपे। उन्हें डर था कि कहीं कोई झल्लाया घबराया हुआ पहरेदार गोली ही न मार दे या कोई गुंडा चाकू ही न भोंक दे।

सुनसान कूचे में निश्चीन कुलपुत्रियों के जूतों की मजबूत एड़ियाँ जोर से बज रही थीं।

फ्रांसीसी को दूर से एक इमारत की शहद के छत्ते जैसी खिड़कियाँ रोशनी से भरपूर दिखाई दीं। यह एक अमीर जमींदार की इमारत थी जो घोड़ों का कारोबार करता था। लाल सेना के अधिकार के समय यहाँ कम्युनिस्ट पार्टी का क्षेत्रीय कार्यालय था।

दरवाजे के पास धुंधली-सी वृहदाकार 'मर्सेडीज बेंज' कार खड़ी थी और थका हुआ ड्राइवर उसकी गद्दी पर सो रहा था।

ओसारे की सीढ़ियों पर तना और असीम तथा अपने कर्तव्य की मूर्ति सा बना हुआ पहरेदार–युंकर*–खड़ा था। झुटपुटे में उसके फौजी

---

*युंकर–जारशाही रूस में सैनिक अफसर विद्यालयों के छात्र।–सं०

ग्रोवरकोट की ग्रास्तीन का 'वी' काटवाला लाल-काला फीता कुछ कुछ दिखाई दे रहा था।

लिग्रोन कुत्युरिये खिडकिया के सामने जा पहुचा ग्रौर उसने दो ग्रफसरो का जोर जोर से एक दूसरे को इशारे करते हुए कमरे मे से जाते देखा।

वह ग्रधिक ग्रच्छी तरह स दख पाने के लिये रुक गया। मगर तभी उसे बदूक तानने की ग्रौर साथ ही यह कठोर ग्रावाज सुनाई दी–

यहा रुकना मना है! ग्रागे बढ जाग्रो!"

कुच बात नाइ, फौजी साहब! ग्रम शान्ति नागरिक, ग्राप ग्रनुमाति, ग्रम बालता–विदेशी! लिग्रान कुत्युरिय ग्रमको इसाई फौज को जीत का बधाई देकर खुशी हाता।"

फासीसी की ग्रावाज मे दूसरा का मन मोम बनानेवाली ऐसी सरलता, मधुरता ग्रौर ऐसा भालापन था कि युकर ने बदूक नीचे कर ली।

फासीसी खिडकी से छनती हुई सफेद रोशनी की मोटी पट्टी मे सिर पर टाप रखे, टाग चौडी किये खडा था, मधुर मधुर मुस्करा रहा था। युकर को वह प्रसिद्ध फिल्म ग्रभिनेता माक्स लिडर के हास्यपूर्ण चित्रा का शरारती नायक सा प्रतीत हुग्रा, जिसके कारनामा पर वह उन दिनो खूब खुलकर हसा करता था जब बदूक का भारी दस्ता नही, बल्कि ग्रधेरे सिनेमा की खामोशी मे किसी लडकी का कोमल हाथ उसके हाथ मे होता था।

फिर भी उसने कडाई से कहा–

"ग्रच्छी बात है, श्रीमान! मगर ग्रागे चले जाइये! सन्तरी से बात करना मना है!

Mille pardons! ग्रम नाईं जानता था! ग्रम नाईं फौज! ग्राप शायद बडे तोप का रक्षा करता!"

युकर खिलखिलाकर हस दिया–

"नही! यहा फौजी कमान का दफ्तर है! श्रीमान, ग्रागे चले जाइये!"

लिग्रान कुतयुरिये ग्रागे चल दिया। इमारत पीछे रह जाने के बाद उसने मुडकर देखा। सीढिया पर निश्चल खडा युकर कासे के बुत जैसा प्रतीत हो रहा था। बदूक की सगीन पर ठडी, रुपहली चमक दिखाई दे रही थी।

फ्रासीसी ने अपना टोप उतारा और चिल्लाकर कहा—

"Au revoir जनाब फौजी! अम बहुत प्यारा करता बहादुर रूसी jeune homme को!"

कफ

पुराने बाग बगीचो मे डूबी हुई वमीलयव्स्काया सडक शात थी, ऊघ रही थी। बागो के बीच से छोटे छोटे घर झाक रहे थे।

सफेद फौज के नगर मे आने के दो सप्ताह पहले भवन विभाग के आदेशानुसार अभिनेत्री मरगरीता आन्ना कुतयुरिये डाक्टर साकोवनिन के फ्लैट के दो कमरा मे आ बसी थी।

डाक्टर सोकोवनिन की बीवी शुरू में तो आग-बबूला हो उठी—

'ऐसी ऐरी-गैरी औरत को यहा बसा दिया। बाद को सभी चीज चुराकर चम्पत हो जायेगी। दाद फरियाद सुननेवाला भी कोई नही!'

झल्लाहट के कारण वह अपनी किरायेदार से कन्नी काटती और दुआ-सलाम भी न करती।

मगर अभिनेत्री कुछ ले भागने के बजाय पियानो और फावा, अडरवीयरो तथा स्वर लिपियो से भरे हुए चमडे के कई सूटकेस अपने साथ लाई।

वह पचम स्वर की बढिया नाटकीय गायिका निकली उसका तराशा हुआ इजीनी नाक नक्शा था सुदर हाथ थे और कमाल का फ्रासीसी लहजा था।

एक शाम को जब उसने आवाज का गुजाते हुए सहजता और विश्वास से अपिरा के कुछ गीत गाये तो मानवीय शत्रुता की दीवार म दरार पड गई।

डाक्टर की बीवी किरायेदार के कमरे म आई, उसने उसके कण्ठ की प्रशसा और बातचीत की तथा घटिया सोवियत ढाबा म खाना खाकर सेहत खराब करने के बजाय अपने साथ ही खाना खाने का प्रस्ताव किया। इस तरह मरगरीता कुतयुरिये घर का ही व्यक्ति बन गई।

मस्माम मरगो न अपना चतुराई, बढिया तौर-तरीका और बसन्त ऋतु से भादसा म ही फसे हुए अपने पति के प्रति घर भर्फेन्र सना के

ग्रान पर जिसके लौटने की उसे ग्राशा थी, कोमल तथा प्रगाढ प्यार जताकर गृह-स्वामियो का मन मोह लिया।

इसी भयानक दिन, गोलाबारी, घोडा की टापा की ग्रावाजा ग्रौर हलचल भरी सडको पर लागा की ग्रफवाहा के वाद मदाम मरगो चाय के समय वहुत ही उत्तेजित ग्रौर खुश-खुश घर लौटी।

'ग्रो, ग्राना ग्राद्रेयव्ना! सडक पर एक परिचित ग्रफसर मे मरी भेट हो गई! उसने मुये वताया कि लिग्रान कमाडर की गाडी म है ग्रौर ग्राज ग्राठ वजे तक, जैसे ही नगर मे दाखिल हाने की रेलवे लाइन की मरम्मत हो जायेगी, वह यहा ग्रा जायेगा।"

म तुम्ह बहुत-वहुत वधाई दती हू, मरी प्यारी!" डाक्टर की वीवी ने जवाव दिया।

इसीलिये जव व सभी—डाक्टर, ग्राना ग्राद्रेयेव्ना, उनकी बेटी लीलिया ग्रौर मरगा—रात के खाने के लिय मेज पर जमा हुए ग्रौर जार से दरवाजे की घटी बजी तो 'Ah c est mon mari! चिल्लाती हुई दरवाजे की ग्रोर लपकनेवाली मरगो के पीछे पीछे वाकी लोग भी उधर ही भागे।

लिग्रोन कुतयुरिये दहलीज पर ग्राया। उसकी पत्नी न खुशी से खिलखिलाते हुए उसके गाल चूमे, लिग्रोन ने पत्नी के कधे पर हाथ फेरा ग्रौर झेंपते हुए गह स्वामिया की ग्रोर देखकर मुस्कराया।

'O mon Leon! O mon petit je vous attendais depuis longtemps'

फ्रासीसी न धीरे से बीवी को कुछ कहा। वह पति का हाथ थामकर घूमी।

"ग्रोह, मेरी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नही। मैं तो म तो ग्रपन पति से ग्रापका परिचय तक कराना भूल गई!"

लिग्रोन कुतयुरिये ने सिर झुकाया, गह-स्वामिनी का हाथ चूमा ग्रौर डाक्टर के साथ वडे तपाक से हाथ मिलाया।

"हम दहलीज क पास ही क्या खडे हैं? ग्राइय खाने के कमरे मे चलें! हा, पर ग्राप तो शायद सफर के बाद नहाना चाहगे?"

फ्रासीसी ने सिर झुकाया।

"धानवाद Parlez vous français madame?

"Un peu troppeu! गह-स्वामिनी ने झेंपते हुए उत्तर दिया।

"फ्मास ! श्रम रूसी बहुत बुरा बालता। श्रम घर पर टब म नहाना नाइ चाहता ! श्रमारा श्रादत हाता सफर के बाद गुसलखाना जाता। स्तेशन पर श्रम बाला कि गुसलखाना मे ले चलता Je bain मालिक डर गया, बोलता – 'कसा गुसलखाना गोली चलता।' श्रम दो सौ रूबल देना। उसने श्रमे नहाया श्रौर सडक पर – धाय धाय ! "

फ्रासीसी ने ऐसे मजे से नहान का किस्मा सुनाया कि मरगरीता समेत सोकोविनिन परिवार के सभी लोग खूब ठहाके लगाते रहे। हा, मरगरीता कभा-कभी क्षण भर को पति पर चौकन्नी सी नजर डाल लेती।

मेहमान ने डटकर खाना खाया श्रौर मुस्कराते तथा दात चमकाते हुए टूटी फूटी रूसी भाषा मे श्रोदेसा की घटनाये सुनायी। उसने यह बताया कि कैसे वहा पूर्वी बार श्रायी श्रौर बोल्शेविक पीठ दिखाकर भागे

'जल्दी सब कुछ ठीक हो जाता श्रम फिर से व्यापार करता, दिव्वबद की फक्तरी चलाता मरगा श्रापरा मे गाता।"

वह मुस्कराया श्रौर प्रश्नसूचक दृष्टि से पत्नी की श्रोर देखा। वह समझ गयी।

Tu es fatigue Leoni N est ce pas?

'Oui ma petite! Je veux dormir!

'हा हा ! श्रापको ऐसे सफर के बाद जरूर श्राराम करना चाहिए। श्रापका सामान कहा ह निग्रान फ्रासेविच ?

श्रो घमारा पास बस एक छाता-सा थैला था ! श्रम गुसलखाना क मालिक का पास बल तब छोड दिया।

'तो फिलहाल श्राप प्यातर निकोलायेविच का नाइटसूट ले लीजिये।'

"श्राहा श्राद्रेयव्ना, श्राप कोई चिन्ता न कर ! निग्रान का नाइटसूट मर पास है," फ्रासीसी महिला न कहा श्रौर उसके चेहरे पर प्यारी तथा कामना-सी सुर्खी दौड गई।

'Merci madame!'

निग्रोन कुतुर्युरियर न फिर स गृह-स्वामिनी का हाथ चूमा श्रौर बीवी के पीछे-पीछे शयन के कमरे स बाहर चला गया।

नियानो स श्राधे घिर हुए कमरे म दाखिल होन ही फ्रासीसी जल्दी स खिडकी क पास गया श्रौर उसन नीचे नाका जहा प्रकाश क पुज की धुधली-सी झलक मिल रही थी।

तेजी से मुडकर उसने धीरे मे पूछा—

"साथी वेला! आप फ्लैट से अच्छी तरह परिचित है न? चोर दरवाजा कहा है?"

'अहाते म लकडिया की छानी के पास। वायी ओर फाटक है। रात को उसम ताला लगा रहता है। पडोस के अहाते मे पहुचन के लिय काई वारह फुट ऊची दीवार लाघनी होगी, मगर छानी के पास हल्की सी सीढी पडी है।

"शावाश, वेला!'

वह धीरे-से मधुर हसी हस दी।

"एक वात कहू सचमुच वहुत ही कमाल किया है आपने! अगर मुझे यह न मालूम होता कि आप साढे आठ वजे आयेगे, तो मैं हरगिज आपको न पहचान पाती। क्या भेस वदला हे, विल्कुल जादूगरी कर दी है।"

"शी! धीरे वोलो! दीवारा के भी कान हा सकत है! हम रूसी मे वातचीत नही करगे। फ्रासीसी दम्पति के वीच ऐसी वातचीत अजीव-सी लग सकती है।"

वेला न पियानो खोला और भारी मन्द स्वर छेडा। फिर फ्रासीसी म पूछा—

'साथी ओर्लोव, आप मे मसखरेपन की यह प्रतिभा कहा से आ गई? मुझे तो कभी इस वात का विश्वास न होता! "

"ऐसे ही तो मन प्रवासी जीवन के छ वप पेरिस मे नही विताये "

"मै फ्रासीसी भापा की बात नही कर रही! मेरा अभिप्राय लहजे की इस वढिया नकल से है! यह तो वहुत मुश्किल है!"

"यह वहुत मामूली चीज हे वेला! वस थोडा-सा सकल्प और आत्म सयम चाहिये।"

उसने मेज पर वठकर कफ का वटन खोला।

"आप मुझे कागज और पन दे सकती ह?"

उसने कागज लिया, कफ को सीधा किया और पेंसिल से लिखे गय वमुश्किल नजर आनवाले शब्दा को ध्यान मे देखते हुए उन्हे सावधानी से पन से लिखन लगा। पहली ही पक्ति साफ साफ यो लिखी गयी—

गार्ड मायय्वी यार। अलेक्साद्र घुडसवार रजीमट। लगभग ६०० तलवार। '

लिखन के बाद उसन रबड स कप को अच्छी तरह साफ किया और बेला की तरफ पुर्जा बढाते हुए कहा–

' बेला ! कल इस समनूगिन के पास पहुचा दना। यह उस सना के गुप्त विभाग म भेज देगा। बस, अब यह बताओ कि म सोऊगा कहा ? "

बेला ने सोने के कमरे क खुले दरवाजे की तरफ इशारा किया। वहा कारलियाई भुज की लकडी के दोहरे पलग पर सफेद चादर अपनी छटा दिखा रही थी।

' पलग अच्छा है ! कमरा भी आप कहा सोती ह ? "

'इसी पलग पर ! '

ओर्लोव की भौंह तन गयी।

'यह क्या बकवास है ? क्या पहले से ही इस बात की ओर आपका ध्यान नहीं जाना चाहिये था ? गृह-स्वामिया स मेरे लिय कोई कोच माग लीजिये।

बेला का चेहरा तमतमा उठा और वह उसकी आखो मे आखें डालकर बोली –

'ओर्लोव ! म नही जानती थी कि आप मध्यवर्गीय स्त्रिया के शिकार हैं। अगर आप रूसी बोलना खतरनाक समझते ह तो यह तो बिल्कुल फ्रासीसी ढग नही है कि लम्बी जुदाई के बाद घर लौटन पर पति अलग पलग की माग करे। यह बडी बेतुकी बात है इससे शक पदा हो सकता है ! हमारे पास दो रजाइया हैं और हम आराम से सो सकेंगे। आशा करती हू कि आपको अपने पर काफी सयम है।

ओर्लोव न जोर से हाथ झटका–

मेरा यह अभिप्राय नही था ! आपको परशान नही करना चाहता था ! म बहुत बेचनी की नीद सोता हू !

"यह भी कोई बात ह ! मेरे बिस्तर मे जाने तक दूसर कमरे म चले जाइये !

ओर्लोव दूसरे कमरे मे जाकर झल्लाहट से पारिवारिक एल्बम के चित्रो को उलटने पलटन लगा। उसके तने हुए, कठोर और जद चेहरे स

मौज-मस्ती तथा भोलेपन का भाव कभी का गायब हो चुका था। हाठो के सिरे गुस्से से नीचे की ओर मुडे हुए थे, बुजुर्गी की झुरिया उभरी हुई थी।

सोने के कमरे की वत्ती गुल हुई, अधेरा छा गया और बेला की मधुर-सी आवाज सुनाई दी –

"Leon! Je vous attends! Venez dormir!"

ओर्लोव अधेरे शयन कक्ष मे दाखिल हुआ, टटोलता हुआ पलग के सिरे तक पहुचा और उस पर बैठकर उसन भटपट कपडे उतारे।

सरसराती हुई रेशमी रजाई के नीचे घुसकर उसन मजे से तन सीधा किया और रूखी सी हसी के साथ कहा –

'खूब दिलचस्प किस्सा है यह भी! शुभरात्रि, भरगो!"

शुभरात्रि, लिओन!"

लिओन न दीवार की तरफ मुह कर लिया और ऊघानीदी म सदा की भाति उसकी आखो के सामने लाल, हरे और बैगनी घेर घूमने लगे। तीन चार वार गहरी सास लेने के बाद ओर्लोव सो गया।

"कुछ वात नाई"

कुतयुरिये दम्पति सुख चैन से रहते थ। पति के लौटन के तीसरे दिन, इतवार को, वेला ड्रेसिंग गाउन पहन पलग के सिरे पर बठी थी और वच्चा के वडे मे प्याले से नकली काफी पी रही थी तथा पीली गाल और नम रोटी वच्चा की भाति हाठा दाता से कुतर कुतर कर खा रही थी।

ओर्लाव न धीर से आखें खाली और वेला की ओर मुह किया।

नमस्ते, लिओन! कसी नीद आई?"

'वहुत मजे की! तकिये पर काहनिया स सहारा लेते हुए ओर्लोव न उत्तर दिया।

बेला न शृगार की मेज पर प्याला रखा और उसकी तरफ मुडी। उसकी आखा मे गुस्से की कालिमा चमक रही थी।

'मुझे इस रात नीद नही आई और मैं इस नतीजे पर पहुची हू कि यह मूखता, असावधानी और हिमाकत है!

क्या मूखता और हिमाकत है?'

"यह सारा किस्सा ही। जहा लोग खुले तौर पर काम करते रहे हो वहा उन्हे गुप्त काय के लिये छोडना ठीक नहीं है। अच्छे पार्टी कायकर्ताओ के मामले म हम इतने समझ ता नहीं ह कि उन्हे पतलून के बटनों की तरह जहा-तहा गुम करते फिरे। म समझती हू कि आपके मिलसिले म क्रातिकारी समिति न महामूखता का परिचय दिया है "

"वेरा ! म आपसे अनुरोध करता हू कि क्रान्तिकारी समिति के बारे मे अपनी राय जाहिर करने के लिय अधिक उचित शब्दो का उपयोग कर।

'मुझे चिकनी चुपडी बात करने की आदत नहीं है ! "

तो ऐसी आदत बनाइये ! क्रातिकारी समिति आपसे अधिक मूख नहीं है ! "

धन्यवाद !

"इसकी जरूरत नहीं है पार्टी-काय की आपको समझ ही क्या है ? ओर्लोव ने अचानक गुस्से मे आकर कहा। "आप अभी नौ उम्र लडकी है और रोमानी ख्याल मे बहुत ही अमीर घराने स इधर वह आई है ! रोमानी लहर साहसी कारनामे करने की इच्छा ही तो आपको खीच लाई है। बहुत अच्छी बात है कि आप बडी लगन से काम करती है मगर टीका टिप्पणी करने के लायक आप अभी नहीं है।"

'हर किसी को टीका टिप्पणी करने का हक है ! "

' जरूर है तो ढग से टीका टिप्पणी कीजिये। जानना चाहती है कि क्यो मुझे ही यहा छोडा गया है ? इसलिये कि मैं यहा और इद गिर्द के पचासो कोसो तक सब कुछ जानता हू जानता हू कि जब सफेद सेनावालो के तेवर बदलेंगे तो मुझे किस पर और कैसे नजर रखनी चाहिये। जब हमारे लोग लौटेंगे तो घडी भर म सारा नगर मेरी मुट्ठी म होगा। ऐसे ! "

उसने मुट्ठी खोली और उसे फिर से कसकर भीचा—

"ऐसे मुट्ठी मे होगा, और बस ! न तो साजिशें हो सकेंगी, न जासूसी और न प्रतिक्रान्ति ! "

"अगर पकड लिये गये तो ? '

'जोखिम ! लडाई मे जोखिम तो होती ही है ! पर यदि आप ही मुझे यहा पहचान सकी तो यह इस बात की काफी बडी गारटी है कि

कोई भी नही पहचान पायेगा। लाल दाढिया जल्लाद', 'नेरो', 'सन्तापक', चेकावाला श्रोर्लोव श्रौर लिश्रोन कुतयुरिये।'

"मगर फिर भी!"

'बस, रहने दीजिये बेला! जाइय–मुझे कपडे पहनने है!"

नाश्ते के समय लिश्रोन कुत्युरिये ने गृह-स्वामिया को फ्रासीसी चुटकले सुनाकर उनका मन वहलाया श्रौर यह दिखाकर कि मेला ठेला के मदारी छुरिया कैसे निगलते है, तेरह वर्षीया लीलिया को वहुत ही खुश किया।

किन्तु कमरे मे लौटकर उसने श्रपना टोप लिया श्रौर रखाई तथा कडाई के साथ बेला से कहा–

"वेला! मैं वाहर जा रहा हू। छ बजे तक लौटूगा। श्राप श्रभी जाकर मेमेनूखिन को मेरी टिप्पणिया दे दें।"

पिछली रात को नगर मे हल्का सा तूफान श्राया था श्रौर धुली तथा निखरी इमारत तथा वक्ष, जिन पर पानी की बूदें श्रभी तक नही सूखी थी, शीशे जैसी पारदर्शी हवा मे चमक रहे थे।

सडको पर सभी श्रोर नगरवासी, तिरगे झण्डे, रिबन, गुलाब के गुलदस्त फशनदार टोपिया श्रौर रगे हुए गम गुलाबी होठ नजर श्रा रहे थे।

सभी लोग जल्दी जल्दी गिरजा चौक की तरफ जा रहे थे, जहा वोल्शेविको के हाथो से नगर की सौभाग्यपूण मुक्ति के सम्बन्ध मे प्राथना श्रौर परेड होनेवाली थी।

लिश्रोन कुतयुरिये पहली कतारो मे जा पहुचा, श्रद्धा से टोप उतारकर तथा विनम्र भाव से उसने प्रायना तथा लम्बी टागोवाले शकु जैसे जनरल का दहशत पैदा करनेवाला भाषण सुना।

श्रपने भाषण के जोरदार श्रशा पर वह उछलता श्रौर तव ऐसा प्रतीत होता मानो उसका दुबला पतला शरीर गत्ते के विदूपक की भाति बोरी जसी फौजी जाकेट से बाहर निकल श्राना चाहता है।

रपहले बिगुलो ने जव जोर से मार्सेइयेज धुन बजानी शुरू की, तो फ्रासीसी लिश्रान कुतयुरिये गव से छाती तानकर खडा हो गया श्रौर सगीनो, बटनो, पद फीतिया श्रौर तमगा की चमक-दमक के साथ समारोही परेड मे भाग लेनेवाले फौजी दस्ता का श्रपने पास से गुजरते हुए देखता रहा।

लोग-बाग फौजी दस्ता के पीछे-पीछे हो लिये।

लिओन कुतयुरिये ने टोप सिर पर रखा और मजे-मजे उल्टी दिशा में, बडी सडक की तरफ चल दिया। लोगो से भरी पटरी पर मुश्किल से अपना रास्ता बनाते हुए उसे अखबार बेचनेवाला एक छोकरा तूफान की भांति नगेपाव भागा आता दिखाई दिया।

लडका सभी को धकियाता था, उछलता-कूदता था और जोर से चिल्लाता था—

"ताजा अखबार 'नाशा रादीना' लीजिये! प्रमुख बोल्शेविक की गिरफ्तारी! बडा दिलचस्प किस्सा!"

लिओन कुतयुरिये ने इस छोकरे को रोका। छोकरे ने बिजली की तेजी से अखबार की लिपटी हुई प्रति उसके हाथ मे दे दी, पैसे जेब मे डाले और आगे भाग गया।

लिओन कुतयुरिये ने तनिक कापती उगलियो से अखबार सीधा किया। मिट्टी के तेल की गधवाली भाडा सी पक्तियो पर उसकी आखे तेजी से दौडने लगी फैली, रुकी और इस मोटे-से शीर्षक पर जम गई—

"चेकावाले ओर्लोव की गिरफ्तारी।

"कल रात को अफसरो के गश्ती दस्ते ने एक अज्ञात व्यक्ति को गिरफ्तार किया, जो स्टेशन से रवाना होनेवाली मालगाडी के एक डिब्बे मे घुसने की कोशिश कर रहा था। स्टेशन पर उपस्थित लोगो ने प्रान्तीय असाधारण आयोग चेका के अध्यक्ष, कुख्यात क्रूरकर्मा, सतापक और जल्लाद ओर्लोव के रूप मे उसे पहचान लिया। बहुत-से लोगो की शनाख्त के बावजूद ओर्लोव इस बात से इनकार करता है और यह दुहाई देता है कि वह किसान है, पूतोव्का से आया है और अपने घर लौटना चाहता था। उसके पास से किसी तरह के कागजात नही निकले, मगर उसकी जाकेट मे बहुत बडी रकम मिली। ओर्लोव यकीन दिलाता है कि उसने पूतोव्का की सहकारी संस्था के लिए यह रकम हासिल की है। कायर जल्लाद के इस नीचतापूर्ण झूठ से लोगो को इतना अधिक गुस्सा आया कि वे वही उसके टुकडे-टुकडे कर डालना चाहते थे। गश्ती दस्ते ने बडी मुश्किल से

उसे वचाकर अपने जासूसी विभाग म पहुचाया, जहा इस नीच को उसकी काली करतूता की ठीक सजा मिलेगी।"

उगलिया भिच गइ   अखबार मुड मुडा गया   पैर तारकोल पर जम गये।

वगल से किसी नारी ने कहा—

"क्या बात है   आपकी तबियत अच्छी नही है क्या ?"

एक क्षण बीता

लिओन कुत्युरिये ने टोप ऊपर उठाया—

धानवाद! नाइ! कुछ वात नाइ! दिल वहुत गरवर करता le coeur थोडा खतखत हुआ कुथ वात नाइ। धानवाद। वग्घीवाले! निकोलायेव्स्का सरक चलता!"

वह झपटकर वग्घी मे चढ गया और मुडा मुडाया हुआ अखबार जेब मे डाल लिया।

वार्तालाप

'ओर्लोव ? खु खुद! अ अभी अ अभी वे वेला यहा हाकर ग गई है तु-तुम यह तु-तु-तुम्ह हुआ क्या है? तु-तुम्हारी ता सूरत ही वदली हुई है!'

ओर्लोव न ओवरकोट की जेब स अखबार निकालकर कहा—

नो, पढो!'

समेनूखिन ने कागज पर नजर डाली। छोटे छोटे बाला और लम्वे लाल कानोवाला उसका सिर झटपट झुक गया और वह खरगाश पर झपटन के लिये आखिरी छलाग मारने को तैयार शिकारी कुत्ते जसा नजर आन लगा।

उसकी आखे पक्तियो पर तजी से दौडने लगी।

कुछ क्षण बाद सिर ऊपर उठा, माटे मोटे हाठावाला मुह मन्तुप्ट हसी से खिल उठा और वह हक्लाते हुए बोला—

"य य यह तो म मजा आ गया! क-कमाल हो ग गया!'

"इसम कौन सी कमाल की वात नजर आई है तुम्ह, ओर्लोव न आखें सिकोडते और मेज के सिरे पर बैठन हुए पूछा।

'ऐ ऐसा तो व वहुत कम होता है। अ अव तुम विल्कुल नि नि

निश्चिन्त हो सकते हो। व इ इस दुनिया का काम तमाम कर देंगे और तु-तुम म मर गये। तु-तुम्हें दू-दूसरा का ि शिमी का ख्याल तक नहा आयेगा। य-यह तो ऐसी बढ़िया व-चाल हो गई है कि जिसकी को-का-कोई कल्पना भी न-नहीं कर सक-सकता था।"

ओर्लोव न हथेली पर ठोडी टिकाकर सेमेनूखिन को बहुत ध्यान से देखा।

समेनूखिन तुम्हारे दिमाग मे कभी किसी तरह के सन्देह नहीं आये? क्या तुम हमेशा सोचे विचारे बिना ही अपना काम करते हो?"

य-यह तु-तुम क्या पू-पूछ रहे हो?

'अगर मैं तुमसे यह कहू कि अखवार की यह टिप्पणी पढने के बाद अब मैं अपने को दुश्मनों के जासूसों के हवाले करन जा रहा हू तो तुम क्या कहोगे?"

सेमेनूखिन न हसी के कारण खुला हुआ अपना मुह झटपट बन्द कर लिया, अपन लौह शरीर के दबाव से चू चर करती हुई कुर्सी की टेक की ओर पीछे हटा और ठहाका मारकर हस दिया।

ओह बे-बेडा गर्क! म तो य-यह स-समझ बैठा था कि तु-तु-तुम सजीदगी से बात कर र रहे हो! सु-सुनो! इसी वक्त सबको यह खबर पहुचानी चाहिये अ अच्छा होगा कि ह ह हलको म सा सा-साथी ओर्लोव के बा बारे म अफसोस का शोर म मचाया जाये। य-य यह तो बहुत ही ब बढिया रहेगा!'

ओर्लोव मेज पर उसकी ओर झुक गया।

'तुम पाजी हो! म तुम्हारे साथ बिल्कुल सजीदगी से बात कर रहा हू। अगर म जाकर अपने को दुश्मनो के हवाले कर दू तो तुम क्या कहोगे?"

ओर्लोव ने कठोरता से और बहुत जोर दे देकर ये शब्द कहे थे। सेमेनूखिन के चेहरे से मुस्कान गायब हो गयी। उसने ध्यान से ओर्लोव के बायें गाल को देखा जहा आख के नीचे तिकोनी मासपेशी उत्तेजना से फडफडा रही थी।

'म मैं क्या क-क-कहूगा?' उसने धीरे धीरे और घुटी-सी आवाज मे कहना शुरू किया, कुछ क्षण चुप रहा, कुर्सी को पीछे हटाया, तनकर खडा हो गया और इतमीनान तथा शान्त भाव से बगलवाली जेब से पिस्तौल

निकालकर कहा – "म म द दो मे से ए एक वात कह कहूगा। या तो तु-तुम्हारा दिमाग च च चल निकला है या तुम क क-कमीने और गद्दार हो। इस या उस हा हा हालत मे मे मेरा यही फ फर्ज है कि म हा हालात को यह र र रख न लेने दू।"

'अपने इस खिलौने को जेब म रख लो। तुम मुझे पिस्तौल स नही डरा सकत।'

'म मै ड ड डराने का इ इरादा नही रखता। म म मगर गा गोली तुम्हे मा मा मार सकता हू!"

'सुनो, सेमेनूखिन! तुम छोटी मोटी सभी बातो को भूल जाओ। मेरे लिये यह बहुत ही महत्वपूण मामला है। मैं वहुत ही मुश्किल काम पूरा कर रहा हू, जिसके लिये सभी शक्तियो का पूण सन्तुलन आवश्यक है। आप लोगो का काम सीधा सादा है। आप छछूदरो की तरह दिन भर फ्लैटो मे बैठे रहते ह और केवल रातो को प्रचार काय के लिये हलका मे जाते है। म दिन भर तलवार की धार पर नाचता रहता हू। जरा सी कोई भूल हुई और खेल खत्म!"

'त-त-तो तुम क्या चा चाहते हो?'

"जरा रुको! वहुत ही भयानक वात हो गई है! हिमाकत भरी गलती, शक्ल सूरत की बेहद समानता के कारण एक बेकुसूर आदमी मौत के मुह मे जा रहा है। वह आदमी दुश्मन नही है – कोई अफसर, पादरी, कारखानेदार या जमीदार नही, बल्कि एक किसान है। वह उनमे से एक है, जिनके लिये म काम कर रहा हू। क्या पार्टी उसकी कबानी देकर मुझे खतरे से बचाना चाहेगी? क्या मैं चैन से अपना पलडा भारी होने दे सकता हू?'

सेमेनूखिन के मुह पर व्यग्य रेखा झलक उठी।

"स-स-समस्या के प्रति बुद्धिजीवियो का र रवया? नैतिक अधिकार और आ आ आत्मा की आवाज? दो-दो-दोस्तोयेव्स्की वाली बाते? तु-तु-तुम्हारे लिये तो पा पार्टी का ध्येय ही सब कुछ है और तु-तुम्ह उसके प्रति ग-गद्दारी करने का को-कोई हक नही है।"

ओर्लोव के चेहरे पर, माथे से ठोडी तक गहरी सुर्खी दौड गई। वह उछलकर कुर्सी से खडा हो गया।

"तुम पार्टी के ध्येय की क्या चर्चा कर रहे हो? मै उससे गद्दारी

नहीं कर रहा हू और न ऐसा करने का इरादा ही रखता हू। अगर म अपने को दुश्मनो के हवाले कर भी दूगा तो भी वसी ही यातनाए दकर वे मुझसे कुछ नही उगलवा सकेंगे।"

सेमेनूखिन न झल्लाहट मे कधे झटके।

त-तो तुम जान-बूझकर कि किसलिये दुश्मन के जा जाल म सिर फसाना चाहते हो? तु-तुम कहते हो कि कि त्रि किसान का गिरफ्तार कर लि लिया गया है। व वह उनमे से एक है जि जिनके लिये हम का काम कर रहे ह? मुझे मालूम नहीं कि किसान भी तरह-तरह के ह। उसके पास मे मा माटी रकम निकली है। क कहा से आई? स म महकारी सस्था का है? मु-मुमकिन है मगर यह ज्यादा मु मुमकिन है कि चो चोरबाजार मे आ आटा या च चर्बी बेचकर हाथ र रगा हो मतलब यह कि कु कुलक है! तो अ अगर खु खुला नहीं तो छि छिपा दुश्मन है। उसके लिये हाय दु दुहाई मचाने की ज ज जरूरत नही है!"

"मगर दुश्मनो का जासूसी विभाग तो उसे ओर्लोव समझने हुए सता सताकर मार डालेगा। एक निर्दोष आदमी मारा जायेगा।

सु-सुनो!' सेमेनूखिन ने कहा। तु-तुम घर जाओ, ठर्रे का एक गिलास पियो और स-सो जाओ! फलसफी!"

'तुम भाड मे जाओ!' ओर्लोव झल्ला उठा। 'और अपनी इन नक सलाहो को भी अपने ही पास रखो। मुझे उनकी जरूरत नही है!"

सेमेनूखिन ने सोच मे डूबते हुए अपना बडा सा सिर हिलाया।

तुम बहुत उ-उत्तेजित हो! य यह बु-बुरी बात है! इसी इसीलिये तुमने वे सभी बे बेसिरपर का बा-बाते कही है, जिनके कारण किसी भी सा सा साथी को पा पार्टी से निकाला जा सकता है। तु-तुम जो कुछ क-करना चा-चाहते हो वह ग गद्दारी है। मै क-क्रान्तिकारी समिति के नाम पर तुमसे कह र रहा हू! होश मे आ आओ!"

ओर्लोव के चेहरे का रग उड गया और कपोलास्थिया घबराहट स तन गइ। उसने आखे झुका ली और मानसिक क्षोभ स उसका गला रुध गया--

हा, म बहुत उत्तेजित हू। आखिर मैं कोई मशीन तो हू नही! इन सभी परिस्थितियो का ध्यान म रखते हुए, जिन्हें तुम जानते हो, मैं क्रान्तिकारी समिति से अनुरोध करता हू कि वह मुझे काम म मुक्त करके

मोर्चे के पीछे भेज दे। मुमकिन है कि मैं यह अन्तहीन तनाव वर्दाश्त न कर सकू और टूट जाऊ। इस तरह मैं ध्येय को कही अधिक हानि पहुचा सकता हू। इन सभी चीजो को ध्यान मे रखिये। पत्थर भी टुकडे-टुकडे हो सकता है।"

"बे-बेतुकी वाते! घर जाकर आराम करो।"

सेमेन्खिन की आवाज मे नर्मी और प्यार आ गया। ऐसे लगा मानो पिता अपने छोटे और सबसे लाडले बेटे से वात कर रहा हो।

"दमीत्री! मैं अ अ अच्छी तरह समझता हू कि तु-तु-तुम पर बहुत भारी गुजर रही है और तु-तु-तुम्हारा ऐसे भडक उठना विल्कुल स्वाभाविक है। तुम हमारे सबसे अच्छे कार्यकर्त्ता हो। द द दो दिन आराम कर लो। इ इसके बाद तु-तुम खुद इन वा वातो पर हसोगे! जरा सो सोचो तो कि यह कैसा अच्छा स स-सयोग है! ओर्लोव मर गया और हमारे दु दुश्मन निश्चिन्त हो गये, मगर बचा जान ओर्लोव य-य-यहा है तुम्हारी खोपडी पर!"

'अच्छी वात है! मै चल दिया। मेरा तो सचमुच सिर चकरा रहा है!"

'मै समझता हू! त-तो ऐसी उ-उल्टी-सीधी वात नही करोगे न?"

'नही।"

"क कसम खाते हो?"

'हा।"

"त-तो जाओ! कैसी बे बेतुकी वात है! तीन दिनो मे तु-तुमने इतनी ब बढिया सूचनायें जमा की और अचानक "

ओर्लोव का हाथ अपने दोनो हाथो मे लेकर उसे जोर से दवाते हुए वह बोला –

ज जरूर अच्छी तरह आराम क कर लेना!" और अन्त मे प्यार से कहा – "गजब के आदमी हो तुम!"

आइसक्रीम

लिओन कुतयुरिये ने फूल बेचनवाली से दो फूल खरीदकर काज मे लगाये और छडी घुमाता हुआ निकोलायेव सडक पर नीचे की ओर चल दिया। रास्ते मे वह पतझर की हवा के कारण नारियो की अलसायी हुई आखो मे बिल्ली की भाति झाककर मुस्कराता जाता।

दिन काफी गरम था और इसलिये उसका कोई ठण्डी, ताज़गी देनेवाली चीज खाने का मन हुआ।

उसने काफे का शीशे का दरवाज़ा खोला, टोप मेज़ पर रखा, सुराही स गिलास मे पानी डाला और बेरा लडकी को आइसक्रीम लाने का आदेश दिया।

उसने अपने इद गिर्द नज़र डाली। पासवाली मेज़ पर दो फौजी अफसर अनार की हल्की शराब—ग्रेनाडीन—पी रहे थे। एक अफसर का दाया हाथ काली गलपट्टी मे लटका हुआ था और कलाई की पट्टी पर खून का लाल धब्बा दिखाई दे रहा था।

बेरा लडकी आइसक्रीम ले आई और लिओन कुतयुरिय स्ट्राबरियो की सुगधवाली आइसक्रीम के गोलो को बडे मज़े से खाने लगा।

" हा, हा, ओर्लोव की ही तो चर्चा कर रहा हू।"

लिओन कुतयुरिये की उगलियो ने चमची धीरे से मेज पर रख दी और उसका सारा शरीर अनजाने ही उस अफसर की आवाज़ की ओर झुक गया।

' यह किस्सा भी खूब रहा। हुआ यह कि हम स्टेशन के पास से जा रहे थे, लाइनो के इद गिर्द गश्त लगा रहे थे। वहा बहुत-सी गाडिया और डिब्बे खडे थे। वे शायद ज्यादा फौज को उत्तर की ओर ले जानेवाले थे। अचानक हमने क्या देखा कि एक शैतान पहिया के नीचे स रेग रहा है। पलक झपकते मे बाहर आकर डिब्बे म चढने लगा। 'रुको!' वह रुक गया। हम उसके पास गये। गाढे का कोट पहने हुए हट्टा-कट्टा देहकान, लाल लम्बी दाढ़ी और आखें कोयलो जैसी काली-काली।—'तुम कौन हो?' 'हुजूर, खुदा आपका भला करे। मैं यूज़ोव्का का रहनेवाला हू। घर जाना चाहता हू, मगर हफ्ते भर से गाडिया जाती ही नही। मुझे जाने दीजिये।' —'तुम्हे यूज़ोव्का जाना है न? तो इस गाडी मे क्या घुस रहे हो, जो दूसरी जा रही है?'—'मैं यह कैसे जान सकता हू, जब सभी गाडिया गडबड हो गई है?'—'गडबड हो गई है? अपने कागज़ात दिखाओ!'—'वह तो नही हैं हुजूर, चोरी हो गये!'—'गिरफ्तार करलो!' श्वेग्लोव बोला। —'किसलिये? मन क्या किया है?' वह चिल्लाने लगा। हम उसे स्टेशन पर ले आये। वहा पहुचे ही थे कि अचानक कोई बगल से चिल्ला उठा— ओर्लोव! —'कौन-सा ओर्लोव?'—'सेवा का अध्यक्ष!' हमारे मुह खुले के खुले रह गये। यह तो खूब शिकार हाथ लगा। इसी वक्त तीन

और व्यक्ति भागे आये, उन्होंने भी उसे पहचान लिया। उनमे से एक चेका के पजे मे रह चुका था। उसने फौरन उसके मुह पर घूसा जमाया। उसकी दाढी खून से रग गयी, मगर वह अपनी वही रट लगाये रहा—'कहता हू कि म येमेल्चूक हू, सहकारी सस्था का सदस्य।' हम तो वही स्टेशन पर उसका तमाम कर देना चाहते थे, मगर कमाडर ने उसे जासूसी विभाग को सौपने का आदेश दे दिया।"

"वह किसलिये?'

"किसलिये से तुम्हारा मतलब? जाहिर है कि वह तो गुप्त रूप से काम करने को यहा रह गया है। सारे गुप्त सगठन का तार उसके साथ जुडा हुआ है।"

"इस तरह का आदमी कुछ भी तो मुह से नही निकालेगा। हमने एक चेकावाले की खाल खिचवा ली थी, मगर उस कुत्ते के पिल्ले ने मुह नही खोला।'

"खोल देगा मुह! तीन दिन तक वे उसकी चमडी उधेडेंगे और वह सब कुछ बक देगा। इसके बाद उसे दूसरी दुनिया मे चलता कर देंगे। हा, तो तान्या के यहा चलोगे न?"

"किसलिये?"

"उसने हमे आज एक जगह ले जाने का वादा किया है। कमाल की जगह है! वहा बडी रगरगीली दुनिया है। बडा मजा रहेगा।"

'शायद!' हाथ पर पट्टी बधे अफसर ने लापरवाही से उत्तर दिया और उठना चाहा।

लिओन कुतुर्युरिये अपनी मेज से उठा और अफसरो के पास जाकर उसने बहुत ही शालीनता से सिर झुकाया।

'आप माफ करता। आपको जानने का सम्मान—l honneur नही होता। अम व्यापारी लिओन कुतुर्युरिये। अम सुनता—आप ओर्लोव को पकरता?'

अफसर खुश होता हुआ मुस्कराया।

"अम जानना चाहता था अम ओर्लोव पर बहुत कुछ सुना अम ओदेसा से आया तो पता चला—अमारी बूढी मा, ma pauvre mere, चेका ने गोली मारा। अम चेका पर नफरत करता और la sante बहादुर रूसी लेपटीनेन्ट की सेहत का जाम पीना चाहता। आप अम को बताता,

ओर्लोव कैसा होता। श्रम खुद उसको l'assassinat, रूसी म वस वोलता माग्ता।"

लिओन कुतयुरिय की आखो मे गुस्से की चिंगारिया मलक उठी। यह दिलचस्प विदेशी अफसर को रचा। उसन अपने साथी का ओर झुककर कहा –

'मोश्का! इस वृद्ध फ्रासीसी स पीन को काफी कुछ एठा जा सकता है। मैं इस फासता हू।

उसने लिओन का सम्बोधित किया।

श्रीमान हमे बहुत खुशी है। आप सुदर फ्रास के प्रतिनिधि है! हम एक ही ध्येय के लिय खून वहा रहे हैं। बहुत ही खुशी मे हम आपकी सेहत का भी जाम पियेंगे! तो आइये, परिचय हो जाय। लेफ्टीनेंट काउट शुवालोव! सब-लेफ्टीनेंट महामान्य राजकुमार वोरोत्सोव!

दूसरे अफसर ने अपने साथी की पीठ पर धीरे मे कुहनी मारी।

चुप रह, उल्लू! रूस मे इस फ्रासीसी के सभी परिचित काउट है!"

लिओन कुतयुरिये ने अफसरो से हाथ मिलाया।

'बहुत खुसी होला। Je suis enchante शानदार रूसी कुलीनो स परिचित होता, बरा खुसी मिलता।

मगर महाशय! हमे किसी दूसरी जगह चलना होगा। इस दरबे मे तो ग्रेनाडीन के सिवा और कुछ नही है। रूस मे तो फलो के रस से दोस्तो की सेहत का जाम नही पिया जाता।

Mais oui! अम रूसी आदत जानता। अम वोदका पीता।'

"आह, बहुत खूब! असली रूसी दिल पाया है आपने तो!' और महामान्य राजकुमार" वोरोत्सोव ने प्यार स फ्रासीसी का कधा थपथपाया।

अम वोदका पीता। फिर आप अमको ओर्लोव पर वताता। अम जानना चाहता वह किदर रहता? अम बडे कमाडर के पास जाता, अपो हाथ मे ओर्लोव को गोली मारने का वावत वालता, वदला लेता! La vengeance!

वात यह है महाशय, 'महामान्य राजकुमार" ने लापरवाही से कहा। 'अफसोस है कि म आपको यह नही वता सकता कि वह उल्लू

कहा है। मुझ रूसी कुलीन के लिये यह वहुत घटिया सी वात है मगर खुशकिस्मती से दरवाजे के पास मुझे एक आदमी खडा दिखाई दे रहा है, जो आपकी मदद कर सकता है। एक मिनट के लिये इजाजत चाहता हू !"

उसने शान से एडिया वजायी और दरवाजे की तरफ वढ गया, जहा एक लम्वा और पतली कमरवाला अफसर खडा हुआ काफे मे इधर उधर नजर डाल रहा था।

"सुना सोबोलेव्स्की, तुम तो अच्छे दोस्त हो न! मैंने और मीशा ने यहा एक वृद्ध फासीसी को फासा है। वह कोई धोखेबाजी करनेवाला ओदेसावासी है और यहा अपनी मा की तलाश मे आया है, जिसे चेका वाला ने दूसरी दुनिया मे भेज दिया है। उसने ऐसे अचानक ही सुन लिया कि कैसे कल मैंने ओर्लोव को गिरफ्तार किया था और मुझ पर लट्टू हो गया। छक्कड पीने का मिलगी। हमारे साथ चलो! तुम उसे उसके लाडले के वारे मे वता सकते हो और हम उसे जेब खाली करके ही घर जाने देंगे। हा, पर यह ध्यान रखना कि मै राजकुमार वोरात्सोव हू और मीश्का काउट शुवालोव!"

अफसर ने नाक भौंह सिकोडी।

'तुम्हे ता वस, कोई न कोई खुराफात ही सूझा करती है। मुझे ढेरा काम करने है।'

'सोवोलेव्स्की! प्यार दोस्त! लुटिया नही डुवोवा! जाहिल नही वना! तुम्हे इस वारे मे अपने दफ्तर से ताजा सूचनाये हासिल है। और फासीसी की ओर्लोव मे वहुत ही अधिक दिलचस्पी है। वह तो यहा तक कहता है कि उसे अपने हाथ से अपनी pauvre mere का वदला लेने के लिये गोली मारेगा!"

सावोलेव्स्की ऊबे-ऊवे चेहरे से फुदने के फीते को घुमा रहा था।

'तो क्या कहते हो?"

चलो, ऐसा ही सही। बेडा गर्क हो तुम्हारा!

"मै ता जानता था कि तुम सच्चे दोस्त हो। आओ चले!"

लिओन कुतयुरिये से सोबोलेव्स्की का परिचय कराया गया।

"ता कहा चला जाये?"

"'ओलिम्पिया'! इस वक्त तो वस वही खुला है।"

उन्होने वग्घी वुलाई और उसमे सवार हो गये।

मेरा दोस्त

खिडकी के मखमली पर्दों के कारण, जिन पर सिलवटें पडी थी और धूल की तह जमी हुई थी, रेस्तरा के ठडे, अलग कमरे म अधेरा-सा छाया हुआ था।

सिगरेटो के धुए क बादल के बीच से छनता हुआ सधि प्रकाश मेज के सिरे पर रखी हुई खाली बोतलो की कतार के ऊपर मानो जमा जाता था।

कमरे के कोने मे रखे साफे पर नशे मे बुरी तरह धुत्त "काउट शुवालोव ' और 'राजकुमार बोरास्मोव" गानेवाली लडकियो से छेडछाड कर रहे थे।

गानेवाली लडकिया चीख चिल्ला रही थी, ठहाके लगा रही थी और फौजियोवाले अश्लील शब्द बक रही थी।

एक लडकी का रेशमी ब्लाउज फट गया, अगिया की पट्टी कधे मे खिसक गयी और सूराख मे से कसी हुई नुकीली छाती बाहर निकल आई।

'काउट शुवालोव" बच्चे की तरह किकियाते और पैर पटकते हुए छाती को चूमने की कोशिश कर रहा था। लडकी उसे पीछे धकेलती हुई होठो पर थप्पड मार रही थी।

मेज पर सिर्फ सोबोलेव्स्की और लिग्रान कुतुयुरिये ही रह गये थे।

फ्रासीसी की पीठ कुर्सी की टेक से सटी हुई थी और वह घुटनो पर बैठी, सफेद मुलायम-सी बिल्ली जसी लगनेवाली शात लडकी की कमर म अपना हाथ डाले हुए था।

यह लडकी मानो सपना म खोयी-सी खिडकी की ओर देख रही थी।

लेफ्टीनेन्ट सोबोलेव्स्की कुर्सी पर ऐसे तनकर बैठा हुआ था, जसे फौजी परेड के समय घोडे पर सवार हो और सिगरेट के कश लगा रहा था।

रोशनी के प्रतिकूल होने के कारण उसका चेहरा साफ नजर नही आ रहा था और कभी-कभी केवल उसकी आखें ही चमक उठती थी।

लेफ्टीनेन्ट की आखें बहुत अजीब-सी थी। बडी-बडी, गहरी, रसीली, मगर साथ ही खूनी-सी। स्तपी मे बर्फीले तूफान के समय रातो को भेडियो की आखें हरी बत्तियो की भाति चमकती ह। सोबोलेव्स्की की आखो म भी जब-तब ऐसी हरी-सी लौ दिखाई देती थी।

वे दोना लगातार फ्रासीसी मे बात कर रहे थे।

रेस्तरा म कुतयुरिये न शुरू म तो अपनी टूटी फूटी रूसी मे हा नेफ्टीनन्ट से बातचीत की, जिससे दूसरे दोना अफसर हसी से लोटपोट होते रहे। मगर तभी सोबोलेव्स्की ने माथे पर वल डालकर कहा–

'Monsieur laissez votre esperanto! Je parle français tout couramment!

फ्रासीसी खिल उठा। पता चला कि लेफ्टीनेन्ट सोबोलेव्स्की परिस मे रह चुका था, सोरबोन मे तालीम पा चुका था।

वह तना हुआ कुतयुरिये के सामने बैठा था, उसकी आख चमक रही थी और वह धीरे-धीरे पेरिस की चर्चा कर रहा था। वह बूजीवाल के धुआरे बागो की, जहा तुर्गेनेव की मत्यु हुई थी, विश्वविद्यालय के lelle, lettres विभाग के कोलाहलपूण बरामदो की, जहा उसने अपनी जिन्दगी के तीन बढिया साल गुजारे थे, स्मृतिया सजीव कर रहा था।

कुतयुरिये सिर हिलाता जा रहा था, खुद भी परिस के दिलचस्प स्थाना का स्मरण कर रहा था और लगातार लेफ्टीनेन्ट का जाम भरता जाता था। मगर लेफ्टीनेन्ट पर शराब का बहुत ही धीरे धीरे असर हो रहा था। हर जाम के बाद वह और भी अधिक तन जाता और उसका चेहरा और भी अधिक जद हो जाता।

"हा, हमारे फ्रास का वह बहुत ही बढिया जमाना था," लिम्रोन ने निश्वास छोडकर कहा, "मगर अब पेरिस की चमक दमक मन्द पड गई। कम्बख्त बोशा ने बहुत से पेरिसियो को मौत के घाट उतार दिया और अब पेरिस आहे भरती हुई नारिया का नगर है।"

"बहुत अर्सा हो चुका आपको पेरिस गये?"

वहुत तो नही! अभी पिछले साल ही मैं वहा था, बोशा की शान्ति क समय। मुझे बहुत दुख हुआ। हसी-खुशी भरा परिस शोक मे डूबा हुआ था, फ्रास के दिल पर मातम की काली चादर छाई हुई थी।"

"हा, यह बहुत अफसोस की बात है," लेफ्टीनेन्ट न सोच मे डूबते हुए धीरे से कहा और फिर अचानक यह पूछा– 'मेरे इन लम्पट दोस्ता न बताया था कि आप अपनी मा की खोज मे यहा आय ह?'

लिम्रोन कुतयुरिये ने गहरी सास ली।

'जी, हा! यह कितने दुख की बात है, श्रीमान लेफ्टीनेन्ट, कि

मुझे इतना भी मालूम नहीं कि उसकी कब्र कहा है। कैसे दरिन्दे ह य। क्या चाहते हैं ये लोग? जगली एशियाई दश म समाजवाद लाना? यह महज पागलपन है, कोरा पागलपन। हमारे सामने हमारे दश की महान क्रांति की मिसाल मौजूद है। यह क्रांति उस दश के मनीषियो न की, जो सदा मानवजाति क लिय मशाल बने रहे ह। मगर उन्होंने भी क्या किया? उन्होंने भी समाजवाद को एक झूठा सपना मानते हुए उससे इनकार कर दिया। और आपके यहा? हे भगवान! कारिन्दे खानाबदोशा क लिये समाजवाद! और ये दरिन्दे औरता पर भी रहम नहीं करत। ओह मेरी मा! मैं उसकी आवाज सुन रहा हू, वह मुझे प्रतिशोध क लिए पुकार रही है।"

'हा, हा। चकावाला न उसे गोली मारी है न?"

कुतयुरिये ने सिर हिलाकर हामी भरी।

अब तो आप समझ गय होंगे कि इस कम्बख्त का गिरफ्तार हो जाना मरे लिय कितनी अधिक खुशी की बात है।'

'सिगरेट तो दो फ्रासीसी, लिम्रोन के घुटना पर गुडी-मुडी बिल्ली की तरह बठी उस लडकी ने अचानक कहा। वह अपरिचित भाषा के शब्द सुनते सुनते ऊब गई थी।

'पेरिस की मेरे दिल मे बडी मधुर स्मतिया ह सोबोलेव्स्की न दातो के बीच स धीरे धीरे कहा। यह मेरी जिन्दगी का सबसे बेहतर जमाना था। जवानी, जोश और साफदिली! मुझे साहित्य से प्यार था मुझे सिगरेटो के धुए, शराब के हल्के-हल्के खुमार और वायलिना क दर्दीले स्वरो के बीच काफे मे रात रात भर चलनेवाली व उन्मादी बहस बेहद पसन्द थी। वही दुनिया भर के मसल हल होत थे। वही अनजाने नौजवान अपनी कवितायें पढते थे और कुछ समय बाद उनके नाम दुनिया भर म गूज उठते थे "

लेफ्टीनेन्ट न आखे सिकोडी।

आपको याद ह य पक्तिया—

Hier encore l assaut des titans
Ruait les colonnes guerrieres
Dont les larges flancs palpitants
Craquaient sous l essieux des tonnerres "

"ग्रोह, यह सब मेरी समझ मे नही ग्राता   साहित्य मे मैं कमजोर हू। मरा क्षेत्र तो व्यापार है!"

बिल्कुल ग्रधेरा हो गया। ग्रधेरे म सोफे पर दबे घुटे चुम्बन ग्रौर हल्क हल्की चीखें सुनाई दे रही थी।

लेफ्टीनेन्ट ने शराब का जाम खत्म कर डाला ग्रौर उसका चेहरा ग्रौर ग्रधिक पीला हा गया।

"शायद ग्रब चलना चाहिये। वहुत काम है।'

"निश्चय ही ग्राप वहुत थक गय हागे?   ग्रापकी पूरी फौज ही। मगर यह बहादुरा की ग्राखिरी थकान है। सारा सभ्य ससार ग्राप पर नजरे टिकाय हुए है। ग्रब ता ग्रापकी जीत यकीनी वात है!"

लेफ्टीनेन्ट ने मेज पर ग्रपनी कोहनिया टिका दी ग्रौर नशे मे चूर तथा भयानक नजरा से फासीसी की तरफ दखा।

"हा, जल्द ही किस्सा खत्म कर दगे! काफी मजाक हो चुका! जीत के वाद हम वडे पैमाने पर रूस का नव निर्माण शुरू करगे।'

"ग्रपने भावी राज्य का ग्रापके दिमाग म क्या नक्शा है?'

"क्या नक्शा है?   लेफ्टीनेन्ट न ग्रौर भी ग्रधिक ग्रच्छी तरह से कोहनिया मेज पर जमा दी। लिग्रोन कुतयुरिये न दखा कि सोवोलेव्स्की की ग्रजीब-सी ग्राखें उन्माद ग्रौर जनून से फैल सी गयी ग्रौर उनमे भेडिये की ग्राखो जसी चिनगारिया झलक उठा।

'ग्रो, श्रीमान! इस सम्बन्ध म मेरा ग्रपना ग्रलग ही दष्टिकाण है। सब कुछ तोड फोड डाला जाय! समझते हैं न! इस बेहूदा दश को रेगिस्तान बना डाला जाये। हमारे यहा चौदह करोड लोग हैं। सिर्फ बीस-तीस लाख को ही जीने का ग्रधिकार है! हमारी नसल के चुने हुए लागा को — साहित्य, कला, विज्ञान के लागा को! मैं भौतिकवादी हू! तरह करोड सत्तर लाख की खाद बना डाली जाये! समझत ह न! सुपरफोस्फेट, नाइटरेट ग्रौर दूसरी खनिज खादा की काई जरूरत नही! खेता म करोडा लोगा की खाद बिछा दी जाये। इन विद्रोह करनवाले पाजी देहकाना की खाद। सबका मशीन मे डाल दिया जाय! वडी सी काफी पीसनेवाली मशीन म। सभी का दलिया बना डाला जाय! दुनिया इकट्ठा करके प्रेम किया जाय ग्रौर सुखाकर खेता मे डाल दिया जाये! जहा जहा जमीन खराब है, वहा सभी जगह! इस खाद से चुन हुग्रा की नयी सस्कृति के बीज फूटगे।'

"मगर   यानी रह जानेवाले लोगों के लिए काम कौन करेगा?"

'यह भी कोई सवाल है! मशीनें! मशीनें! मशीन निर्माण का अविश्वसनीय विकास। मशीन हर चीज़ करेगी। आप कहेंगे कि मशीनों की देखभाल करना भी तो जरूरी होगा? आह, यहां आप हमारी मदद करेंगे। युद्ध के बाद आपको अमरीका और आस्ट्रेलिया में बहुत बड़े-बड़े इलाके मिले हैं। आप यहां के अपने उन सभी जंगलियों का न तो पेट भर सकते हैं, न सभी को काम दे सकते हैं। हम उन्हें आपसे खरीद लेंगे। हम उनमें से मशीनों की देखभाल करनेवाले लोग तैयार कर लेंगे। थोड़े से! कोई तीन लाख! बस, काफी है! हम उनके लिये एय्याशी की जिंदगी मुहय्या कर देंगे, शराब और सभी तरह के व्यभिचार के चकले बना देंगे। हम उन्हें खाने से लाद देंगे और वे कभी विद्रोह की बात ही नहीं सोचेंगे। फिर इसके अलावा चिकित्सा! शरीरक्रिया विज्ञान की महान उपलब्धियां! अर्जानिक दिमाग की वह जगह ढूंढ निकालेंगे, जहां विद्रोह पैदा होता है। वे आपरेशन से इस जगह को ऐसे ही निर्जीव कर देंगे, जैसे खरगोशों का मूर्धा। बस, हो चुका क्रांतियां! काफी हो चुकीं! भाड़ में जाने दो उन्हें! इसके बारे में क्या राय है आपकी?"

लिप्रोल कुतुयुरिय ने झटपट जवाब दिया—

'यह तो मति की सीमा तक जानेवाली बात होगी, श्रीमान लेफ्टीनेन्ट! अनावश्यक क्रूरता। दुनिया, पश्चिमी यूरोप आपको इतने लोगों की जानें नहीं लेने देगा।"

लेफ्टीनेन्ट फासीसो की ओर झुक गया। उसकी आंखों में अब एकदम पागलपन झलक रहा था। उसकी आवाज हथौड़े से ठोकी जा रही कील की भांति तीखी हो गई थी।

"दम निकल गया? आवारा, कागज़ी पहलवान हो तुम! पिल्ले हो तुम सब! हरामज़ादों की कौम हो, मिट्टी के पुतले हो। तुम सबको सूली दे दी जानी चाहिये, जहन्नुम रसीद कर देना चाहिये! " उसने हाथ से होंठों का थूक साफ किया। "भाड़ में जाओ तुम! मैं चलता हूं! सोना चाहिये! कल अभी कुछ कामरेडों से निपटना होगा! "

"किन कामरेडों से?' कुतुयुरिय ने पूछा।

"लाल तोंदोंवाला से   पाजियों में! ऐसे ही हल्की-फुल्की बातचीत होगी   नाखूनों के नीचे सुइयां, नाकों में रागा   मैं गुप्तचर विरोधी विभाग का कमाण्डर हूं! समझे, फासीसो कीड़े!"

कवितायें रचा करता था और अब जल्लाद हो गया हू। म तुम्ह लिकेर पिलाऊगा। शानदार बेनेडिक्टीन लिकेर!"

"अच्छी बात है! मगर बिल तो चुका दें।"

"इसकी फिक्र न करो!"

सोबोलेव्स्की ने घंटी बजायी।

"बिल कल गुप्तचर विरोधी विभाग को भेज देना। स्कोबेलव्स्काया सडक, मकान न० १७। अब दफा हो जाओ!"

सोबोलेव्स्की सोफे के पास गया।

"हा तो राजकुमारो! काफी एय्याशी हो चुकी। अब चलो!"

'तुम जाओ, हम यही रहगे।"

"पैसे कौन देगा?'

"पैसे है हमारे पास।"

लिओन कुतुर्युरिये ने अफसरो से विदा ली। प्रवेश कक्ष म सोबोलेव्स्की टेलीफोन की तरफ बढ गया।

"फौरन गाडी भेजो! 'ओलिम्पिया' होटल के दरवाजे पर! म इन्तजार कर रहा हू!'

वे दोनो बाहर आ गये। लेफ्टीनन्ट सीढिया पर बैठ गया और लिओन कुतुर्युरिये ने रेलिंग पर कोहनिया टिका दी।

सोबोलेव्स्की देर तक सडक की बत्तियो को देखता रहा। इसके बाद सिर घुमाकर फटी-सी आवाज मे बोला—

"*लिओन! यह भी एक समय था जब म छोटा-सा लडका था और* अपनी मा के साथ गिरजे जाया करता था '

लिओन कुतुर्युरिये ने कोई जवाब नही दिया। भयानक काली और लम्बी मोटरकार मोड मुडी और होटल के दरवाजे के सामने आकर खडी हो गई। लेफ्टीनन्ट उठा और उसने फ्रासीसी को गाडी म बिठाया।

कार घरघरायी और सुनसान सडको पर शोर किये बिना तेजी से बढ चली। वह एक मुहल्ले क दुमजिले मकान के सामने जाकर एकदम रक गयी। ओसारे से सन्तरी ने ऊची आवाज म ललकारा।

"रुको! तुम्हारी आखें फूट गई ह क्या कम्बख्त!' सोबोलेव्स्की ने चिल्लाकर कहा और लिओन को भीतर चलने का सकेत किया। ड्योढी लाघकर वे दूसरी मजिल पर पहुचे। सोबोलेव्स्की न बरामद मे बायी ओर

के एक दरवाजे पर दस्तक दी। जवाब मे आवाज सुनकर उसने दरवाजा चौपट खोल दिया।

कमरे मे हल्की-हल्की रोशनी थी। मेज के पीछे से हट्टा-कट्टा, चौडे कधो और कनल के पद चिह्नोवाला एक व्यक्ति उठकर खडा हुआ।

"सोबोलेव्स्की   यह आप है? यह क्या बदतमीजी है?' अजनबी को देखकर वह बीच मे ही चुप हो गया।

सोबोलेव्स्की एक कदम पीछे हटा और कह उठा—

"श्रीमान कनल! लीजिये, मेरे दोस्त, कामरेड ओर्लोव, से मिलिये!"

"बडे अफसोस की बात है!"

"आप तो हमेशा अपने वही बेहूदा तरीके इस्तेमाल करते हैं अपने को जापानी समझते हैं!   जू जित्सू! आपने तो इसकी जान ही ले ली।"

"म तो सोच भी नही सकता था कि वह कगारू की तरह उछलेगा। खुद ही मेरे घूसे पर आ गिरा। आमाशय के नीचे ऐसा करारा घूसा तो जानलेवा होता है।"

"इस पर पानी डालिये! कुछ हिलता डुलता प्रतीत होता है।"

ओर्लोव ने धीरे धीरे और बहुत मुश्किल से आखें खोली। हर सास के साथ उसे मेदे के नीचे ऐसा दद महसूस होता मानो बुनने की दहकती हुई सिलाइया घुसी जा रही हो। वह कराह उठा।

"होश मे आ गया! अच्छी बात है, मरेगा नही।"

"आइये इसे सोफे पर लेटा दें। आप मजबूत पहरे का इन्तजाम कर दें।"

उन्होंने ओर्लोव को उठाया। दद से वह फिर बेहोश हो गया और सोफे पर ही होश मे आया। उसके ऊपर शीशे के शेड म लैम्प जल रहा था, जिसकी रोशनी स आखें चौंधिया रही थी।

उसन सिर घुमाया, कमरे और मेज पर नजर पडी। उसन घटनाओ को याद करने की कोशिश की।

दरवाजा खुला। सोबोलेव्स्की खुश-खुश अदर आया।

"कनल साहब! तो लाइये निकालिये दस हजार। आप बाजी हार गये। पहला मोटा मुर्गा तो मन फासा है।"

"जहन्नुम मे जाइये।"

'तो यह मान लीजिये कि बाजी हार गए।"

"चलो हार गया। मूर्खों की सदा बन आती है!"

"यह कहावत पुरानी हो गई कनल साहब! वसे आप गुप्तचर विरोधी विभाग के लायक ह नही। मै तो आपकी छुट्टी कर दता। आपके तौर-तरीके बिल्कुल पुराने ह। नकली क्लासीकल! मनोविज्ञान तो आप बिल्कुल जानते ही नही।"

'मेरा पिड छोडिये!"

"नही, मै माफी चाहता हू! मुझे बहुत दुख हो रहा है। मेरे जसा प्रतिभाशाली आदमी ऐसी घटिया-सी नौकरी बजा रहा है और आप जसा बुढ्ढ अफसर बना बैठा है।"

"लेफ्टीनेन्ट!'

"जानता हू कि म कप्तान नही, लेफ्टीनेन्ट ही हू। मगर आपको तो सब लेफ्टीनेन्ट होना चाहिये था। बडी डीग मारते थे। बदबू के मारे हुए खस्ताहाल देहकान को पकड लिया 'ग्रोर्लोव को गिरफ्तार कर लिया!' फूटी आखोवाला कौआ!"

"आपका दिमाग चल निकला है क्या खुद ही तो खुश हो रहे थे"

'खुश हो रहा था आपकी मूखता पर मगर मेरा खयाल था कि अब बूढे रोजेनबाख की छुट्टी कर दी जायेगी और मेरी तरक्की हो जायेगी।

सोबोलेव्स्की की आवाज मे बेहयाई थी। कनल खामोश हो गया।

अच्छा हटाओ, हमे झगडा तो नही करना है, कनल ने खुशामद करते हुए कहा। आप विस्तार स यह बतायें कि आपको यह सफलता कैसे मिली"

"इसे गिरफ्तार करन की? तो आप सीखना चाहते है? ईमानदारी की बात कहू—यह तो केवल सयोग ही हो गया। शुरू म किसी तरह का शक शुबह नही हुआ फासीसी तो फासीसी ही सही। इसने भी खूब बढिया नाटक किया! मैंने भी भाई-चदी जताई, यहा तक कि नीग्रो लोगो के बारे मे अपने सिद्धान्तो की व्याख्या तक कर डाली। मगर तभी एक बात हो गई। जैसे ही घडी भर को इसन अपना सन्तुलन गवाया, इसके घुटना पर बैठी लडकी ने इसका भडाफोड कर दिया। मै

तो जसे सात से जागा। अगर ऐसा हो कि   अगर हम से भूल हो गयी हो और हमने सचमुच ही किसी दूसरे को पकड लिया हो, तो? म इस हद तक उत्तेजित हो उठा कि ध्यान दूसरी ओर करने के लिये बोतल तोडनी पडी। फिर भी विश्वास न हुआ। यही तय किया कि भाई-बदी के नाते इसे यहा घसीट लाऊ और जाच करू   और वह दूसरी बार फिर अपना सतुलन खो बैठा। अगर वह अचानक भागने न लगता तो बात मजाक मे ही टल जाती।''

ओर्लोव ने दात पीसकर कहा—

"हरामी!"

"ओह, श्रीमान लिप्रान! जाग गये? कहिये, नीद कैसी आई!

ओर्लोव ने कोई जवाब नही दिया।

"हा, हा, मै समझता हू! आप तो फ्रासीसी म बातचीत करना अधिक पसद करते हैं! असली पेरिस हैं न? आपकी मा भी तो पेरिसी ह न? वेर्लेन तो याद है? अच्छा कवि है न? जब मने कविताये लिखनी शुरू की थी तो म उसी की नकल किया करता था। कविताये आपको जरूर सुनाऊगा   पसद आयेगी   कुत्ते के पिल्ले!"

ओर्लोव न आखे बद कर ली। हरे धब्बोवाला नारगी फीता सा उसके दिमाग मे बडी तेजी से चक्कर काट रहा था। वह सिहरा और उछलकर साफे पर बैठ गया।

"श्रीमान आर्लोव, कृपया आराम से बठे रहिये," पिस्तौल ऊची करते हुए कनल ने कहा। "हम आपकी गति विधिया पर पाबदी लगाने के लिये मजबूर है।"

आर्लोव न कुछ नही सुना। वह तो मानो कुछ भी न समझता हुआ, बहकी बहकी नजर से अपने सामने देख रहा था। उसे सेमेनूखिन की याद आई!   बातचीत का ध्यान आया! "मने तो कसम खाई थी! मगर वह सोच सकता है कि मन!   उसन उगलिया की पोरा म कनपटिया भीची और सिर हिलाया।

"क्या बात है श्रीमान ओर्लोव? क्या आपको यह जगह पसद नही? कुछ समझ मे नही आता! यहा गर्माहट है, सफाई और आराम है और आपके साथ बडी इज्जत से पेश आया जा रहा है। हा लेफ्टीनेट की अटपटी हरकत के लिये म आपसे माफी चाहता हू। मगर आपने तो ऐसी

चुस्ती फुर्ती दिखाई कि जो भी तरीका सूझा, उसी से आपको काबू करना पड़ा।"

ओर्लोव न चेहरे से हाथ हटाये।

कमीने! मैं आपसे बात नही करना चाहता," उसने चाबकर कर्नल से कहा।

कर्नल ने कधे झटके।

'इस तारीफ के लिये शुक्रिया! मगर बातचीत तो आपको करनी ही होगी। इच्छा न होते हुए भी। इस जगह हमारे अपने तौर-तरीके हैं!"

"नाखूनो के नीचे सुइया घुसेडेगा न नीच?"

'मैं? नही, नही मैं नही! मैं तो बिल्कुल यह नही कर सकता। मेरे हाथ कापने लगते हैं। मगर लेफ्टीनेन्ट इस काम का उस्ताद है। एक बार मे ही पूरी सूई घुसेड देता है और वह टूटती भी नही! कामरेड लोग भी हैरान रह जाते हैं! आप ठडी सूई को तरजीह देते हैं या दहकती को, श्रीमान ओर्लोव? बहुत-से गर्म सुइयो को बेहतर मानते हैं। उनका कहना है कि शुरू मे तो दर्द होता है मगर उगलिया जल्द ही बेजान हो जाती हैं।

ओर्लोव खामोश रहा। लेफ्टीनेन्ट सोबोलेव्स्की ने कमरे का चक्कर लगाया।

तो श्रीमान लिओन? मशीन मे न? हा, हा, मशीन मे!" वह जल्दी से ओर्लोव के पास आया और अपनी भेडिये जैसी दहकती हुई आखें उसकी पुतलियो पर टिका दी। "पीसकर भुरकस बनाया जाये और सुखाकर खाद के रूप मे खेतो मे डाल दिया जाये। सभ्य पश्चिम उफ तक नही करेगा! अनाज उगेगा और मेरी मेज पर पाव रोटी आयेगी। ताजा-ताजा, गर्म गर्म, फूली फूली और जायकेदार! और क्यो? इसलिये कि अनाज घटिया-सा जर्मन सुपरफोस्फेट डालकर नही, बल्कि जिन्दा इसान का खून डालकर उगाया गया होगा!"

लेफ्टीनेन्ट साप की तरह बल खा रहा था, जोर से फुकार रहा था।

ओर्लोव तनकर बैठ गया और उसने जोर से थूका।

सोबोलेव्स्की उछलकर पीछे हट गया और गाली देते हुए उसने हाथ ऊपर उठाया। मगर कर्नल ने उसका हाथ थाम लिया।

यह क्या कर रहे हैं! रहने दीजिये! लेफ्टीनेन्ट, आपका मुक्का तो हथौडे जैसा है। आप तो श्रीमान ओर्लोव की जान ही निकाल देंगे और

ऐसा करना हमारे लिये बिल्कुल अच्छा नही है। सब से अधिक दिलचस्प चीजें तो अभी आगे आनेवाली हैं।

"कुत्ते का पिल्ला!" अपना हाथ छुडाते हुए लेफ्टीनेन्ट ने कहा। "जाकर नहाता हू।"

"हा, और सुनिये! उस बुद्धू, सहकारी किसान यमेल्चूक को रिहा करा दीजिये! बेकार ही उसका हुलिया बिगाड दिया।"

"ओ, आपके यहा लोगो को रिहा भी किया जाता है? कैसी प्रगति है!" ओर्लोव ने कहा।

"आप कोई चिन्ता न करे। आपको रिहा नही करेगे।"

ओर्लोव ने जेबें टटोली। मगर सिगरेटें नही मिली।

"सिगरेट तो दीजिये!"

"लीजिये जनाब!"

कर्नल ने सिगरेट केस उसकी तरफ बढा दिया। ओर्लोव ने उसे लेकर सारी सिगरेटें अपनी हथेली मे उलट ली।

"अरे, आप भी कितने कठोर हैं! मेरे लिये एक भी सिगरेट नही छोडी?"

"और बुरा लीजिये! मुझे तो सिगरेट पीनी ही है!"

"सच कहता हू, आप मुझे पसन्द हैं! ठडे दिमागवाले लोग मुझे अच्छे लगते है!"

"तो खामोश रहिये! चपर चपर जबान चलाने की जरूरत नही है!"

"ओह, भला पेरिसी भी ऐसे वाक्य बोलते हैं! आप खुद अपने को हल्का कर रहे हैं। तो मान लीजिये कि मैंने अपना जासूसी का जाल कुछ बुरा नही फैलाया। आपके चेका से बुरा नही।"

ओर्लोव ने प्यार मे सिकुडी हुई कर्नल की आखो की ओर देखा। उसने सोफे की टेक पर कोहनिया टिकाई और दातो के बीच से कहा—

"बडा अफसोस है, मगर मुझे लेफ्टीनेन्ट सोबोलेव्स्की की इस बात का समर्थन करना पड रहा है कि आप बूढे उल्लू हैं, जिसे केवल दयावश काम से जवाब नही दिया गया।"

कर्नल का चेहरा एकदम लाल हो उठा।

"कमीने तुम ऐसी बदजबानी की हिम्मत भी करोगे! बस, काफी

हो चुका! मैं तुम्हारा दिमाग ठिकाने करूगा! अभी कमाडर को खबर देता हू और काम शुरू हो जायेगा।"

उसने टेलीफोन का रिसीवर उठाया। सोबोलेव्स्की कमरे म लौग।

"हैलो! कमाडर का हेड क्वाटर! गुप्तचर विभाग का सचालक! अच्छी बात है!"

'गारद तैयार है?" उसन टेलीफोन मिलाये जान की प्रतीक्षा करते हुए सोबोलेव्स्की से पूछा।

"तैयार है, कनल साहब!"

हा, सुन रहा हू। हुजूर ये आप बोल रहे हैं? रिपोट करता हू कि ओर्लोव गिरफ्तार कर लिया गया है। हा। आज। नही वह ता सचमुच गलती हो गई थी दोना बिल्कुल एक ही साचे मे ढले हुए जी हुजूर लेफ्टीनेन्ट सोबोलेव्स्की ने गिरफ्तार किया है सुन रहा हू जी जी। हुजूर ऐसा क्या हम भी तो? जी, जी! ऐसा ही कर दिया जायेगा हुजूर! नमस्ते हुजूर!"

उसने गुस्से से रिसीवर पटक दिया।

' बेडा गक!"

"क्या हुआ?" सोबोलेव्स्की ने पूछा।

"इसे हमारे पास से ले जा रहे ह?"

'कहा?"

कप्तान तुमानोविच के पास। विशेप आयोग मे।'

'मगर क्या? यह तो बडा घटियापन है!

"बात साफ है। तुमानोविच नाम पैदा करने पर तुला है। हरामी पिल्ला लूट।"

कनल ने बहुत ज़ोर से और देर तक नाक सुडकी।

"अफसोस है, अफसोस है, श्रीमान ओर्लोव! बडे किस्मत के धनी ह आप। आपको कप्तान तुमानोविच क पास भेजना ही पडेगा। बहुत ही अफसोस की बात है! कप्तान बहुत ही यूरोपीय ढग का आदमी है और कायदे-कानून का बडा पावद है। कुछ भी वह आपसे मालूम नहीं कर सकेगा, रत्तीभर जानकारी पाये बिना ही दूसरी दुनिया म पहुचा देगा। मगर हम आपसे सब कुछ उगलवा लेते—धीरे धीरे, शाति स, प्यार से। बूद-बद करके निचोड लेते। मगर हो ही क्या सकता है। हुक्म ता हुक्म

ठहरा। फिर भी सुबह तक तो आप हमारे यहा ही रहगे, क्याकि रात के वक्त आपको भेजना खतरनाक होगा। आदमी आप वेहद दिलेर ह। सिफ इतना ही अफसोस है कि बूढे उल्लू को अपना हिसाब चुकता करने का मौका नही मिलेगा। लेफ्टीनेन्ट, श्रीमान ओर्लोव का ल जाइय।"

लीजा का आरिया

दापहर के खाने के वक्त मदाम मरगो कुछ परेशान सी बाहर आई।

"आना आद्रेयव्ना, मेरी समझ मे नही आता कि लिओन अब तक क्यो नही लौटा?"

"काई बात नही, मरगो! घबराइये नही। काम काज के सिलसिले म रुक गया होगा या किसी परिचित के यहा चला गया हागा।

"मेरा ऐसा ख्याल नही है। जब उसका जल्दी लौटने का विचार नही होता तो वह हमेशा मुझे पहले से ही इसके बारे मे कह जाता है।"

डाक्टर सोकोवनिन ने शोरबे की तश्तरी के ऊपर अपनी दाढी पर हाथ फेरा।

"आह, प्यारी! आप तो राई का पहाड बना रही है! यह तो योही बकवास है! दिल की कमजोरी है! आपका लिओन वहुत ही भला पति है और उसने आपको बिगाड दिया है। हमार इन मद भाइया को कभी कभी कुछ आजादी देनी चाहिये। जब मने आना से शादी की थी तो मुझे प्यार स निजात ही नही मिलती थी। आध घण्टे की दर हुई कि घर पर आसुआ की बरसात हो जाती, मुसीबत टूट पडती। हमारे डाक्टरी के धधे मे कोई वक्त की पाबदी रख ही कहा सकता है! तो एक दिन मने एक नाटक कर दिया। बस, सुबह ही घर से निकल पडा। बोला—अभी अखबार लेकर लौटता हू। निकला और गुम हो गया। तीन दिन बाद सूरत दिखाई। यहा घर पर हिस्टीरिया के दौरे पडे, हर चीज उलट पुलट कर दी गई, पुलिस से दौड धूप करवा दी गई सारी नदी छान डाली गई, सभी शव गहा के चक्कर लगा डाले गय। और मैं कोई पद्रह कोस की दूरी पर अपने एक जमीदार दोस्त के यहा मछलिया मारता रहा। उस दिन से किस्सा खत्म हो गया। दिना गायब रह सकता हू और किसी को कोई घबराहट नही हानी। आपके साथ भी ऐसा ही होना चाहिये।'

आन्ना आइयेन्ना हम भी।

"जब घर लौटे थे तो क्या खूब लग रहे थे! नाक लाल था, बादवा के लहरे आ रहे थे। मैंने देखा और सोचा—इस कीमती हीरे के लिये मैं अपनी सेहत का सत्यानास किये दे रही हूँ? बेशक भाड में चर जाओ मैं आह तक नही भरूंगी।"

मगर मरगो का मन बहलाने की मवाल माल्विको की कोशिशें नाकाम रही। वह घबराती और परेशान होती रही।

प्यारी मरगो, अगर आप इतनी ही अधिक चिन्तित हैं तो म थाने मे चला जाता हू। वहा एक पुलिसवाला मेरा पुराना दोस्त है। किसी का भी राज क्यो न हो, वह मुफ्त स्पिरिट पाता रहता है और इसके बदले में छोटा मोटा काम भी कर देता है।"

मरगो अपनी अत्यधिक घबराहट की इस स्थिति से चौंकी।

'ओह, नही डाक्टर। बस आप पुलिस का नाम न लीजिये। फूटी आखो नही सुहाती मुझे रूसी पुलिस। ये पुलिसवाले तो सिर्फ रिश्वतखोर है! बात का बतगड बना डालेंगे। इसकी जरूरत नही है! अगर लिओन सुबह तक नही लौटा तो हम कोई कदम उठायेंगे। अब तो मन बहलाना चाहिये। कहिये तो कुछ गाऊ?

'बडी खुशी स मेरी प्यारी! जब आप बुलबुल की तरह चहकने लगती हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।"

मरगो पियानो के सामने जा बैठी।

"क्या गाऊ? अपनी पसन्द बताइये, डाक्टर!'

अगर आज आप इतनी ही दयालु हैं तो हुकुम की बेगम ओपेरा की लीज़ा का आरिया गा दीजिये। जब विद्यार्थी था तभी से इस पर फिदा हू। उन दिनो ही तालिया बजा बजाकर हथेलिया सुजा लेता था।'

मरगो ने स्वर लिपि खोली।

पियानो की शीशे जैसी स्वर-लहरिया टनकने लगी।

डाक्टर आराम कुर्सी मे इतमीनान से बैठ गये। आन्ना आइयेन्ना धीरे धीरे गिलास धाने लगी।

दिन हो या रात
उसकी ही याद
आती रह मुझे सताती रही मुझे

पारदर्शी आवाज धुंधलायी, काप उठी—

बादल जो आया
तूफान लाया,
सुख-सपनो का महल गिराया

स्वरो की छनक अचानक वद हो गई।

मरगो ने पियानो का ढक्कन वद किया और उगलिया चटकाइ। डाक्टर उछलकर खडे हुए।

'प्यारी, मरगो! क्या बात है? अपने को सम्भालिय! आना, जल्दी से दिल की दवाई लाना तो!"

मगर मरगो खुद ही सम्भल गई। होठो को कसकर भीचे हुए और एकदम जर्द चेहरे के साथ वह कह उठी—

"नही, नही! किसी चीज की भी जरूरत नही, धयवाद! मेरा मन वहुत भारी है। आजकल जमाना भी तो कैसा खतरनाक है। मेरे दिल म तरह-तरह के बुरे ख्याल आते है। माफ कीजिये, म जाकर लेटती हू।"

डाक्टर उसे कमरे तक पहुचाकर बीवी के पास लौटे।

"जवान—अक्ल की कच्ची," पत्नी की प्रश्नसूचक दृष्टि के उत्तर मे डाक्टर ने कहा। "ऐसा प्यार दखकर तो मन को कुछ होने लगता है। ओह-हो-हो!"

उहोने अखबार उठाया और 'स्थानीय समाचार' का अपना मनपसद स्तम्भ खोला। आखें सिकोडकर ध्यान से कुछ देखा और पत्नी से बोले—

"आना, सुनती हो, ओर्लोव गिरफ्तार हो गया।"

"कौन-सा ओर्लोव?"

"वही हमारा प्रसिद्ध चेकावाला!'

"सच?"

"बिल्कुल सच! कल उसे स्टेशन पर पकड लिया गया। अखबार मरगो को दे आता हू। जरा उसका ध्यान दूसरी ओर हो जायेगा।"

नमदे के स्लीपरा से धीरे धीरे चलते हुए वे दरवाजे पर पहुच और दस्तक दी।

"प्यारी मरगो, यह अखबार ले लीजिये। इसमे अपना मन लगाइय।'

मरगो ने दरवाजे मे से हाथ बाहर निकालकर अखबार ले लिया।

डाक्टर चले गये। मरगो मेज के पास आई और अखबार को लापरवाही से फेर दिया। गन्दा सा अखबार खुल गया और यागेव छपाई के बीच ये शब्द दिखाई दिये—

"ओर्लोव की गिरफ्तारी"

बेला तो बुत बनी रह गई। केवल हाथो न मेज थाम ली। अक्षर कीडो की भाति रेगने लगे। वह आखें बन्द करके बैठ गई।

वह अचानक उछली और उसने झपटकर अखबार उठा लिया।

"कल? मगर कल यह कैसे हो सकता है? कल तो चौदह तारीख थी न? कल शाम को तो ओर्लोव घर पर था और आज सुबह भी यह क्या बकवास है? मगर वह अब तक लौटा तो नही! अब देर नही करनी चाहिये! अभी सेमेनूखिन के पास जाना चाहिए!"

उगलियो ने रोयेंदार कोट के बटन जल्दी-जल्दी बन्द किये। फशनदार चौडी टोपी को पहनने म कठिनाई हुई। वह बार बार टेढी हो जाती थी।

बेला प्रवेश कक्ष की ओर भागी। डाक्टर सामने आ गये।

'आप किधर चल दी मरगो?

ओह, मुझसे घर पर बैठा नही रहा जाता' बेला लगभग कराह उठी। 'मुझे यकीन है कि लिओन अपने एक परिचित के यहा है। वही जाती हू। अगर वहा न भी मिला तो भी लोगो के बीच मन जरा हल्का रहेगा।

'हा हा! भगवान तुम्हारी मदद करे! मगर आप इतनी परेशान मत होइये। वह सही-सलामत होगा। ओर्लोव की तरह उसे न तो कोई गिरफ्तार ही करेगा और न उसकी हत्या ही।'

बेला ने जैसे-तैसे हसकर जवाब देने का शक्ति बटोर कर कहा—

"हे भगवान, आपने यह भी कसी तुलना की है! लिओन तो बोल्शेविक नही है।'

सडक पर पहुचकर वह झटपट एक बग्घी मे चढ गई। कोचवान बग्घी को बहुत ही धीरे धीरे चला रहा था और लगातार बातचीत करने की कोशिश कर रहा था।

कुमारी जी सरकारा के बारे मे मै ऐसा समझता कि सभी सरकार हरामी होती है। बात यह है कि जसे कि कहा जा सकता है, सभी को

मन्त्री बनाना सम्भव नही, इसलिये हमेशा नाराजगी बनी रहेगी और इसका मतलब यह है कि सरकारी का गला काटा जायगा "

"आप चुपचाप गाडी चलाते जाइय !" बेला ने झल्लाकर कहा।

कप्तान तुमानोविच

अगली सुबह को दस सिपाही अपनी बन्दूकें ताने और सामने आ जानवाले हर रहगीर को अशिष्टता मे खदेडते हुए ढग के कपडे पहने तथा इतमीनान और शान से चलते एक व्यक्ति को लिये जा रहे थे। लोग हैरानी से उसे देख रहे थे।

सफेद सेनावाले आम तौर पर जिन लोगा को गिरफ्तार करते थे, वे ऐसे नही होते थे। लोग इस चीज के बेहद आदी हो गये थे कि बोल्शेविको के वक्त मे प्रतिष्ठित लोगो को चेका ले जाया जाता था और स्वयसेवको के समय मे गन्दे मन्दे और कालिख पुते मजदूरा, घुघराले बालावाले लडको तथा कटे बालोवाली लडकिया को बदी बनाया जाता था।

चुनाचे तमाशबीन राहगीर फौजियो से इस रहस्यपूर्ण अपराधी के बारे मे जानने की कोशिश करते थे। मगर फौजी या तो चुपचाप उनकी ओर सगीने बढा देते या गालियो की बौछार कर डालते।

गारद एक कूचे की तरफ मुड गई। अच्छी नीद के बाद ताजादम हुए ओर्लोव ने बहुत ध्यान से मकान को देखा। उस प्रवेश-कक्ष मे ले जाया गया, सीढिया चढने के लिये कहा गया और दीवार की फटी कागजी छीटवाले छोटे से कमरे मे पहुचने पर रसीद के बदले मे काली आखावाले एक खूबसूरत सब लेफ्टीनेन्ट के हवाले कर दिया गया।

ओर्लोव को एक बेच पर बिठा दिया गया और दो सतरी उसके अगल-बगल खडे हो गये।

सब लेफ्टीनेन्ट ने, जो स्पष्टत नया ही व्यक्ति था, बेचैनी और अफसोस के साथ उसकी तरफ देखा।

'आप कैसे इस मुसीबत मे फस गये ? हाय हाय !" उसने लगभग दुखी होते हुए कहा।

ओर्लोव ने उस पर नजर डाली और लडका जैसी उसकी सहानुभति ने उसका मम छू लिया।

"कोई बात नही! ऐसा भी होता है! मै बहुत दिन यहा नहीं रहूगा।'

सब लेफ्टीनेन्ट हैरान हुआ।

"तो आप क्या भागने का इरादा रखते है? मगर हमारे यहा से भाग नही पायेंगे। हमारे यहा मामला बडा मजबूत है!" उसने लडको जसे गव के साथ ही कहा। "गिरफ्तार ही नही होना चाहिये था! अभी जाकर कप्तान तुमानोविच को आपके बारे मे सूचना देता हू।"

ओर्लोव ने इधर उधर नजर दौडाई। कमरे मे एक मेज, टूटी हुई दो अलमारिया, कुछ कुर्सिया और वह बेंच थी, जिस पर वह खुद बठा था। खिडकी इटो की अग्निसह दीवार की ओर खुलती थी। उसने उठकर दीवार पर नजर डालनी चाही, मगर सन्तरी ने कधा दबाकर उसे वही बिठा दिया।

'खबरदार! ए हरामी, चैन से बैठा रह!"

ओर्लोव ने होठ काटा और बैठ गया। सब-लेफ्टीनेन्ट कुछ मिनट बाद लौटा।

"कप्तान तुमानोविच के कमरे मे ले जाइये।"

फौजी ओर्लोव को एक लम्बे और धूलि धूसरित बरामदे मे से लि चले। ओर्लोव बहुत ध्यान से दरवाजो और मोडो को गिनता गया। आखिर सन्तरिया ने एक दरवाजा खोला, जिस पर लाल स्याही से टेढे और जल्दी मे लिखे गये शब्दो की यह पट्टिका लगी हुई थी–

"विशेष मामलों के जाचकर्त्ता
कप्तान तुमानोविच"

कप्तान तुमानोविच धीरे धीरे और नपे-तुले कदम रखता हुआ कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक आ जा रहा था। लोगो के अदर आन पर वह रुक गया।

वह मेज की तरफ गया, बैठ गया, एक कागज उसने अपने सामने रख लिया और तब सन्तरियो से बोला–

'बाहर जाकर दरवाजे पर खडे हो जाइये!' इसके बाद ओर्लोव को सम्बोधित करते हुए कहा–"आप गुबेरनिया चेका के भूतपूर्व अध्यक्ष ओर्लोव है?

ग्रोर्लोव ने चुपचाप एक कुर्सी खीची ग्रौर उस पर बठ गया। कप्तान की भौंह फडफडायी।

"लगता है कि मने तो ग्रापको बैठने के लिये नही कहा?"

"मेरी जूती परवाह करती है ग्रापके कहने की!" ग्रोर्लोव न तुनककर जवाब दिया। "म थक गया हू!"

उसने कोहनिया मेज़ पर टिका ली ग्रौर टकटकी बाधकर कप्तान को देखने लगा।

दुबला-पतला ग्रौर लम्बोतरा चेहरा, माथा ऊचा, पीला ग्रौर पारदर्शी, ग्राखें सुइयो-सी पैनी, बर्फ-सी सद ग्रौर नीली—ऐसा था तुमानोविच। उसकी बायीं भौंह बेचैनी के कारण ग्रक्सर ग्रौर ग्रप्रिय ढग से फडफडाती थी।

"मै ग्रापसे ग्रपने ग्रादेशो का ग्रादर करवा सकता था," उसने निरपेक्ष भाव से कहा। "मगर इससे कोई फक नही पडता। कृपया उत्तर दीजिये—ग्राप ही ग्रोर्लोव है?"

"इसलिये कि बेकार का झझट न हो म ग्रापको यह बता देना जरूरी समझता हू कि म किसी भी सवाल का जवाब नही दूगा। ग्राप व्यथ ही मेहनत कर रहे है।"

तुमानोविच ने प्रश्न-पत्र पर जल्दी-जल्दी कुछ लिखा ग्रौर ग्रपनी गहरी नीली सद ग्राखो से उदासीनता के साथ ग्रोर्लोव की तरफ देखा।

"मै भी ऐसा ही समझता था! सच तो यह है कि म ग्राम ग्रथ मे ग्रापसे पूछ-ताछ भी नही करना चाहता था। ग्राप कुछ बतायेगे, यह ग्राशा करना ही काफी मूखता होती। किन्तु यह तो ग्रावश्यक ग्रौपचारिकता है। हम तो पूरी तरह कानून-कायदे के मुताबिक काम करते हैं।"

कप्तान किसी तरह की ग्रापत्ति की प्रतीक्षा म चुप हो गया। ग्रोर्लोव को कनल के शब्द याद हो ग्राये ग्रौर वह तनिक मुस्करा दिया।

कप्तान कुछ लजा गया।

"कानून, जिसका इस वक्त मै प्रतिनिधित्व कर रहा हू, ग्रापसे बस थोडी-सी मदद की ग्राशा करता है। हमने ग्रापके ग्रलावा गुबेरनिया चेका के कुछ ग्रय सहकमियो को भी गिरफ्तार कर रखा है। उनमे से कुछ उस गाडी मे गिरफ्तार किये गये थे, जो उस सुबह को, जब हमने शहर पर कब्जा किया था, यहा से रवाना हुई थी। उन सभी पर मुकदमा चलाया जायेगा। उन पर लगाये गये ग्रारोपो से सम्बन्धित सामग्री का सही

स्पष्ट समझने के लिये हम उस भ्रापको दिखाना उपयोगी समझते ह। मुझे भ्राशा है कि भ्राप हम यह बतान म इनकार नहीं करते कि उसम क्या सच भ्रौर क्या झूठ है।"

"भ्राप इसकी तकलीफ न कर, कप्तान इस सामग्री का देखने की मेरी जरा भी इच्छा नही है।"

"पर सोचिय ता, श्रीमान भ्रोर्लोव! गलतिया भी तो हो सकती ह, जाती दुश्मनी की बिना पर भी जुम लगाये जा सकत ह। वक्त बडा भ्रटपटा चल रहा है। जाच-पडताल करना तो भ्रसम्भव ही है। झूठ सच का उल्लख कर भ्राप भ्रपन उन सहकर्मियो का भला कर सकते है, जिन पर झूठे भ्राराप लगाये गय हैं।"

भ्रोर्लोव ने कधे झटक।

मुझे इस बात का बहुत भ्रफसोस है कप्तान कि म भ्रापको निराश कर रहा हू। मगर भ्राप क्या यह समझते है कि मुझे इस जाल मे फास लेगे? जाहिर है कि जिन भ्रारोपो को मै झूठा बताऊगा उन्ह ही सच माना जायेगा मेरा ख्याल था कि भ्राप कुछ भ्रधिक तकसगत ढग स सोचत हैं।

कप्तान फिर से झेंप गया भ्रौर भ्रपनी पतली पतली उगलिया म पेन को इधर उधर घुमाने लगा।

'श्रीमान भ्रोर्लोव भ्राप मुझे समझना ही नही चाहत! भ्राप भ्रपन को गुप्तचर विरोधी विभाग के शिकजे मे ही भ्रनुभव कर रहे है। मगर यह भ्रापकी भूल है! बोलने के लिये हम भ्रापको मजबूर कर सकते थे। इसके भी तरीके ह यद्यपि वे कानून की हद से बाहर ह। मगर हमारा तो पूरा युग ही कानून के चौखटे से बाहर निकला हुभ्रा है। पर मैं तो कानून का भ्रादमी हू, कानूनी ढग से ही सोचता हू, कानून की नतिक भावना से मेरा वास्ता है भ्रौर मै कनल रोज़ेनबाख के तौर-तरीका की बडी निन्दा करता हू।"

'खास तौर पर भ्रब, जबकि कनल रोजेनबाख ने ही मुझे भ्रापके हवाले किया है? इतमीनान से ऐसी बात कहने के लिये भ्रादमी को कितना भ्रधिक कमीना होना चाहिये!"

तुमानोविच ने उगलियो के बीच पेन को इतने जोर से भीचा कि वह चिटक गया।

"अच्छी बात है। मतलब यह कि आप कुछ भी नही कहेंगे। तो मैं उस सवाल की ओर आता हू, जिसमे मेरी व्यक्तिगत दिलचस्पी है। अब तक आपके समान विचारवाला मे दो तरह के लोगो से मेरा वास्ता पडा है – एक तो छोटे मोटे जुम करनेवाले वे लोग है, जिन्हें आपकी सत्ता के समथन म अपन नफे का सुविधाजनक साधन दिखाई देता है, दूसरे वे हैं, जो पहले शारीरिक श्रम करत थे और उनमे से अधिकतर अच्छे नेक लाग थे, मगर आप लोगो द्वारा दिखाये गये सब्ज बागो के नशे मे ऐसे धुत्त हो गये है कि उन्हे अपना होश-हवास ही नही रहा, उन्हे एकदम उल्लू बना दिया गया है। ये दोना ही किस्म के लोग बहुत दिलचस्प नही हैं। आपके रूप मे म पहली बार एक ऐसे व्यक्ति से मिल रहा हू, जो अपनी सत्ता का प्रमुख सिद्धान्तकार और व्यावहारिक सगठनकर्त्ता भी है। मेरी समझ मे यही बात नही आ रही कि आप सगठनकर्त्ता और नता लोग किस श्रेणी मे आते ह?"

"मुझे खुद भी यही दिलचस्पी है कि कप्तान आपके शासन की किस श्रेणी – मोटे अपराधिया या उल्लू बनाये गये लोगो की श्रेणी मे आपका शामिल किया जाये?" ओर्लोव ने गुस्से और अशिष्टता से पूछा।

"श्रीमान ओर्लोव, आप मेरा अपमान करने की कोशिश क्यो कर रहे ह? म उम्मीद करता हू कि आप गुप्तचर विरोधी विभागवालो के रवैये और यहा के बर्ताव का फक तो साफ महसूस कर रहे होगे। मैं जाचकर्त्ता के रूप मे तो अब आपसे पूछ-ताछ कर ही नही रहा हू। मैं आपको एक ऐसे व्यक्ति के रूप मे देख रहा हू, जिसका मनोविज्ञान मेरे लिये रहस्य बना हुआ है। क्या हम इस समस्या के समाधान के लिये शांति से बातचीत नही कर सकते?"

"म ता आपको कुछ अधिक समझदार समझता था, कप्तान! मैं आपके लिये खिलौना नही हू और खासकर अपनी इस वत्तमान स्थिति मे आपकी दिमागी गुत्थिया सुलझाने मे भी मदद नही कर सकता। आप तो यहा से खाना खाने के लिये घर जायेंगे और मुझे, मेरे भाषण के लिये कृतज्ञता प्रकट करते हुए गोली का निशाना बनाने को भेज देंगे। हमे कुछ बातचीत नही करनी! कृपया किस्सा खत्म कीजिये।"

'जरा ठहरिये,' तुमानोविच ने कहा। "मैं यह जानना चाहता हू – यकीन कीजिये कि मेरे लिये यह बहुत महत्त्वपूण है – कि क्या आप अपने

उद्देश्यो की व्यावहारिकता मे विश्वास करते हं या यह कोरी बेतुकी जोखिमबाजी है?"

"यह आप व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर खुद ही बहुत जल्द जान जायेंगे, श्रीमान कप्तान। यह तब होगा, जब यहीं, इसी शहर में, दो-तीन महीने बाद सडको के खडजे भी आप पर गोलिया बरसाने लगेंगे।"

इसका मतलब तो यह हुआ कि आपका सगठन अब भी यहा काम कर रहा है?" आखें सिकोडकर कप्तान ने पूछा।

ओर्लोव हस दिया।

'तो आप मेरे ही शब्दा के जाल मे मुझे फासना चाहते हैं? हा, कप्तान, वह काम कर रहा है और करता रहेगा। जानना चाहते है कि किस जगह? सभी जगह! घरो मे, सडका पर, हवा मे, इन दीवारा मे, आपके इस मेजपोश मे। मेजपोश को सहमी-सहमी नजरो से नही देखिये! हमारा सगठन अदृश्य है! ये पत्थर, चूना, यह मेजपोश उन लोगो के खून पसीने से तर हं, जिन्होंने इन्हे बनाया और ये चीजे उन लोगा से बेहद नफरत करती हं, हा, ये बेजान चीजे उनसे बेहद और भयानक नफरत करती है, जिनकी इन्हे सेवा करनी पडती है। ये आपको तहस नहस कर डालेगी और अपने सच्चे स्वामियो-स्रष्टाओ के पास लौट जायेंगी! वह आपकी जिन्दगी की आखिरी घडी होगी!

तुमानोविच ने दिलचस्पी से ओर्लोव की तरफ देखा।

'बहुत खूब बोलते हं आप, श्रीमान ओर्लोव! आप सम्भवत जनसाधारण को अपने साथ वहा ले जाना जानते हं। आपका भाषण बहुत बढिया और कलापूर्ण है। नही नही, म मजाक नही कर रहा हू! आप बहुत ही दृढ व्यक्ति हं। म अनुभव करता हू कि आपके अन्दर सच्ची आग दहकती है, आपमे बहुत बडी शक्ति है। मेरी आस्थाओ की दृष्टि से तो आपको मृत्यु दण्ड मिलना चाहिये। अगर म आपके हाथा मे होता तो मेरे ख्याल मे आप भी मुझसे यही कहते। खून का बदला खून! आपके बडे व्यक्तित्व का आदर करते हुए मै इस बात की पूरी कोशिश करूगा कि आपकी मौत आसान रहे और आपको वे सभी यातनायें न सहनी पड़ें, जो, दुर्भाग्यवश, सूचना देने से इनकार करनेवाले लोगा को हमारे यहा बर्दाश्त करनी पडती हैं। आपके शब्दो को ध्यान मे रखते हुए तो मै फौरन आपको कर्नल रोजेनबाख के यातनालय मे भेज सकता था। मगर आप ओर्लोव हं

ग्रोर ग्रापके वारे मे हमारे जासूसा की रिपोर्ट का यह एक ग्रश मेरे सामने है–'ग्रोर्लोव दमीत्री। १६०६ से पार्टी सदस्य। जनूनी। बहुत ही निडर, बडा ही दिलेर। बहुत ही खतरनाक प्रचारक। ग्रत्यधिक ईमानदार।' कितना पूर्ण विवरण है!"

कप्तान ने सन्तरियो को ग्रावाज दी।

"नमस्कार, श्रीमान ग्रोर्लोव!"

"नमस्कार, कप्तान! उम्मीद है कि ग्रब हमारी बहुत मुलाकात नही होगी।"

दो पृष्ठ

पक्की पेंसिल। नोटबुक से फाडे हुए पष्ठ–

"कितने चूहे हैं यहा! पूछ ग्रौर तन पर बाल गायब, बहुत ही घमडी।

"कभी-कभी दसेक इकट्ठे होकर घेरा बना लेते है, शान से पिछली टागो पर खडे हो जाते है ग्रौर चू चू करते हैं

'तब (कुछ ग्रस्पष्ट शब्द) ग्रौर ऐसा लगता है कि चूहो की राजकीय परिषद के एक विभाग के बडे ग्रधिकारियो की काम-काजी सभा हो रही है।

दियासलाइयो की रोशनी म लिख रहा हू किसी तरह की रोशनी का नाम निशान नही

" सम्भवत ये कागज किसी ग्रौर ही काम ग्रायेगे ग्रौर यहा से बाहर नही जा सकेगे

"फिर भी

"कोन्स्तान्तीन ग्राज की बातचीत तुम्हें याद है (ग्रस्पष्ट)

' मुझे यकीन हो गया कि मेरी ताकत भी जवाब दे जाती है। किसलिये हैं ये कम्बख्त स्नायु? मुझे गिरफ्तार करनेवाले लेफ्टीनेन्ट मोवोलेव्स्की का कहना है कि डाक्टर दिमाग के उस भाग को काट देगे, जहा क्राति ग्रौर विरोध भावना जन्म लेती है।'

"स्नायुग्रो को काटना चाहिये, जो (ग्रस्पष्ट), थकान ग्रौर सकल्प की दुर्बलता है। मन कहा था कि गलत गिरफ्तारी से लगनेवाले बाहरी धक्के के कारण मेरी इच्छाशक्ति मेरे बस मे नही रही थी।

"चेहरे को सदा सयत रखना सम्भव है, मगर शरीर भडाफोड कर सकता है

"मैं जानता हू कि तुम यही सोचते होगे कि मने अपनी कसम तोड दी और खुद ही अपने को दुश्मन के हवाले कर दिया

"यह बकवास है नही, हरगिज नही। यह बेवकूफीभरी सनक थी, जिसे मैं फौरन भूल गया। सयोग से ही गिरफ्तार हो गया निरी मूखता के कारण

" (अस्पष्ट) आइसक्रीम खाना, एक अफसर को यह बताते सुना कि मेरे प्रतिरूप को कैसे गिरफ्तार किया गया सब कुछ जानना जरूरी था शायद भगाना सम्भव होता, यह मालूम करना चाहता था कि वह बेचारा कहा है

" (अस्पष्ट) उन्हे मालूम नही था। 'यह तुम्हारी मदद करगा '

जानते हो, मने किसे पहचाना? सेवास्तोपोल की याद है, जब पीछे हट रहे थे उस अफसर का स्मरण है, जिसने तुम्हारी और मेरी आखो के सामने सडक पर ही ओलेग को गोलियो से भून डाला था? तब उसका नाम कोर्नेव था उनके गुप्तचर विरोधी विभाग मे नकली नाम भी है।

' अपने को वश मे न रख सका उसके सामने बैठा हुआ सोच रहा था – मिल गये हो और अब जाने नही दूगा ' उसकी तरफ ऐसे खिचा, जैसे परवाना शमा की तरफ। अगर सामान्य मानसिक स्थिति होती तो मैं उसे छोडकर चल देता मगर इस वक्त ऐसा न कर सका – चेतना को इस विचार ने दबोच लिया कि वह मेरे पजे मे है। नशे मे धुत्त होकर जब उसने मुझसे चलने को कहा तो चला गया अब याद आ रहा है कि मेरी घबराहट देखकर उसने मेज से बोतले गिरा दी थी। उस वक्त इस बात का ख्याल नही आया चेतना और इच्छाशक्ति कमजोर हो गई थी

" सोचा कि वह सचमुच नशे मे चूर है उससे सब कुछ उगलवा लूगा यह तक सोचा कि उसकी मौत कसे होगी।

" (अस्पष्ट) कि कमीने गुप्तचर की निकम्मी जान रही या गई, इससे क्या फक पडता है यह सब स्नायुओ की मेहरबानी है चूजे की तरह उन्होने मुझे झपट लिया।

"   सस्ती मौत नही मरूगा   अभी उम्मीद बाकी है। इससे भी बुरी परिस्थितिया म निकल भागे हैं। लगभग विश्वास है कि जल्दी ही मिलगे और लिख इसलिये रहा हू कि   शायद ऐसा न हो सके।

हा, कुलनाम याद कर लो – सोबालेव्स्की   ठीक वक्त आने पर ध्यान रखना कि निकल न भागे   पटरी पर ओलेग के सिर, खून, भूरे और गुलाबी छीटा को तो याद है न तुम्ह?   है न!

"बढिया अभिनता है   मुझसे बाजी मार ले गया   हा – स्नायु, मगर यह तो कोई सफाई नही है।"

'   (अस्पष्ट) रही व   अच्छी लडकी है, मगर बहुत भावुक। सच्ची पार्टी कार्यकर्त्री नही बन सकेगी   अगर फस गयी हो तो पूरा जोर लगाना   (अस्पष्ट) बचाना

"   (अस्पष्ट) कल   (अस्पष्ट)   ध्यान रखना कि हमारा अधिकार होने पर जेलखाना साफ किया जाये   यहा तो बडी हिमाकत है   (मुश्किल से पढा जा सके)।

'दियासलाइया खत्म हो गयी   घुप अधेरा है, तुम तो कुछ भी पढ ही नही पाओगे   "

प्यारे से घृणा

नुक्कड पर वेला झटपट बग्घी से उतरी और नगर के छोरवाली सुनसान गली की ओर भाग चली।

तेज हवा उसकी टोपी उडाती थी ओवरकोट के नीचे बर्फीली झुरझुरी-सी पैदा करती थी।

एक राहगीर ने झुककर टोपी के नीचे चेहरे की झलक ली।

उसने सुनाकर कहा –

"बडी प्यारी चीज है," और वेला के पीछे पीछे हो लिया।

वेला रुकी। राहगीर ने पास आकर उसकी आखो की तरफ देखा। उनमे पीडा थी, घणा थी।

"म माग करती हू कि आप मुझे परेशान न करे!   "

राहगीर भौचक्का सा रह गया।

"क्षमा कीजिये श्रीमती! मुझे मालूम नही था!   "

उसने टाप ऊपर उठाकर शिष्टता प्रकट की और चला गया। कापती हुई वेला न फाटक लाघा और भागते हुए बगीचा पार कर गई।

पूर्वनिश्चित ढग से दस्तक देने पर सेमेनूखिन ने मोमबत्ती लिये हुए दरवाजा खोला। उसका दूसरा हाथ पीठ के पीछे था। स्पष्ट था कि उसमे पिस्तौल थी। उसकी आखें फैल-सी गइ और उनमे मोमबत्ती की फडफडाती हुई लौ झलक उठी।

"वेला ? आ आप कैसे आइ ? क क-क्या कोई बा बात हो गई ?"

"ओर्लोव ! "

"शी ! क क कमरे में चलिये। जल्दी से ! हा, तो, क-क्या हुआ ?"

"ओर्लोव गिरफ्तार हो गया !"

सेमेनूखिन ने कसकर उसके हाथ पकड लिये। वेला चिल्ला उठी—

"ऊई ! मुझे दद होता है !"

वह सम्भला और उसने हाथ छोड दिये।

घुटी और झल्लाई हुई आवाज मे उसने पूछा—

"क क कहा ? क कैसे ? "

"मुझे कुछ मालूम नही यहा कोई गलतफहमी हो गई है यह अखबार रहा इसमे लिखा है कि कल गिरफ्तार किया गया, मगर आज सुबह वह घर पर था मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा पर वह कह गया था कि शाम के सात बजे तक घर आ जायेगा। दस बजे तक नहा आया। मै और बदाश्त नही कर सकी ! आपके पास आ गई !'

सेमेनूखिन ने अखबार लेकर फेंक दिया। कुछ क्षण चुप रहा।

"मै य-य यह प-पढ चुका हू ! मगर आ आज इसके ब-बाद वह य यहा मेरे पास आया था। क्या सचमुच उसने ? "

इसी क्षण उसका ध्यान बेला की तरफ गया, जिसने वेदम होते हुए दीवार का सहारा ले लिया था उसने लपककर उसे सम्भाला और कुर्सी पर बैठा दिया।

उसने शान्त भाव से गिलास मे पानी डाला, घूट भरा और वेला के चेहरे पर फक दिया। धीरे धीरे बेला के गालो का रग लौट आया।

"हो-होश मे आ आइये ! ऐ ऐसे थाडे ही का-काम चल चलता है। रा रात यही बिताइयेगा ! आपका अ-अ अपने फ्लैट पर लौटना ठि बिल्कुल ठ-ठीक नही होगा। मै अ अभी जाता हू। फौ-फौरन सब कुछ

मा मालूम करना चाहिये। अगर उ उसने! सेमेनूखिन ने मुट्ठिया भीची और जहा का तहा खडा रह गया।

कुछ क्षण बाद उसने ओवरकोट पहना और चला गया।

सुबह को सेमेनूखिन ने अजीब और डडे की तरह कठोर आवाज से बेला को जगाया—

"उ-उठो! मैंने मा मालूम कर लिया! क-कल शाम को गि गिरफ्तार किया गया। मने ऐ-ऐसा ही सो-सोचा था। य-यह समझ लीजिये," वह रुका और उसने बेला की आखो की गहराई मे झाका, "कि ओर्लोव आ-आपके लिये, मे मेरे लिये और पा पार्टी के लिये मर गया। उसने ग गद्दारी की है।"

बेला ने माना कुछ न समझते हुए बहकी-बहकी आखो से उसकी तरफ देखा।

"हा, ग गद्दारी की है! " वह कल मे मेरे पास आया था और उसने क-कहा था कि वह उस गिरफ्तार किये गये दे देहकान को ब-बचाने के लिये अ अपने को दुश्मनो के ह हवाले क-कर देगा। मैंने पा पार्टी और क्रान्तिकारी समिति के ना-नाम पर उसे ऐसा कर-करने से मना किया था। उसने कसम खाई थी मगर उ उसे तोड दिया वह ग गद्दार है और हमारा अब उससे कोई वास्ता नही! "

बेला उठकर खडी हुई।

"ओर्लोव ने अपने को दुश्मन के हवाले कर दिया? खु द ही? मैं यह विश्वास नही कर सकती! ऐसा हो ही नही सकता!"

"मैं यू झूठ क्यो बो-बोलूगा? मे-मेरे दिल पर तो आ आप से भी भारी गु गुजर रही है।"

बेला भडक उठी।

"सेमेनूखिन, आप एकदम पत्थर है, मशीन है! मैं यह सब बर्दाश्त नही कर सकती! समझने की कोशिश कीजिये। म उसे प्यार करती हू! मैं तो उसी के लिये यह काम करने को राजी हो गई असफलता की सम्भावना को जानते हुए निश्चित मौत के लिये।"

"य-यह तो और भी बु-बुरी बात है," सेमेनूखिन ने शान्ति से उत्तर दिया। "बहुत अफसोस है कि आ आपने अपने लिये ऐसा व्यक्ति चुना। म

अ अभी ओर्लोव या फैसला करने के लिये क्रांतिकारी समिति की विशेष बैठक बु-बुलाता हू। पा पार्टी का ऐसे क-क कमजोर दिल लोगो, ऐस माना लोवो* की जरूरत नही है। समझी!"

वेला ने रुंधे कण्ठ से पूछा—

'क्या यह सच है? आप मजाक तो नहीं कर रहे हैं सेमेनूखिन?"

"मेरे ख ख्याल मे तो यह म म मजाक का वक्त नही है!"

वेला खिडकी के पास चली गई। उसकी कापती हुई पीठ से सेमेनूखिन समझ गया कि वह रो रही है।

मगर वह पाषाणी चुप्पी साधे रहा।

आखिर वेला मुडा। आखो से अश्रु धारा बह रही थी।

तो?" सेमेनूखिन ने पूछा।

और वेला की कठोर, तनावपूर्ण तथा दृढ आवाज सुनकर वह खुद भी काप उठा।

"अगर यह सच है तो तो मै उस तिलाजली देती हू! अपने प्यार से घृणा करती हू!"

भगवान दया करो

कप्तान तुमानोविच शाम को आयोग के अपने दफ्तर म आया और पेन हाथ मे लेकर उसने "दक्षिणी रूस के मुख्य सेनापति के अधीन बोलशेविको के अत्याचारो की जाच के विशेष आयोग" की फाइल खोली।

विश्वासपूर्ण बडे-बडे, साफ अक्षरो मे कुछ पक्तिया लिखने के बाद उसने पेन नीचे रख दिया, वह खोया-खोया सा खिडकी क नीले धुधलके को देखता रहा था, फिर कुर्सी को अधिक आरामदेह ढग से टिकाते हुए निष्कप लिखने लगा।

कप्तान की तीखी नाक कागज के ऊपर झुकी हुई थी और वह चीटियो के ढेर मे घुसनेवाले मक्कार चीटीभक्षक जैसा प्रतीत हो रहा था।

---

*मानीलोव—गोगोल की रचना "मृत आत्मायें" का एक भावुक पात्र।—अनु०

क्प्तान जब वडे ध्यान से अ्रतिम पक्तिया लिख रहा था, तो दरवाजे पर हल्की-सी दस्तक हुई। क्प्तान को वह सुनाई नही दी। दस्तक फिर से हुई।

तुमानोविच ने मन मारकर लिखना वद किया और घडी भर को उसकी नीली बर्फीली आखें वुझी-बुझी और अवोध-सी दिखाई दी।

सब-लेफ्टीनेन्ट ने अ्रदर आकर सलामी दी और खलनायक के रहस्यपूण ढग से कहा—

"क्प्तान साहब, आपके हुक्म के मुताविक वदी ओर्लोव आ गया है।"

"उसे यहा ले आइये हा, कृपया, खुद ही उसे ले आइये। क्ल फौजी सारे कमरे मे तम्बाकू की वदवू फैला गये। मै इसे विल्कुल वर्दाश्त नही कर सकता। कृपया बुरा नही मानियेगा।"

ओर्लोव प्रवेश-कक्ष मे वेंच पर बैठा था। फौजी उसे ले जाने को तैयार हुए, मगर सब-लेफ्टीनेन्ट ने एक फौजी की वदूक लेत हुए कहा—

"मै खुद ले जाऊगा। चलिये श्रीमान ओर्लोव!"

वे वरामदे मे आये।

'देख रहे है न, आपको कैसी फौजी सलामी दी जा रही है," सब लेफ्टीनेन्ट ने झेंपते हुए कहा। "क्प्तान का हुक्म है।" और मजाकिया ढग से इतना और जोड दिया—"कहिये, क्या अभी तक भागने का इरादा नही वनाया?'

"कोशिश करूगा कि आपको जल्द ही यह खुशी नसीब हो।"

"आह, मै तो बहुत उत्सुक हू यह देखने को! सच कहू, यह मेरी और आपकी वात है, कसम भगवान की मै तो यह चाहता भी हू कि आपको इसमे कामयाबी मिल जाये। ऐसी चीजें मुझे वहुत पसद है!"

ओर्लोव हस दिया।

"अच्छी वात है! म आपको निराश नही करूगा। आपके दिल की वात हो जायेगी!'

कमरे मे पहुचने पर तुमानोविच ने ओर्लोव की ओर कागज और पेन वढाते हुए कहा—

"मने आपको वस, घडी भर के लिये बुलाया है। यहा हस्ताक्षर कर दीजिय कि आपने यह निष्कप पढ लिया है।"

"कसा निष्कप?"

"जाच का निष्कप।"

"सिर्फ इतना ही? और अगर मैं ऐसा न करना चाहूं तो?"

तुमानोविच ने कंधे झटके।

"जैसी आपकी मर्जी! यह तो केवल औपचारिकता है!"

ओर्लोव ने निष्कर्ष के नीचे चुपचाप हस्ताक्षर कर दिये।

'बस?"

"बस! सब लेफ्टीनेन्ट! कैदी को ले जाइये!"

सब-लेफ्टीनेन्ट द्वारा बरामदे में कहे गये वाक्य से ओर्लोव के दिल में हलचल मची हुई थी।

कप्तान के कमरे से बाहर आते हुए उसने अपने को शान्त किया, सख्त इस्पाती स्प्रिंग की तरह अपनी इच्छा शक्ति को दृढ बनाया।

लम्बे बरामदे मे सब-लेफ्टीनेन्ट तथा कप्तान के कमरो के बीच तीन मोड पडते थे। बीचवाले मोड के ऊपर मक्खियो के बैठने से गन्दा हुआ बल्ब मन्द-मन्द रोशनी दे रहा था।

ओर्लोव सब-लेफ्टीनेन्ट के आगे धीरे धीरे चल रहा था। वह लैम्प के नीचे पहुचा।

वह पलक झपकते मे घूमा बन्दूक अफसर के हाथ से निकली, उसकी तरफ घूम गई और उसके गले को छूने लगी। सब लेफ्टीनेन्ट हल्की सी चीख के साथ दीवार से सटने को विवश हो गया।

"खामोश! खबरदार जो चू तक भी की! मुझे दरवाजे पर ले चलो वरना तुम्हारी जान गई।"

"सडक पर पहरेदार है," सब लेफ्टीनेन्ट फुसफुसाया।

"तो पिछवाडे के अहाते में ले चलो! देखना चाहते थे न कि मैं कैसे चम्पत होता हू— लो, देख लो!"

सब-लेफ्टीनेन्ट दीवार से हटा। उसके होठ काप रहे थे, मगर मुस्कराते हुए। वह बरामदे मे पजो के बल चलता हुआ पीठ पर, कंधे के नीचे सगीन की तेज नोक की चुभन अनुभव कर रहा था।

एक मोड, दूसरा मोड गुजरा। लगभग घुप अंधेरा, सफेद दरवाजे की धुधली सी झलक मिली।

ओर्लोव ने गहरी सास ली।

"यह रहा," दरवाजे का दस्ता हाथ मे लेते हुए सब-लेफ्टीनेन्ट ने कहा।

दरवाजा झटपट चौपट खुल गया और तेज रोशनी चमक उठी। ग्रोर्लोव को क्षणभर के लिये पाखाना, सीट और हाथ मह धोने की चिलमची दिखाई दी।

इससे पहले कि वह स्थिति को समझ पाता, सब लेफ्टीनेट ने फटाक से दरवाजा बद कर दिया और झटपट सिटकिनी लगा दी।

ग्रोर्लोव को चकमा दे दिया गया था और अब बरामदे के अधेरे मे वह अकेला खडा था, नही जानता था कि किधर जाये।

पाखान मे एकदम सन्नाटा था।

ग्रोर्लोव ने धीरे-से गालिया बकी और बदूक का कसकर थामे हुए पीछे हटा, दीवार के साथ सट गया। कही जोर से दरवाजा बद हुआ और वह जहा का तहा ही ठिठक गया।

इसी क्षण उसकी पीठ के पीछे भयानक धमाका हुआ और घूमने पर उसे पाखाने के दरवाजे मे छोटा-सा चमकता हुआ सूराख दिखाई दिया।

दूसरी बार ऐसा ही धमाका हुआ।

इसी क्षण बरामदे मे दरवाजा के फटाके सुनाई दिये और भागते हुए लोगा के पैरा की धप धप गूज उठी।

तब ग्रोर्लोव बदूक तानकर गुस्से से चिल्लाया—

"भो, हरामी पिल्ले! तो ले, पाखाने मे ही कुत्ते की मौत मर!"

और उसने शान्त भाव से निशाना साधकर चारो गोलिया पाखाने के दरवाजे पर दाग दी। बद बरामदे म गोलियो के भयानक धमाको से वह खुद भी काप उठता था।

कोई पीछे से उस पर झपटा और उसके हाथ पकड लिये। ग्रोर्लोव उसकी गिरफ्त से निकल गया, मगर इसी वक्त किसी ने सिर पर भारी चीज से चोट की। ग्रोर्लोव गदे फश पर गिर पडा, उसका जबडा घायल हो गया।

गुद्दी और फिर पेट पर भारी बूट की जोरदार ठोकर लगी।

किसी ने चिल्लाकर कहा—

"रस्सी रस्सी लाओ!"

तीन आदमियो ने उसे पकड लिया और मजबूत रस्सी से उसके हाथो-पैरा को कसकर बाधा जाने लगा।

उसे उठाकर दीवार के सहारे बिठा दिया गया।

"तेरेश्चेको कहा है ?" लम्बे कद के अफसर ने पूछा।

"खुदा जाने ! यहा अधेरे म कुछ भी तो नजर नही आता ! शायद उसका तो इसने काम तमाम कर दिया होगा ! किसी के पास दियासलाई है ?"

"यह लो लाइटर।'

"नही है ! यहा तो वह कही नही है ! "

'अरे, वह तो पाखाने मे है ! देखो तो, दरवाजे पर गोलियो के निशान नजर आ रहे है ! "

"ओह, कम्बख्त ! मार डाला छोकरे को !"

लम्बे कदवाला ओर्लोव के ऊपर मे कूदा और उसने पाखाने के दरवाजे को धक्का दिया।

दरवाजा चिटका और गिरनेवाला हो गया।

"जोर से धक्का दो !"

लम्बे अफसर ने और जोर से धक्का दिया, सिटकिनी टूट गई और दरवाजा फटाक से टूटकर दीवार से जा टकराया।

काली आखोवाला सब लेफ्टीनेन्ट टागो को समेटे हुए छत के पास टकी पर बैठा था। उसके एक हाथ मे पिस्तौल थी और दूसरे हाथ से वह पानी के नल को कसकर पकडे था। उसके चेहरे पर हवाइया उड रही थी, जबडा काप रहा था और आखें बहकी बहकी तथा उन्मादी-सी थी।

उसके होठ लगातार तथा जल्दी-जल्दी हिल रहे थे और बरामदे म शान्त हो गये लोगो को उसकी बडबडाहट साफ सुनाई दे रही थी।

"भगवान दया करो भगवान दया करो भगवान दया करो भगवान दया करो !"

"लडके का दिमाग चल निकला है !" एक अफसर ने कहा। "तेरेश्चेको ! उतर नीचे, तेरा सत्यानास हो !"

मगर सब-लेफ्टीनेन्ट ने उसी तरह से अपनी फुसफुसाहट जारी रखी। इसी क्षण अफसरो को भौंकने की आवाज सुनाई दी और उन्होने घबराकर पीछे की तरफ देखा।

ओर्लोव बरामदे म दीवार के साथ सटा हुआ निश्चल बैठा था और लगातार भूक-सी प्रतीत होनेवाले जोरो के ठहाके लगा रहा था।

"बहुत खूब ! अब वह चालू हो गया है ! "

"क्या मामला है ? क्या कर रहे है यहा आप लोग ? सब-लेफ्टीनेन्ट

को उसके किले से नीचे उतार लीजिये! शाबाश! टकी पर चढ जाने की इसे अच्छी सूझी! श्रीमान ओर्लोव को मेरे पास लाइये!"

कप्तान तुमानोविच अपने कमरे मे चला गया। दो अफसरो ने ओर्लोव को उठाया और कप्तान के कमरे मे खीच ले गये।

"कुर्सी पर बिठा दीजिये! ऐसे! आप जा सकते ह! पानी पी लीजिये, श्रीमान ओर्लोव!"

कप्तान ने गिलास मे पानी डालकर ओर्लोव के होठो से लगाया। ठहाको के कारण अभी तक कापते हुए ओर्लोव ने गटागट पानी पिया।

"खैर आप है तो बहुत ही दिलेर और पक्के इरादे के आदमी! खुशकिस्मती से वह प्यारा लडका काफी हाजिर दिमाग निकला, बरना आप तो कर्नल रोजेनबाख के लिये नयी सिरदर्दी पैदा कर देते। सम्भवत तब तो आपसे मेरी मुलाकात न हो पाती। बढिया तरकीब सोची आपने श्रीमान ओर्लोव!"

"जहन्नुम मे जाइये,' ओर्लोव ने झल्लाकर कहा।

"नही! म बिल्कुल गम्भीरता से यह कह रहा हू और इसके अलावा "

इसी क्षण मेज पर रखे टेलीफोन की घटी बज उठी। कप्तान ने रिसीवर उठाया।

"अफसोस है कि ऐसा मुमकिन नही"

"हैलो।

रिसीवर मे खडखडाहट हुई और तुमानोविच ने कोर कमाडर के ए० डी० सी० सब-लेफ्टीनन्ट ख्रुश्चाव की मधुर आवाज पहचान ली।

"अरे कुत्ते की आत्मा, यह तुम हो?"

"हा, मै हू इस वक्त किसलिये टेलीफोन कर रहे हो?"

"जरा रुको, अभी सब कुछ सिलसिलेवार बताता हू। माई मायेव्स्की को दौरा पडा हुआ है। अखाडे म छोडे हुए हिंसक और सीगो से जमीन खोदनेवाले स्पेनी साड की तरह बौखलाया हुआ है। कोई भी तो उसके पास नही जा सकता, अर्दली तो आडी तक ले जाते हुए डरते हैं। कहते ह 'मार डालेगा'।"

"मगर क्या?"

"मेरे दोस्त, एकसाथ ही दो मुसीबते आ गइ। पहली तो यह कि लोल्वा, जानते हो न कि जिस पर वह जी-जान से मरता है, उसके सभी हीरे मोती और नक्दी लेकर नौ-दो ग्यारह हो गयी। अनुमान है कि स्यातकोव्स्की के साथ वह आग-बबूला हो उठा। दूसरे, वायरलेस से खबर मिली है कि चेर्नेत्सोव के डिवीज़न का मिखाइलोव्स्की गाव के पास सफाया कर दिया गया और खुद चेर्नेत्सोव "

"मारा गया क्या?

"नही। सूचना मिली है कि गिरफ्तार कर लिया गया है। बोलशेविक तबादला करना चाहते है। हेड-क्वाटर ने माई-मायेव्स्की को सुझाव दिया है कि तुम्हारे कबूतर के साथ चेर्नेत्सोव को बदल ले। माई-मायेव्स्की राज़ी हो गया। तो तुम्हे यह अधिकृत सन्देश दिया जा रहा है।"

कप्तान ने ओर्लोव पर नज़र डाली। बन्दी अपनी आखें कुछ-कुछ बन्द किये थका हारा और उदास बैठा था।

तुमानोविच ने कधे झटके और साफ-साफ तथा हर शब्द पर जोर देते हुए कहा –

हुज़ूर से कह दो कि कुछ नयी परिस्थितियो के कारण इस सुझाव पर अमल नही किया जा सकता। बात यह है कि," कप्तान ने फिर से ओर्लोव पर नज़र डाली, "बन्दी ओर्लोव ने निकल भागने और सब लेफ्टीनेन्ट तेरेश्चेन्को की हत्या करने की कोशिश की है।'

ओर्लोव चौंका।

"अरे,' रिसीवर मे सुनाई दिया, 'यह भी खूब रही! चेर्नेत्सोव का क्या किया जाये?"

'किसी और से बदल लेगे। और अगर 'कामरेड' लोगो ने चेर्नेत्सोव का काम तमाम भी कर दिया, तो भी कोई बडी हानि नही होगी। कई हज़ार वर्दियां चोरी होने से बच जाया करेगी।"

'सम्भवत तुम ठीक ही कहते हो अभी माई मायेव्स्की से बात करता हू," सब-लेफ्टीनेन्ट ने कहा। 'तुम मेरे टेलीफोन का इन्तज़ार करना।"

कप्तान ने रिसीवर रख दिया।

"अपने सहयोगियो के मामले मे आप है तो बडे निदयी," ओर्लोव ने कहा।

कप्तान की नीली, सद आखो ने ओर्लोव को ठण्डे गुस्से से देखा। 'अपराधी वही भी और कोई भी क्यो न हो, मेरे पास उसके लिये

दया नही है। यह तो आपके यहा ही होता है कि जो ज्यादा चोरी करता है, वही ज्यादा ऊपर चढता है।"

"आपको गलत सूचना दी गई है, कप्तान," ग्रार्लोव ने व्यग्यपूर्वक हसकर कहा।

"हो सकता है। मगर आपने तो खुद ही अपने पैरो पर कुल्हाडी मार ली "

"वह कैसे?"

"अगर दौडने की कोशिश न करते तो तबादले मे बच निकलते। अब तो म पूरी तरह इस बात के लिये जोर लगाऊगा कि आपका जल्दी से जल्दी सफाया कर दिया जाये।"

"आपका बहुत आभारी हू!"

टेलीफोन फिर से घनघनाया—

"हा सुन रहा हू! तो! मुझे ऐसी ही उम्मीद थी! अभी कर दिया जायेगा! हा हा! नमस्ते! नही, मै थियेटर नही जाऊगा—इसकी सुध ही किसे है!"

कप्तान ने ओर्लोव को सम्बोधित करते हुए कहा—

"जनरल ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि आपको फौजी अदालत के सामने पेश किया जाये। अभी आपको आपकी कोठरी मे पहुचा दिया जायेगा। मेरा काम समाप्त हो गया! अलविदा, श्रीमान ओर्लोव!"

मामूली बात

फौजी अदालत की कारवाई कोई आध घण्टा चली।

अध्यक्षता करनेवाले कर्नल ने कुछ मिनट तक अदालत के अन्य सदस्यो के साथ खुसुर-फुसुर की, खासा और बेमन से यह पढ सुनाया—

"सेनापति की आज्ञानुसार 'न' कोर की फौजी अदालत ने बोल्शेविक पार्टी के सदस्य, गुबेरनिया चेका के भूतपूर्व अध्यक्ष, दमीत्री ओर्लोव, उम्र ३२ साल, के विरुद्ध अभियोग सुनकर निर्णय किया है कि अपराधी ओर्लोव को फासी पर चढाया जाये। २४ घण्टा के अन्दर यह मृत्यु-दण्ड दिया जाये। यह आखिरी फैसला है और इसकी कोई अपील नही हो सकती।"

ओर्लोव ने उदासीनता मे यह फैसला सुना और अन्त मे केवल इतना ही कहा—

'सुनकर खुशी हुई "

उसे जल का कोठरी मे वापिस पहुचा दिया गया। रात होने तक वह शात और भावशून्य-सा बैठा रहा।

मगर उसके दिमाग मे ताबड़तोड विचार दौड रहे थे। वह फासी के तख्त की ओर ले जाये जाने के समय भाग निकलने की सम्भावना पर गौर कर रहा था।

कज़ान मे एक बार ऐसे ही तो भाग चुका हू पर्दे से ही और अब भी भेड की तरह मर जाना हिमाकत का काम होगा "

उसने गुस्से से गालिया बकी।

वह अपनी कोठरी म इधर उधर आ-जा रहा था कि अचानक बरामदे मे कदमो की आहट और आवाजें सुनाई दी। दरवाजे ने ऊब भरी चू चर की और कोठरी मे लालटेन की सुनहरी किरण चमक उठी।

यहा रुक जाइये! मै अभी लौटता हू! " ओर्लोव को मानो परिचित-सी आवाज सुनाई दी और कोठरी म एक आदमी दाखिल हुआ। उसका चेहरा अधेरे म था और जब उसने "श्रीमान ओर्लोव!" कहा, तभी ओर्लोव ने उसे पहचाना। वह कप्तान तुमानोविच था।

ओर्लोव के दिल म गुस्से का तूफान सा उमड पडा। वह लपककर कप्तान के पास गया।

क्या लेना-देना है आपको यहा? किसलिये यहा अपना मक्कारी भरा तोबडा घुसेडे ला रहे है? जाइये भाड म! "

कप्तान ने शाति से लालटेन फर्श पर रख दी।

बस कुछ ही मिनट की बात है, श्रीमान ओर्लोव! म एक तफसील के स्पष्टीकरण के बहाने यहा आया हू। मगर बात कुछ और ही है। आपको यह सूचना दे सकता हू कि जनरल ने आपके मृत्यु दण्ड की पुष्टि कर दी है। मगर उन्होने फासी की जगह गोली से उडाने का हुक्म दिया है, क्योकि अभी हाल ही म सेनापति ने फासी का बाजार गर्म करने के लिये उनकी आलोचना की थी। पर इसमे कोई फर्क नही पडता।"

तो फिर क्या बात है? क्या आप व्यक्तिगत रूप से यह काम पूरा करने आये है?

"अब इस बदतमीजी को खत्म भी कीजिये, श्रीमान ओर्लोव! मै इस वजह से आपके पास बिल्कुल नही आया हू। मैने जो कहा था, उसे

दोहराता हू – मेरी कानूनी नजर से आपको मौत की सजा ही दी जानी चाहिये थी। मगर सरकारी माल के उस पुराने चोर येर्नेत्सोव से आपको बदल लिया जाता तो मुझे बहुत अफसोस होता। आप जैसे दुश्मन को जिन्दगी बख्श देना बहुत बडी राजनतिक भूल करना होता। अब आपकी किस्मत का पक्का फसला हो गया है। मगर याद है न कि मने आपकी अच्छी मौत का वादा किया था। मुझे यह पसन्द नही है कि आप उन बन्दूकचियो की गोलियो का निशाना बने, जिनकी डर के मारे पतलूनें गीली हो जाती है यह लीजिये। ”

कप्तान ने हाथ बढाया। छोटी-सी शीशी तनिक चमकी।

अप्रत्याशित ही भावावेश मे आये ओर्लोव ने शीशी झपट ली।

दोनो खामोश रहे। कप्तान ने सिर झुकाया।

"अलविदा, श्रीमान ओर्लोव!"

मगर ओर्लोव ने उसके बिल्कुल पास आकर शीशी उसके हाथ मे वापिस ठूस दी।

"मुझे इसकी जरूरत नही है!" उसने साफ और दृढ आवाज मे कहा।

"मगर क्यो? "

"ओह, कप्तान साहब! आपकी इस मेहरबानी के लिये मै आपका बहुत आभारी हू, पर इससे लाभ नही उठाऊगा। म बाजी हार गया, एक उल्लू की तरह आपके दरिदो के पजो मे फस गया और पार्टी ने जो काय मुझे सौपा था, उसे पूरा न कर पाया। मगर इस काम को और अधिक बिगाडने का मुझे अधिकार नही है।"

"मेरी समझ मे कुछ नही आ रहा!"

"आप यह कभी नही समझ पायेंगे! मगर वास्तव मे है यह बडी मामूली बात! मुझे जो काम सौपा गया था, उसे तो मैंने डुबो दिया। अब, और कुछ नही तो अपनी मौत द्वारा ही मुझे अपनी भूल को सुधारना चाहिये। आप मुझे चुपचाप और शान्तिपूवक मरने का सुझाव दे रहे है न? आप नही चाहते कि आपके जल्लादो को मुझे गोली मारने की आखिरी खुशी नसीब हो? मालूम नही, आप क्या ऐसा कर रहे है! "

"यह मत समझिये कि आप पर तरस खाकर मै ऐसा कर रहा हू ' कप्तान ने ओर्लोव की बात काटी।

"चाहिये, ऐसा मान लें। खुद मेरे लिये तो यह बहुत ही बढ़िया रास्ता हो सकता है। मगर हमारी अपनी एक विशेष मनोरचना है, कप्तान। इस क्षण मेरे लिये अपना व्यक्तित्व नहीं, हमारा ध्येय महत्व रखता है। मेरे गोली से उड़ा दिये जाने की खबर आपकी सड़ी-गली दुनिया पर एक और चोट होगी। उसमें मेरे साथियों के दिलों में बदले की एक और चिंगारी भड़क उठेगी। अगर मैं चुपचाप यहां दम तोड़ देता हूं तो लोगों को यह कहने का मौका मिल जायेगा कि ओर्लोव ने सौंपे गये काम की पूर्ति में असफल रहने और उसका दण्ड भुगतने की हिम्मत न होने के कारण गर्भवती हो जानेवाली स्कूली छोकरी की तरह आत्महत्या कर ली। मैं पार्टी के लिये जिया और उसी के लिये मरूंगा। देख रहे हैं न कि यह कितनी मामूली बात है!

"समझता हूं," कप्तान ने शांति से कहा।

ओर्लोव ने कोठरी का चक्कर लगाया और फिर से कप्तान के सामने आकर खड़ा हो गया।

"कप्तान साहब! आप लकीर के फकीर हैं, नियमों के चौखटे में बंद हैं, कानूनी दावपेंचों में पूरी तरह डूबे हुए हैं। आप कूपमंडूक हैं, कागजी घोड़े दौड़ाते हैं, कागज रखने की फाइल हैं! मगर आप अपने ढंग से दृढ़ व्यक्ति हैं। एक चीज है जो अंदर ही अंदर मुझे बुरी तरह खाये जा रही है... एक ऐसी बातचीत हुई थी... थोड़े में, मुझे डर है कि मेरे साथी ऐसा सोचते हैं कि मैंने जान-बूझकर खुद को आप लोगों के हवाले कर दिया... डर है कि वे तिरस्कार की दृष्टि से मुझे देखते होंगे... मुझे इस बात का डर है! आप समझे? मुझे इसका डर है!"

कप्तान चुप रहकर जूते की नोक से फर्श को कुरेदता रहा।

"मैंने बयान देने से इनकार कर दिया था... मगर... मेरे पास दो लिखे हुए पृष्ठ हैं! उनसे सब कुछ स्पष्ट हो जायगा। उन्हें मेरी फाइल में रख दीजिये। जब नगर फिर से हमारे हाथों में आयेगा... आप समझते हैं न?"

"अच्छी बात है," तुमानोविच ने कहा। "दे दीजिये! नगर के बारे में आपके विश्वास से तो मैं सहमत नहीं हूं, मगर..."

उसने कागज लेकर उन्हें ढंग से तह किया और बगलवाली जेब में रख लिया।

ओर्लोव आगे बढा।

"नही नही! मै आपको नही "

कप्तान ने मुस्कराते हुए उसे तसल्ली दी।

"कोई चिन्ता न करे, श्रीमान ओर्लोव। हमारे बीच जमीन-आसमान का फर्क है, मगर अदालती राज और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा के मामले म मेरी धारणा बिल्कुल स्पष्ट है।

ओर्लोव न तेजी से मुह दूसरी ओर कर लिया। भावावेश को दबाना-छिपाना जरूरी था।

"म आपको धन्यवाद नही दूगा! चले जाइये! इससे पहले कि मै आप पर पिल पडू, जल्दी से निकल जाइये! मै फिर कभी आपकी सूरत नही देखना चाहता।"

"एक बात कहू," तुमानोविच न धीरे से कहा। "मै अपने भाग्य से यही मागता हू कि जिस दिन मुझे अपने ध्येय के लिये जान देनी पडे, तो मुझमे भी ऐसी ही दृढता आ जाये।"

उसन फश से लालटेन उठा ली।

"अलविदा, श्रीमान ओर्लोव," तुमानोविच ऐसे रुका मानो अचानक डर गया हो। फडफडाती पीली बत्ती की रोशनी मे ओर्लोव को कप्तान की दुबली पतली हथेली अपनी ओर बढी हुई दिखाई दी।

ओर्लोव ने अपने हाथ पीठ पीछे छिपा लिये।

"नही यह मुमकिन नही।"

हथेली कापी।

"क्या?" कप्तान ने पूछा। "या फिर आपको यह डर है कि इससे आपके ध्येय को हानि पहुचेगी? मगर इसके बारे मे आपके साथियो को पता नही चलेगा।'

ओर्लोव व्यग्यपूवक मुस्कराया और उसने कप्तान की दुबली पतली, हड्डीली उगलियो को जोर स दबाया।

"मुझे किसी भी चीज का डर नही! विदा, कप्तान! आपके लिये भी अच्छी मौत की कामना करता हू।"

कप्तान बाहर चला गया।

अधकार नीरव जल प्रपात-सा कोठरी मे घुस आया। ताले मे बन्दूक के घोडे की तरह चाबी का जोरदार खटाका हुआ।

१

"मेजी डाल्टन" जहाज ने कुसतुनतुनिया पहुचकर बीचवाली लगरगाह मे लगर डाला और दायें पहलू से जग लगी तथा नीचे से ऊपर तक चू चर करती हुई सीढी उतारी ही थी कि नाव आ पहुची। तुर्की डाकिये ने, जिसकी मैली कुचैली टोपी का फुदना उसकी पसीने से तर नाक को छू रहा था, हिलती-डुलती सीढी पर चढकर तार पकडा दिया।

सीढी के सिरे पर जहाज के कप्तान जिबिंस ने खुद यह तार लिया, हस्ताक्षर किये, डाकिये की मुट्ठी गर्म की और अपने केबिन की ओर चल दिया। वहा उसने इतमीनान से अपनी पाइप मे "नेवी कट" तम्बाकू भरा, मसालेदार धुए के कई कश लगाये और तार का नीला किनारा फाडकर उसे खोला।

तार न्यू-ओरलिआन से जहाज के मालिक ने भेजा था। मालिक ने सूचना दी थी कि "लिसबी लिसबी एण्ड सन्ज" कम्पनी, जिसने "मेजी" जहाज को किराये पर लिया था, इस बात के लिये जोर देती है कि ओदेसा म जहाज को जल्दी से लादकर फौरन वापिस पहुचा जाये, क्योकि खली की खाद की शीघ्र ही माग बढनेवाली है। खली की खाद लाने के लिये ही "मेजी" दूरस्थ रूस जा रहा था।

कप्तान ने कधे उचकाये, लम्बा-सा कश लगाकर धुए का घना बादल उडाया, पाइप को मुह के दूसरे सिरे मे दबाया और भिचे हुए होठो के बीच से धीरे से कह उठा—

"बेडा गर्क !"

उसे याद आया कि मालिक ने हर टन के पीछे कोई दो सेंट की कजूसी करते हुए जहाज के कोयलाखाने में ऐसा कूड़ा-करकट भरवा दिया था कि अटलांटिक को लांघते समय "मेजी" बड़ी मुश्किल से ही लहरों और हवा का मुकाबला करते हुए रेंगता रहा था और भाप का न्यूनतम दबाव बनाये रख सका था।

ऐसी हालत में तेज रफ्तारी की बात ही कहा सोची जा सकती थी। मगर मालिक का हुक्म तो मिल ही गया था। कप्तान हुक्म पूरे करने का आदी हो चुका था। इसलिये उसने परिचारक को बुलाया और मशीन इजीनियर ओ'हिड्डी को बुलाने का आदेश दिया।

कोई एक-दो मिनट बाद कप्तान के केबिन के दरवाजे में छोटे-छोटे कटे लाल बालोंवाला सिर दिखाई दिया। दयालु नीली आखो ने केबिन में नजर दौड़ाई, कप्तान की ओर देखा और फुटवाली स्वेटर तथा नहाने का जाघिया पहने अपने झुके धड को भीतर करते करते हुए ओ'हिड्डी ने मरी सी आवाज में पूछा—

'फ्रेड, मुझे परेशान करने की आपको यह क्या सूझी है? इस भयानक आबोहवा से तो मेरी जान ही निकली जा रही है। इसीलिये गुसलखाने में घुसा बैठा हू। वापिस लौटने पर मैं मालिक से कहूगा कि उत्तरी दिशा में जानेवाले किसी जहाज पर मेरी बदली कर दे।" ओ'हिड्डी ने अपने दुबले पतले पेट पर जाघिये को ऊपर किया और कहा—"बदकिस्मती से क्लोनडाइक में पैदा होने और पोस्तीन के बोरे में आधी जिन्दगी बिताने के बाद इस जहन्नुमी आग को बर्दाश्त करना कुछ आसान नहीं।"

"तब तो मैं आपको खुशखबरी दे सकता हू," कप्तान ने जवाब दिया, "मेरा खयाल तो इतवार तक यहीं रुकने का था ताकि हमारे जहाजी गालाट के जुआखानो में अपनी जेबें कुछ हल्की कर ले और ओदेसा पहुचने के पहले जहाज के पहलुओं पर रोगन करा लिया जाये, मगर अब मालिक का यह तार आ गया है वह उतावली कर रहा है। इसका मतलब यह है कि आज शाम को ही चल देना होगा। ओदेसा अल्यास्का तो नहीं है, फिर भी यहा की तुलना में कम गर्म है।"

"पर ऐसी उतावली क्यो मचायी जा रही है?" ओ'हिड्डी ने कप्तान के तम्बाकू से अपनी पाइप भरते हुए पूछा।

"लिसबी कम्पनीवाले जल्दी से खली हासिल करना चाहते हैं। मडी मे माग बढ रही है।"

मशीन इजीनियर ने सोच मे डूबते हुए अपने नगे घुटने को हथेली से थपथपाया।

"मगर फ्रेड, आपको यह तो मालूम ही है कि ओदेसा मे हमे वायलरा की सफाई के लिये रुकना पडेगा," उसने मानो चिढाते हुए लापरवाही से कहा।

कप्तान जिविस के चेहरे से घडी भर को अयमनस्कता का नकाव उतर गया और जिज्ञासा जैसा भाव झलक उठा। उसन पाइप मुह से निकाली।

"यह और क्या किस्सा है? अभी पिछले फेर मे ही तो हमने सारे जहाज की सफाई करवाई थी। किसलिय फिर से यह झझट शुरू करन की जरूरत है, सो भी तब, जब कि हमसे जल्दी करने का कहा जा रहा है?"

ओ'हिइी राखदानी मे थूककर व्यग्यपूवक मुस्कराया।

"आपके मुह से ऐसे भाले भाले सवाल सुनकर तो यह लगता है मानो आप अभी दूध पीते बच्चे ही हा। हम जो कोयला जला रहे है वह तो आपने देखा है न?"

"देखा है," कप्तान ने रुखाई से जवाब दिया।

"तो फिर पूछ क्या रहे है? इस तरह का कूडा तो बस दरियाई घोडे की अतडियो मे ही मिल सकता है। गुल की वजह से आधी पाइपें ठप्प हुई पडी हैं। अच्छी सफाई के विना हम वापिस नही पहुच पायेंगे, सो भी माल लाद कर।"

"वापिस तो हमे वक्त पर पहुचना ही होगा, वरना भत्ते से हाथ धोना पडेगा। सफाई के झयट को कम से कम वक्त मे खत्म करवा लीजिये। हमारे लिये एक एक मिनट कीमती है।"

"कोशिश करूगा। खुशकिस्मती से ओदेसा मे मिस्टर बीकोव मौजूद है। पैसो के लिये वह असम्भव को भी सम्भव बना देता है।'

कप्तान को इस उत्तर से सन्तोष हुआ और उसके चेहरे पर फिर से शान्त उदासीनता का भाव छा गया।

"अच्छी बात है! तो मैं आप पर भरोसा करूगा। हा, जहाजियो को चेतावनी दे दीजियगा कि शाम के छ बजे तक सभी जहाज पर लौट

आयें। अगर किसी ने देर कर दी तो म इन्तजार नही करूगा। तब उसे हमारे लौटने तक गालाट मे भीख मागनी होगी। हमे सूरज छिपने, इन कम्बख्त तुर्कों की सांकेतिक तोपो की धाम धाम के पहले ही काले सागर मे निकल जाना चाहिये। नही तो सुबह की राह देखनी पडेगी।"

"ठीक है!" मशीन इजीनियर ने जवाब दिया। "ऐसा ही होगा।"

२

"मेजी डाल्टन" जहाज ने सूर्यास्त के समय, जब लहरो की ऊपरी सतह गुलाबी-सुनहरी हो उठी थी, सकरा बोसफोरस जलडमरूमध्य पार किया और तीखा मोड मुडकर वह उत्तर की ओर चल दिया।

कप्तान जिविस फीनेगान्नी नीली टोपी को माथे पर खीचे और जेबो मे हाथ डाले हुए जहाज के चबूतरे पर खडा था।

लहरे जब गुलाबी सुनहरी झलक दिखाती है, उस समय ससार के सामुद्रिक मार्गों स हजारा जहाज आते-जाते ह। इनमे पुरान, सभी सागरा और महासागरा के सलौने चुम्बनो से धुले हुए यातायात और माल जहाज भी हाते है, तेज रफ्तारवाले स्टीमर भी और अटलाटिक के आर पार जानेवाले अतिकाय छ मजिले, शानदार मुसाफिर जहाज भी, जिनके अग्रभागो की विराटता से आतकित पानी अवसादपूर्ण कोलाहल करता हुआ पीछे हटता जाता है। दिन को और रात को सितारा की झिलमिलाहट की छाया मे वे समुद्री रास्तो को लाघत रहते ह, बिजली की रग बिरगी आखो से दुनिया के अधेरे को चीरते रहते है।

बको, दफ्तरा और जहाजी कम्पनियो की इच्छा, दया और ढील से अनजान पूजी की कठोर कारोबारी सत्ता इन जहाजो को चलाती है, उन्हे हरो खोहो मे तेजी से दौडाती है।

समुद्री क्षितिजो की नीलिमा मे सुदर देशा की झाकिया उभरती ह। इन सुदर देशा मे उन माला के ढेर लगे रहते ह, जिनकी बैंको और कारोबारी दफ्तरा को आवश्यकता हाती है। गालियो की बौछार और कोडो की मार सहते हुए पीले, सावले और काले गुलाम जहाजा के खाली इस्पाती पेटा मे कच्चे माल और ममाले, कपास और कच्ची धातुए, फल और रबड भरते रहते है, जिन्हे उन्ही जसे गुलामो ने गालियो की बौछार और कोडो की मार सहते हुए निकाला, उगाया और बटोरा होता है। औरो की

चखियो के शोर मे जहाज पारदर्शी गहराई मे तब तक नीचे होते जाते है जब तक पानी माल की अधिकतम लदाई को इगित करनेवाले चिह्न को नही छू लेता।

धुध और लहरा, प्रतिबिम्बित होते सितारा और भयानक तूफानो की चीख पुकारा के बीच से जहाज अपने मालो को दूर-दराज के बन्दरगाहो पर सावधानी से ले जाते हैं ताकि हलचल भरी सडको पर हरे रेशमी पर्दों से आधे ढके हुए चमकते शीशो के पीछे गिनतारा की खटखटाहट वाला रहस्यपूर्ण नीरस, काम जोर शोर से चलता रहे। वहा, रेशमी हरे पर्दों के पीछे लालच की तूती बालती है।

छता से लटके हुए लैम्प ऊची मेजो, मोटे-मोटे रजिस्टरा और फाइलो पर झुके हुए गजे सिरो और चश्माधारी मुरझाये चेहरा पर एक जैसी बेजान-सी रोशनी डालते रहते हैं। इन चेहरा वाले लोग भी दफ्तरी रजिस्टरो के कागजा की तरह ही कठोर और रूखे है और जब वे होठ हिलाते हैं तो वे भी उल्टे पल्टे जानेवाले कागजो की भाति ही सरसराते हुए प्रतीत होते हैं। कागजो पर आकडा के छोटे बडे स्तम्भ उभरते रहते हैं। वे जहाजा द्वारा लाये गये मालो का भाग्य-सचालन करते ह। इन मालो से भरी और रेशम जैसी चटाइया से ढकी बोरिया क्षितिज की नीली धुध के पार वाले सुदर देशो की तेज मनमोहक सुगध से महकती रहती है।

बको और दफ्तरो के लोग इन सुगधो से अनजान रहते हैं। वे तो केवल भुरभुरे रगीन कागजो की गध से ही परिचित होते ह, जिनकी गैरदिलचस्प सजावट के बीच कुछ आकडे और दुनिया भर की भाषाआ मे सक्षिप्त शब्द लिखे रहते हैं।

बैंका और दफ्तरो के लोग जहाजा द्वारा लाये गये और फाइलो मे रजिस्टर किये गये मालो को रगीन कागजा तथा धातु के ठनकदार गोल टुकडा मे परिवर्तित करते हैं। वे जल्दी-जल्दी यह जादुई काम करते हैं ताकि स्टॉक बाजार के काले तख्ते पर दलाल के निर्दयी हाथ द्वारा खडिया से लिखे जानेवाले आकडे सतुलित और अनुकूल बने रह।

लालच के सक्षिप्त और कडकते हुए आदेश के अनुसार जहाजा की मशीनें अपनी इस्पाती पेशियो को फिर से तान लेती हैं, ग्रीज से चिकनाये हुए लीवरा के घुटने और कोहनिया झुक जाती हैं, चिमनिया महासागर के निमल आकाश मे जहरीला धुआ छोडती हैं, कावले तेजी से घूमते हैं और

आयें। अगर किसी ने देर कर दी तो मैं इन्तजार नहीं करूंगा। तब उसे हमारे लौटने तक गालाट में भीख मागनी होगी। हमें सूरज छिपने, इन कम्बख्त तुर्कों की सांकेतिक तोपों की धाय धाय के पहले ही काले सागर में निकल जाना चाहिये। नही तो सुबह की राह देखनी पडेगी।"

"ठीक है!" मशीन इंजीनियर ने जवाब दिया। "ऐसा ही होगा।"

२

"मेजी डाल्टन" जहाज ने सूर्यास्त के समय, जब लहरों की ऊपरी सतहें गुलाबी-सुनहरी हो उठी थी, सकरा बोसफारस जलडमरूमध्य पार किया और तीखा मोड मुडकर वह उत्तर की ओर चल दिया।

कप्तान जिविस फीतेवाली नीली टोपी को माथे पर खीचे और जेबों में हाथ डाले हुए जहाज के चबूतरे पर खडा था।

लहरें जब गुलाबी सुनहरी झलक दिखाती हैं, उस समय ससार के सामुद्रिक मार्गों से हजारों जहाज आते-जाते हैं। इनमें पुराने, सभी सागरों और महासागरों के सलौने चुम्बनों से धुले हुए यातायात और माल जहाज भी होते हैं, तेज रफ्तारवाले स्टीमर भी और अटलांटिक के आर-पार जानेवाले अतिकाय छ मंजिले शानदार मुसाफिर जहाज भी, जिनके अग्रभागों की विराटता से आतंकित पानी अवसादपूर्ण कोलाहल करता हुआ पीछे हटता जाता है। दिन का और रात को सितारों की झिलमिलाहट की छाया में वे समुद्री रास्तों को लांघते रहते हैं, बिजली की रंग बिरंगी आंखों से दुनिया के अंधेरे को चीरते रहते हैं।

बैंकों, दफ्तरों और जहाजी कम्पनियों की इच्छा, दया और ढील से अनजान पूंजी की कठोर कारोबारी सत्ता इन जहाजों को चलाती है, उन्हें हरी खोहों में तेजी से दौडाती है।

समुद्री क्षितिजों की नीलिमा में सुन्दर देशों की झांकियां उभरती हैं। इन सुन्दर देशों में उन मालों के ढेर लगे रहते हैं, जिनकी बैंकों और कारोबारी दफ्तरों को आवश्यकता होती है। गालियों की बौछार और कोड़ों की मार सहते हुए पीले, सांवले और काले गुलाम जहाजों के खाली इस्पाती पेटों में कच्चे माल और मसाले, कपास और कच्ची धातुएं, फल और रबड भरते रहते हैं, जिन्हें उन्हीं जैसे गुलामों ने गालियों की बौछार और कोड़ों की मार सहते हुए निकाला, उगाया और बटोरा होता है। बैंकों की

चखिया के शोर मे जहाज पारदर्शी गहराई मे तब तक नीचे होते जाते हैं जब तक पानी माल की अधिकतम लदाई को इगित करनेवाले चिह्न को नही छू लेता।

धुध और लहरा, प्रतिबिम्बित होते सितारा और भयानक तूफानो की चीख पुकारो के बीच से जहाज अपने मालो को दूर-दराज के बदरगाहो पर सावधानी से ले जाते हैं ताकि हलचल भरी सडको पर हरे रेशमी पर्दो से आधे ढके हुए चमकते शीशो के पीछे गिनतारो की खटखटाहट वाला रहस्यपूर्ण नीरस, काम जोर शोर से चलता रहे। वहा, रेशमी हरे पर्दो के पीछे लालच की तूती बोलती है।

छता से लटके हुए लैम्प ऊची मेजो, मोटे-मोटे रजिस्टरा और फाइलो पर झुके हुए गजे सिरो और चश्माधारी मुरझाये चेहरा पर एक जैसी बेजान-सी रोशनी डालते रहते है। इन चेहरो वाले लोग भी दफ्तरी रजिस्टरो के कागजा की तरह ही कठोर और रूखे हैं और जब वे होठ हिलाते ह तो वे भी उल्टे पल्टे जानेवाले कागजो की भाति ही सरसराते हुए प्रतीत होते ह। कागजो पर आकडो के छोटे-बडे स्तम्भ उभरते रहते ह। वे जहाजा द्वारा लाये गये माला का भाग्य-सचालन करते ह। इन मालो से भरी और रेशम जैसी चटाइया से ढकी बोरिया क्षितिज की नीली धुध के पार वाले सुदर देशो की तेज मनमोहक सुगध से महकती रहती हैं।

बैंको और दफ्तरो के लोग इन सुगधो से अनजान रहते हैं। वे तो केवल भुरभुरे रगीन कागजा की गध से ही परिचित होते हैं, जिनकी गैरदिलचस्प सजावट के बीच कुछ आकडे और दुनिया भर की भाषाओ मे सक्षिप्त शब्द लिखे रहते हैं।

बैंको और दफ्तरो के लोग जहाजो द्वारा लाये गये और फाइला मे रजिस्टर किये गये मालो को रगीन कागजो तथा धातु के ठनकदार गोल टुकडा मे परिवर्तित करते हैं। वे जल्दी-जल्दी यह जादुई काम करते है ताकि स्टॉक बाजार के काले तख्ते पर दलाल के निर्दयी हाथ द्वारा खडिया से लिखे जानेवाले आकडे सतुलित और अनुकूल बने रह।

लालच के सक्षिप्त और कडकते हुए आदेश के अनुसार जहाजा की मशीनें अपनी इस्पाती पेशियो को फिर से तान लेती हैं, ग्रीज से चिकनाये हुए लीवरा के घुटने और कोहनिया मुक जाती ह, चिमनिया महासागर के निर्मल आकाश मे जहरीला धुआ छोडती ह, कावले तेजी मे घूमते हैं और

कप्तान पहरेदारा से गतिमापक यन्त्र की स्थिति के बारे मे अक्सर सूचना प्राप्त करते हैं।

कप्तान इस जहाज के कप्तान जिंकिन्स की तरह ही अनुभवी और शान्त होते हैं। वे फीतेवाली नीली टोपी पहने और जेबो मे हाथ डाले हुए जहाज के चबूतरे पर खडे रहते हैं। आखें सिकोडे हुए वे इधर उधर बिखरे सफेद फेन मे से ऐसा रास्ता देखते है, जो औरो को नजर नही आता।

कप्तान जिंकिन्स के लिये न्यू ओरलिआन के हरे भरे चपटे तटो से ओदेसा की तटवर्ती चटक पीली भुरभुरी चट्टानो तक का रास्ता भी स्पष्ट है। उसे यह भी स्पष्ट है कि कैसे उसका माल रगीन कागजो और धातु के गोल टुकडो मे बदलता है और उनका एक हिस्सा श्रम के लिये कप्तान और जहाजियो को मिलता है। कप्तान इन कागजो का एक बडा हिस्सा बुरे दिनो मे अपने परिवार को निश्चित करने के लिये जोडता जाता है। मगर जहाजी, जिनके पास बचाने के लिये कुछ भी नही होता, बुरी तरह ऊब अनुभव करते हुए अपने पैसे शराबखानो और नुची-नुचायी दयनीय लडकियो पर खर्च कर देते हैं। पैसे अपना पूर्वनिर्धारित चक्कर पूरा करके बैंको मे वापिस आ जाते हैं, बही-खातो मे दर्ज होते हैं और नये मालो मे बदल जाते हैं।

जहाज इन मालो को अपने तहखानो मे बन्द करते हैं और फिर से समुद्री रास्तो पर चल देते हैं। वे रास्ते कपटपूर्ण हैं, डावाडोल हैं, उनमे सभी तरह के अनदेखे अनजान खतरे सामने आ सकते हैं, जिनमे कप्तान और जहाजियो की जान पर बन सकती है, उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड सकता है। बेरोजगार हो जाना मर जाने से कही अधिक बुरा होता है।

शार्ट वाटरप्रूफ कोट पहने हुए कप्तान जिंकिन्स इसीलिये रात को तीन बार डेक पर बाहर आया और डेक के जहाजी से जहाज के पृष्ठभाग मे चमकते हुए फेनिल पानी के ऊपर समलय से घूमती हुई कासे की फिरकी के सकेत बताने के लिये कहा।

३

शहतीरी पुल के नीचे, साप की तरह इधर उधर बल खाती हुई रेलवे लाइनो के जमघट के परे ढालू सडक पर धुए से काले हुए सरध्र पत्थरो के छोटे छोटे घर थे। ईंटो जैसे लाल रग की रेल गाडियो की

अन्तहीन पाते दिन रात उनके पास से गुजरती हुई शोर मचाती रहती थी, उन पर कालिख पोतती रहती थी। ये गाडिया चूने के पत्थरवाले घाटा तक, जिनसे टकराता हुआ गदला हरा पानी कल छल करता रहता था, माल पहुचाती थी और वहा से माल ले जाती थी।

इही घरो मे से एक के दरवाजे पर बदरग सुनहरे अक्षरा मे यह लिखा था– "प० क० बीकोव का बायलरो की मरम्मत और सफाई का दफ्तर।"

दफ्तर मे मेज के पीछे खुद प्रोव किरिआकोविच बीकोव विराजमान था। वह अकेला ही अपने इस कारोबार की देखभाल करता था और सुबह से शाम तक चौडी कुर्सी पर जमकर बैठा रहता था। अगर रूस के सम्राट निकोलाई द्वितीय और सत इओआन क्रोन्श्तादस्की के छविचित्रो की गिनती न की जाये, तो दफ्तर मे उसके सिवा और कोई नही होता था।

रूस के सम्राट के छविचित्र मे दो सूराख थे। ये सूराख दो साल पहले उन दिनो हुए, जब विद्रोही बख्तरबद जहाज "पोत्याम्किन" ओदेसा के बदरगाह मे आया था। दो दिन तक बदरगाह मे रुककर, सत्ता के दिल मे अभूतपूव दहशत पैदा करके, नगर मे प्रबल क्रातिकारी ज्वार लाकर यह बख्तरबद जहाज दक्षिण की ओर चला गया था। डर पर काबू पाने के बाद बडे अधिकारियो ने मोर्चेबदिया पर डटे हुए वीरो और शातिपूर्ण नागरिको के खून से ओदेसा को लथपथ कर दिया तथा आग-बबूला हुए यमदूतसभाइयो ने भयानक मार काट और लूट-खसोट शुरू की। तब बीकोव के दफ्तर मे खून-खराबी करनेवालो और आवारा शराबियो की भीड घुस आयी और उसने जार की तस्वीर मागी ताकि शासक की आड मे सडको पर मौज मनायी जा सके। जार को अपनी तस्वीर के रूप मे मानो इस मार-काट और लूट-खसोट को आशीर्वाद देना था।

मगर मामले ने दूसरा ही रुख अपना लिया। मार-काट की आग इतनी अधिक बढी कि नगर के गरीब-गुरबा के इलाका से निकल कर अमीरा के मुहल्लो को (सो भी केवल यहूदियो के घरा को ही नहीं) भी अपनी लपेट मे लेने का खतरा पेश करने लगी। पहले से अधिक आतकित सत्ताधारियो ने किसी भी तरह से इस मार-काट को खत्म करने का हुक्म दे दिया। चुनाचे वहशी बनी हुई भीड बीकोव के दफ्तर से मोड तक ही गयी थी कि गोलियां की तडातड तीन बौछारे हुई। बीकाव न उपद्रविया

की पगलायी हुई भीड को खिडकियो के पास से गुज़रते देखा और उसमें से एक ने तस्वीर को पत्थर के चबूतरे पर फेंक दिया।

जब फौजी घुडसवार गुज़र गये और सब कुछ शान्त हो गया, तो वीकोव दबे पाव बिल से निकलनेवाले बिज्जू की तरह बाहर जाकर तस्वीर उठा लाया। शीशा चौखटे से बाहर निकल गया था और दो गोलियो ने सम्राट को बदसूरत बना दिया था। एक गोली ने कान साफ कर दिया था और दूसरी ने एक नास छेद डाली थी। अनुशासन के कारण दबे घुटे दो अज्ञात निशानेबाजो ने ज़ार की तस्वीर पर गोलिया चलाकर ही अपना जी हल्का कर लिया था।

वीकोव ने दुखी होकर गहरी सास ली। नई तस्वीर खरीदने की जरूरत महसूस हुई, मगर पैसे खच करने की बात सोचकर उसके दिल को कुछ होता था। तस्वीर को खूब ध्यान से देखने के बाद उसने तय किया कि उसे ठीक-ठाक किया जा सकता है। नास के सूराख को तो उसने ज्या का त्यो ही रहने दिया—आखिर कुदरत ने भी तो वहा सूराख बनाया है, और कान पर कागज़ चिपकाकर उसने पेंसिल से उस पर जचता हुआ रग भर दिया।

तो इस तरह उसने सम्राट को एक ही कुदरती नास से दफ्तर की धूल सूघने के लिये फिर से टाग दिया। वायनरो की सफाई करनेवाले वीकोव के दफ्तर के छोकरे, जो अक्सर अहाते मे भीड लगाये रहते थे, खिडकी मे से झाकते और तस्वीर की ओर देखकर तिरस्कार से कहते— "फटी नास वाला निकोलाई।"

वीकोव का कारोबार बडा था, बन्दरगाह के सभी लोग उससे परिचित थे। साल के सभी मौसमा मे सैकडो जहाज विभिन्न अद्भुत अनूठी जगहो से ओदेसा आते थे। कुछेक के पष्ठ भागो मे बन्दरगाह का निशान और जहाज का नाम ऐसी भाषा मे लिखा रहता था कि भाषाविज्ञान का पियक्कड विद्यार्थी मोल्का खल्यूप भी, जो जाडे मे जूतो की जगह नमदे की तातारी टोपिया पैरा मे बाधे घूमा करता था, उन्हें पढ नही पाता था।

जहाज बहुत लम्बे अर्से तक समुद्रा मे चलते रहते हैं और गुल तथा कालिख से उनकी धुआ छोडनेवाली चिमनिया और वायलरा की पाइपें बन्द हो जाती हैं। सफर जारी रखने के लिये जहाज को अपना पेट और अपनी लोहे की अन्तडिया साफ करनी होती ह, उन पर जमा हुआ गु

उतारना होता है। ऐसी छोटी-मोटी बातो के लिये जहाज को डाक मे खडा रखने का वक्त नही होता, बन्दरगाह मे ही उसे साफ करना पडता है। ऐसे मौको पर बायलरो का डाक्टर बीकोव ही बीमार जहाजो की मदद करता था।

इस काम के लिये उसके पास छोकरो की पूरी पलटन थी।

तग पाइपें गुल तथा मैल से और भी अधिक तग हो जाती हैं, वयस्क के लिये उनमे घुसना सम्भव नही होता और दस साल तक की उम्र के बच्चे इसके लिये बिल्कुल उपयुक्त रहते है। वे बीमार पाइप मे साप की भाति रेगते हुए चले जाते हैं और एक सिरे से दूसरे सिरे तक चिपचिप, घुटन और धुए की दुर्गन्ध मे इस्पाती खुरचनी और जरूरी होने पर छेनी लेकर गुल की मोटी तह और मैल साफ करते हैं।

बीकोव नगर के सब से अधिक गरीबीवाले हल्के—पेरेसिप, माल्दावाका—से लडके चुनता था। सिर्फ वही बिना रोटी-कपडे के केवल पन्द्रह कोपेक मजदूरी पर ऐसा यातनापूर्ण काम करने के इच्छुक मिल सकते थे।

सभी राष्ट्रो के मशीन इजीनियर बीकोव के दफ्तर मे आते थे। बीकोव उनके आर्डर लेता और टेढे-मेढे अक्षरो मे उन्हे अपने रजिस्टर मे दर्ज करता। उसे लिखने मे बडी परेशानी होती, बहुत मुश्किल से लिखना-पढना सीखा था। बडे यत्न से अक्षरो को लिखते हुए वह नाक सुडसुडाता और अपनी दाढी से कागज पर स्याही फैला देता। आर्डर लेने के बाद वह अहाते की ओर खिडकी का शीशा खोलता और गला फाडकर चिल्लाता—

"सेका, मीश्का, पाश्का, अल्योश्का! शैतान के चर्खो, चलो काम पर! देर नही करो! जल्दी से!"

४

ओ हिंह्री नया रेशमी सूट और नारगी रग के चमचमाते पम्प पहने तथा बेंत की छडी हाथ मे लिये हुए बुलवार से ओदेसा की चौडी सीढिया उतरा, जहा उसने ढेर-सी आइसक्रीम खाई, और लेजर स्वीबेल नामक दलाल को साथ लिये हुए गन्दी, कोयला की धूलवाली सडक पार की।

ओदेसा बन्दरगाह मे एक बार भी आनेवाला हर कप्तान और हर

मशीन इंजीनियर लेजर भी जानता था। वह यात्री के बिना महासागरीय जहाजों को डॉक में पहुंचाने से लेकर जहाजियों के लिये मनमौजी और कुछ भी माग न करनेवाली सहेलियां जुटाने तक का हर काम पूरा करता था।

लेजर को बन्दरगाह के दनार को हैमिमा म जो काम पूरे करने होते थे, उनके लिए वह सभी जरूरी भाषाएं जानता था। वह सभी भाषायें उलटे-सीधे ढंग से बोलता था, मगर फिर भी जैसे-तैसे अपनी बात समझा लेता था और जहाजियों के लिये पराये नगर की भूल भुलैया मे वही उनका एकमात्र सहारा, अरीआदना का धागा होता था। केवल बहुत उत्तेजित होने पर ही वह सभी भाषाओं का एक साथ प्रयोग करने लगता था और तब उसे समझ पाना बिल्कुल असम्भव हो जाता था।

इस वक्त लेजर ओ'हिंडू को प्रोव किरिआकाविच बीकाव के दफ्तर की ओर ले जा रहा था। मशीन इंजीनियर तो खुद भी रास्ता ढूढ लेता। जगह-जगह भटकनेवाली अपनी इस जिन्दगी मे वह पहली बार तो प्रोदेसा की पटरियों की धूल नही छान रहा था। मगर बीकाव को खुद अपनी बात न समझा पाता। बीकोव अंग्रेजी में केवल जहाजियों की गालियां ही जानता था। ओ'हिंडू टूटी फूटी रूसी भाषा मे रोटी की तरह बेहद जरूरी केवल ये तीन वाक्य ही कह सकता था—"नमस्ते', 'आपका हालचाल क्या हैं" और "तुम सुन्दरी ह, अम पसन्ड करटा'। मगर काम काजी बातचीत के लिये रूसी भाषा की इतनी जानकारी नाकाफी थी।

बीकाव मशीन इंजीनियर के सामने तनकर खडा हो गया और उसने अपना गुदगुदा, छोटा-सा और काले बालो वाला हाथ उसकी ओर बढा दिया। ओ'हिंडू ने तपाक से हाथ मिलाया। लेजर ने जल्दी जल्दी और बडी सावधानी से बीकोव की छोटी छोटी उगलियो क सिरो को छुआ।

"क्या हालचाल है प्रोव किरिआकोविच?" उसने सहमे और भूले बिसरे आदमी की सहमी सिमटी मुस्कान के साथ शब्दो मे मिसरी घोलते हुए पूछा।

"बस, गाडी चल रही है। तुम कैसे हो जेरूसलेम के मुर्ग?'

"ओह, यह क्या कह रहे है आप? मैं भी कैसा मुर्गा हू? अगर मैं मुर्गा होता तो हर दिन दाना दुनका लेकर घर जाता और अपने चूजो का पेट भरता। मगर मैं तो मुर्गा नहीं हू और यह कहते हुए शम आती है कि थू हा, हो सकता है कि आज कुछ हाथ लग जाये, क्योकि आखिर तो

लम्बी उम्र हो इसकी। तो कुछ न कुछ वह दे देगा और कुछ आप भी इस गरीब यहूदी को दे दीजियेगा।"

"काम किस तरह का है?" बीकोव ने आर्डरों का रजिस्टर खोलते हुए पूछा।

"अजी, यह भी क्या सवाल किया है आपने? शाही काम है, भला हो इसका। इस मिस्टर के बायलरों को दो दिन में साफ करना है, क्योंकि मिस्टर को जल्दी से अपने अमरीका पहुचना है और इसके पास ऐसा जरूरी माल है जैसा कि मेरे पास कभी नहीं होगा।"

"दो दिन मे? तो इसी हिसाब से पैसे भी देने पडेंगे," बीकोव ने रुखाई से कहा।

"मै कौन-सा एतराज कर रहा हू? मिस्टर को क्या फर्क पडता है? इस बूढे लेजर से तो वह कुछ अमीर ही है। वह इसके लिये तैयार है।"

"तैयार है तो अच्छी बात है। तो इसे बता दो कि इसके लिये इतने पैसे "

बीकोव ने नाक खुजलाई और लम्बी चौडी रकम बतला दी। लेजर सिहरा और उसके चेहरे का रग उड गया।

"अरे-रे!" वह फुसफुसाया। "यह तो बहुत ही ज्यादा है। मै भला इतनी बडी रकम मुह से कैसे निकाल सकता हू?"

"नही कहना चाहते, तो न सही," बीकोव ने अपना अन्दाज कायम रखते हुए कहा। "आजकल काम का खूब जोर है। असामियो की कुछ कमी नही। यह नही तो कोई दूसरा आ जायेगा।"

लेजर ने हाथ झटके और झिझकते-झिझकते मशीन इजीनियर को अग्रेजी मे वह रकम बताई। उसे इस बात से बडी हैरानी हुई कि ओ'हिड्डी ने तो माथे पर बल तक नही डाला और सक्षिप्त-सा उत्तर दिया—"Verv well!" उसने केवल इतना और कहा कि अगर दो दिन मे काम पूरा न हुआ तो हर दिन की देरी के लिये बीकोव से पचीस प्रतिशत पैसे काट लिये जायेंगे।

"ठीक है," बीकोव ने आर्डर लिखते हुए कहा, 'कुछ देर-वेर नही होने देंगे। अगर आर्डर ले रहा हू तो इसका मतलब है कि काम भी वक्त पर पूरा हो जायेगा।"

मशीन इंजीनियर ने मेज पर पशगी रकम रख दी, रसीद ली और लेडर को पांच डालर दलाली के दिये। बीकाव से हाथ मिलाकर और लेडर को सभी तफसीलों के बारे में बातचीत करने के लिये वहीं छोड़कर वह दफ्तर से बाहर चला गया।

किलकारियां और ठहाके सुनकर वह पटरी पर रुक गया।

गदे मदे और फटेहाल पांच लड़के पटरी पर चिब्बिड्डी खेल रहे थे। वे खानों में डिबिया फेंककर एक टांग पर कूदते हुए उसे बाहर निकालते थे।

ओ'हिड्डी ने यह खेल पहले कभी नहीं देखा था और इसलिये जिज्ञासा से उसे देखने लगा।

एक छोटा और अस्त-व्यस्त बालोंवाला लड़का दूसरों की तुलना में अधिक फुर्ती से कूदता था और अपनी सफलता पर खुशी से ठहाके लगाता था। पंजे की सधी हुई गतिविधि से खड़िया द्वारा बनाये गये समकोण से डिबिया को बाहर निकालने पर उसने नजर ऊपर उठाई और मशीन इंजीनियर को खड़े देखा। उसके होंठ हंसी से फैल गये और दूध जैसे सफेद दांतों की दो सीधी पांतें चमक उठीं। वह भागकर ओ'हिड्डी के पास गया, उसने अपना छोटा-सा हाथ, जो कालिख के कारण बन्दर के हाथ जैसा लगता था, उसकी ओर बढ़ाया और उछलते हुए चिल्लाकर कहा—

"कप्तान, कप्तान! गिव मी शिलिंग इफ यू प्लीज, तुम पर शैतान की मार! गुड बाई! हाऊ डू यू डू?"

ओ'हिड्डी मुस्करा दिया। लड़के ने अंग्रेजी के वाक्य में रूसी के जो शब्द मिला दिये थे, वे तो उसकी समझ में नहीं आये। हां, मगर न्यू ओर्लिआन के घाटों पर ऐसे ही आवारा शैतानों का उसे स्मरण हो आया और उसे मातृभूमि की हवा की अनुभूति हुई।

ओ'हिड्डी का हाथ अपने आप ही उसकी जेब में चला गया और उसने चमकता हुआ एक डालर निकालकर अपनी तरफ फैली हथेली में रख दिया। सिक्का आन की आन में लड़के के मुंह में गायब हो गया, उसने कलाबाजी खाई, वह हाथों के बल खड़ा हो गया और नंगे पंजे से पंजे को थपथपाकर चिल्ला उठा—

"हिप हिप हुर्रा!"

ओ'हिड्डी और भी अधिक प्यार से मुस्कराया। उसने सीधे खड़े हो गये लड़के का गाल थपथपाया, उसके दरिद्रे जैसे शानदार दांतों से

वह डाला –

"नमस्ते, आपका हालचाल क्या है?"

लडके जोर से हस दिये और एक ने थूकते हुए उल्लास से कहा–

अरे वाह! कम्बख्त हमारी जवान भी जानता है!"

ओ'हिड्डी ने और भी कुछ कहना चाहा, मगर सुदर लडकी के सामने प्रणय निवेदनवाला वाक्य इस मौके के लिये बिल्कुल अनुपयुक्त था, इसलिये वह असहाय-सा आह भर कर रह गया।

मगर दफ्तर के ओसारे से बीकोव की गूजती आवाज ने उसे इस स्थिति से निजात दिला दी।

"पेत्या! साका! 'चूह'! चलो काम पर!"

ओ'हिड्डी ने शिष्टतापूवक अपना टाप ऊपर उठाया, छोकरा की ओर सिर झुकाया और बदरगाह की तरफ चल दिया।

५

वायलरा की सफाई करनवाले बीकोव के छाकरा म ग्यारह वर्षीय मीत्या की, जिसका उपनाम 'चूहा' पड गया था, पूरे काले सागर तट पर बडी धाक थी। यह वही लडका था, जिसने ओ'हिड्डी से नया चमकता हुआ डालर हासिल कर लिया था और जिसके सफेद दातावाली हसी मशीन-इजीनियर को इतनी अधिक पसद आई थी।

कोई भी यह नही जानता था कि मीत्या कहा स आया था, उसके मा-बाप कौन थे, उसका कुलनाम क्या था। बीकोव को वह कोई दो साल पहल पतझर की एक रात को पुल के नीचे अधमरा और बुखार मे दहकता हुआ पडा मिला था। बीकोव ने उसकी देख भाल की, उसे खिला पिलाकर स्वस्थ किया और अपने काम मे लगा लिया।

बाकी लडका के घर बार थे, वे ओदेसा के गरीब गुरबा, कुलियो और मजदूरो के बेटे थे। पर मीत्या का ओदेसा और उसके इद गिर्द हजार कोस तक कोई अपना नही था। सभी तरह की पूछताछ के जवाब मे उससे सिफ इतना ही मालूम हो सका था कि उसकी मा नीले रग का स्कट पहने थी। मगर नीले स्कर्टों की तो दुनिया मे कुछ कमी नही है और ऐसी निशानी

ढ ढ लेने की बहुत ही कम सम्भावना थी।

मीत्या पर खर्च किया गया बीकोव का पैसा बेकार नहीं गया। कारोबार के लिये वह होग साबित हुआ। उसका दुबला पतला शरीर इ मुड जाता था, इस तरह गुडी मुडी हो जाता था कि ऐसा करने पर स आदमी की तो हड्डियां-पसलियां चटख जायें। बीकाव के कारोबार मे का यह लचीलापन ही तो सबसे बडी खूबी था। दूसरे लडके जहा हुए हिचकते झिझकते थे, वहा मीत्या उतर जाता था। वह तग ं पाइपों के एसे छिपे कोनो, ऐसे गुप्त मोडा और झुकावा मे जा ं था, जहा पुर्जों को अलग किये बिना किसी भी हालत म पहुचना अ होता था। एक बार तो वह पम्प रेफ्रीजेरेटर की साप जैसी टेढी मेढी मे से भी निकल गया, जो हर आध मीटर के बाद पूरा चक्र लगात इस करतब म उसका नाम मार बन्दरगाह पर मशहूर हो गया और ढ के प्रतियोगियो ने दुगुनी मजूरी देकर इस अजूबे को अपनी तरफ ं की कोशिश की। किन्तु मा मे स्कट का केवल रग ही याद रखनेवाल के सूरमाओ जैसे कुछ अपने ही नतिक नियम थ। वह अपनी तीखा नाव जिसके और मानवोपरि लचीलेपन के कारण उसका नाम चूहा' पडा तिरस्कार से ठुकराता और झल्लाकर कडा जवाब देता—

"मतलब यह कि म मालिक की नजरा मे हरामी पिल्ला बन जा उसने मुझे खिलाया पिलाया और मैंने उसके मुह पर थूक दिया? नही वहीं मजे में हू।"

प्रतियोगी भी गन्दी गन्दी गालिया देकर और नाकाम होकर रह ग चूहे से छुट्टी पाने की भी कोशिश का गई और इसके लिये कोई द लडका का छिपी मार द्वारा मीत्या का दूसरी दुनिया मे पहुचाने के लिये तैयार किया गया। मगर 'चीखाचेव" जहाज के जहाजियो ने इस मार को वक्त पर देख लिया और लहू लुहान लडके को बचा लिया।

तो ऐसे 'चूहा' अपने पहले मालिक, बीकोव के प्रति वफाद निभाता हुआ उसी के पास बना रहा। बीकाव भी, जो अवसर छोटे ग कुसूरा के लिये हाथ मे आ जानेवाली किसी भी चीज स वार्गो लडका पिटाई करता था, मीत्या को कभी छूता तक नहीं था। वह दयावश नह

वल्कि इसलिये इतनी सावधानी वरतता था कि ऐसे कीमती हीरे को कही कोई हानि न पहुच जाये।

अब "मेजो" के वायलरो को फौरन साफ करने का बहुत ही अच्छा और खूब जेब गर्म करनेवाला आर्डर मिलने पर उसने मीत्या को ही वहा भेजने का फैसला किया। वह जानता था कि अकेला मीत्या ही दस लडको के बराबर काम कर देगा। बीकोव ने लडको को खुरचनिया, छेनिया और हथौडिया देकर लेन्नर के साथ रवाना कर दिया। लेन्नर का उन्हे जहाज पर पहुचाना था।

ओ'हिंड्डी जहाज पर लौटकर जिविस के केबिन मे पहुचा।

"ओह, बडी मुसीबत है!" उसने केबिन मे दाखिल होते और माथे का पसीना पोछते हुए कहा। 'इस साल ओदेसा म भी गर्म देशो जसी ही गर्मी है। मेरा तो सारा तेल निकल गया। लाइये, अभिशाप की मारी शेरी के दो घूट तो पीने को दीजिये।"

"हा, हा, लीजिये!" जिविस ने शेरी से गिलास भरे। "वायलरो का क्या हुआ?"

"तय कर आया। मिस्टर बीकोव ने दो दिन मे काम पूरा करने की हामी भर ली है।"

"ऑल राइट!' मालिक का एक और तार आया है। अगर हम दो दिन और पहले पहुच जायें तो लिसबो कम्पनी बोनस दुगुना करने को तयार है। अरे, हम तो मालामाल हो जायेंगे। म अपने बच्चो के भविष्य के लिये बक मे कुछ रकम डाल सकूगा।"

मशीन इजीनियर एक ही सास मे भरा गिलास गले से नीचे उतार गया।

"मेरी बला से। मेरे तो बच्चे वच्चे नही हैं पर खैर, तुमसे मुझे हमदर्दी है फ्रेंड। अब जाकर पानी का सहारा लेता हू। वरना केकडे की तरह भुन जाऊगा।'

ओ'हिंड्डी चला गया। जिविस पलग के पास जा खडा हुआ। उसके ऊपर गदराये शरीर और फूले फूले बालोवाली नारी का चित्र दीवार पर टगा था। वह दो बच्चो को गोद म उठाये थी। कप्तान ने गहरी सास ली, पलग पर लेटा और ऊघने लगा।

ओ'हिह्गी ने अपने ऊपर पानी डालना बन्द ही किया था कि गन्दी मन्दी और तेल तथा ग्रीज से चिकनी वर्दी पहने हुए ड्राकिये न केबिन का दरवाजा चौपट खोल दिया।

"जनाव! बायलर साफ करनेवाले आये हैं।"

'उन्हें भट्ठीखाने मे ले जाइये। मैं अभी आ रहा हू।"

ओ'हिह्गी ने तन पोछा, जाघिया पहना, तौलिया टागा, डेक लाघकर इजनघर के द्वार तक गया और फुर्ती से धातु की टनटनाती सीढी उतरकर भट्ठीखाने में जा पहुचा।

लडको ने आस्तीनो के बिना तिरपाल की मजबूत वारिया पहन ली थी, जो पाइपो मे रगते समय उनके शरीरों को खरोचो से बचाती थी।

लेजर ने मशीन इजीनियर को बडे तपाक से नमस्कार किया।

"ये अभी काम शुरू कर देंगे। वडे ही चुस्त लडके हैं! आप विल्कुल निश्चिन्त रहे।

नेजर की आवाज सुनकर एक लडका घूमा और भट्ठीखाने के अधेरे में भी उसके सफेद दात चमक उठे। मशीन इजीनियर उसे पहचान गया। यह वही लडका था, जिसे उसने "नमस्ते" दिया था।

उसने लटके को आख मारी और फिर अपना वही वाक्य दोहराया—

"नमस्ते, आपका हालचाल क्या है?

"तोते की तरह एक ही वात रटे जा रहा है,' मीत्या ने व्यग्य से हसकर कहा। "कह तो दिया कि मेरा हालचाल अच्छा है। तुम कुछ फिक्र न करो चचा जान—जब हामी भरी है तो पाइपें साफ कर ही डालेंगे। तो, आओ दोस्तो!"

उसने वारी की वाहरी जेब में छेनी और हथौडी डाली, खुरचनी हाथ में ली और फिर से मशीन इजीनियर की ओर देखकर मुस्करा दिया। इसके बाद पट के बल पाइप में र[illegible] हिह्गी न [illegible] को भी पाइपो मे गायब होते देखा [illegible] नेजर कॉफी पान के लिये आमन्त्रित [illegible] वहाँ इजन माना और फटी [illegible] का सहारा लेना [illegible]

अमरीकी के साफ-सुथरे केबिन मे उसने केक के साथ मीठी कॉफी का मजा लिया और शराब का एक जाम भी पी लिया। शराब का जाम पीते ही वह उदास हो गया। मोल्दावान्का सडक पर उसे अपने खस्ताहाल घर की याद हो आयी, जहा उसकी सदा भूखी बीबी राखील नौ बच्चो के साथ बैठी थी। उसे यह भी याद आया कि घर के पास ही एक थाना है, जहा थानेदार साहब है, कि थानेदार साहब को हर महीने दस रूबल देने होते है ताकि लेजर पर उनकी कृपादृष्टि बनी रहे। उसे यह भी ध्यान आया कि पाच रूबल तहसीलदार साहब तथा तीन रूबल नगरपाल की नजर करने होते है। इन ख्यालो से लेजर का मन इतना भारी हो गया कि वह उन्ही मे उलझकर और अटक-अटककर मशीन इजीनियर को अपनी मुसीबतो की कहानी सुनाने लगा। अमरीकी शिष्टतापूर्वक सुनता रहा, मगर शायद ऊब महसूस कर रहा था। लेजर का इस बात की तरफ ध्यान गया, उसे झेंप अनुभव हुई और वह विदा लेने के लिये झटपटा उठा।

मगर इसी वक्त केबिन का दरवाजा जोर से खुला और दहलीज पर वही झाकिया दिखाई दिया।

' माफ कीजिये जनाब फौरन नीचे चलिये।"

"किसलिये?" ओ'हिड्डी ने स्पष्टत झल्लाकर पूछा।

'वहा कुछ बुरी बात हो गयी है। एक लडका पाइप मे फस गया है और निकल नहा पा रहा।"

"क्या? वेडा गर्क!" मशीन इजीनियर ने गाली दी और लपककर कबिन से बाहर गया।

भट्टीखान मे उसे मशीन चालक, झोकिये और बीकोव के छोकरे दिखाई दिये। वे सभी पाइप के मुह के पास भीड लगाये हुए थे।

"क्या मामला है?" ओ'हिड्डी न गुस्से से पूछा। "यहा भीड किसलिये लगाये हुए हो? यह कैसे हुआ?"

"लडका पाइप मे काफी दूर जा चुका था," बडे मशीन चालक ने शाति से बात साफ की, "और अचानक चीखने लगा। हम भागकर यहा आये, मगर वह क्या चीख रहा है, यह नही समझ पाये। अब वह रो रहा है। शायद फस गया है और हिलने-डुलने मे असमर्थ है।"

"हाय, यह क्या हो गया?" ओ'हिड्डी के पीछे पीछे नीचे आनेवाले लेजर न चिल्लाकर पूछा। "लडको, मुझे बताओ कि क्या मामला है?"

'मीत्या पाइप मे फंस गया है।"

"घुस तो गया, मगर बाहर नहीं निकल पा रहा।"

"रोता है।"

बाहर सोचना होगा, वायनरो की सफाई करनेवाले छोकरे अलग अलग आवाजों में कह उठे।

लेजर ने पाइप में सिर डाला और धीमी धीमी सिसकियां सुनकर उत्तेजित होते हुए पूछा—

' चूहे ! ऐसी हरकत के क्या मानी हैं? यह तुझे क्या हुआ है, शैतान तुझे गारत करे! तू क्या मुझे और अपने मालिक की नाक कटवानी चाहता है?"

सिसकियों से रुंधती हुई 'चूहे' की बारीक आवाज पाइप में से धीरे धीरे सुनाई दी—

' खुद मेरी समझ मे कुछ नहीं आता लेजर अब्रामोविच कसम भगवान की, मैं तो दोषी नहीं हूं। सदा की भांति पाइप मे घुसा और यहां पट के नीचे हाथ मुड गया किसी तरह भी नहीं निकलता बहुत दर्द होता है! मीत्या फिर से रो पडा।

लेजर हाथ नचाते हुए बोला—

' हाथ मुड गया! कभी ऐसी चीज भी देखी है किसी ने? वह मुड़ ही कैसे गया जब तुझे इसी बात के लिये पैसे दिये जाते हैं कि न मुडे। निकल बाहर पाजी, तुझे मौत आ जाये!"

पाइप में सरसराहट हुई और कराहट सुनाई दी।

ओह नहीं निकल सकता हाय, हड्डी टूटती है," वहां से आवाज सुनाई दी।

लेजर आप से बाहर हो गया।

"तू मेरा सत्यानास करना चाहता है, कमीने? वह पाइप में चिल्लाया। "या तो तू खुद ही पाइप से बाहर आ जा, नहीं तो मैं जाकर प्रोव किरिआकोविच से कह दूंगा और वह तेरे कान ऐंठेगा!"

"नहीं निकल सकता!

"वाह? नहीं निकल सकता कभी सुना है किसी ने ऐसा भी? पेत्या! पाइप मे घुस जा और कसकर उसके पर पकड ले। हम तुझे उसके साथ बाहर घसीटेंगे। घुस, सूअर! हाय, बड़ी मुसीबत है इन बच्चों के साथ!"

पत्या पाइप मे घुस गया।

"उसके पर पकड ले! कसकर! छोडना नही!" लेजर ने हुक्म दिया। "पकड लिये? तो लडको, पेत्या के पैर पकडकर बाहर खीचो। उसे ऐसे ही वाहर खीच लो, जैसे कि मैं जीता जागता तुम्हारे सामने खडा हू।"

लडको ने ज़ोर से हसते हुए पाइप से बाहर लटकते पेत्या के नगे, गदे गदे पैरो को पकडा और खीचने लगे। अचानक पाइप मे से पीत्या की भयानक और ददनाक चीख सुनाई दी—

"अरे, मेरे प्यारा   छोड दा मुझे   बहुत दद होता है   हाय, हाय   हाय हाय हाय!   "

वायलर साफ करनेवाले छोकरा न हतप्रभ होकर पाइप से वाहर लटकते हुए पैर छोड दिये और सयाना की तरह बहुत ही गम्भीरता से एक-दूसरे की तरफ देखा। लेजर के चेहर का रग उड गया।

"आप कोई फिक्र न करे मिस्टर मशीन इजीनियर," लेजर ने जल्दी जल्दी कहा। यह तो मामूली बात है   बहुत ही मामूली   मैं अभी याकोव साहब को बुला लाता हू। वे घडी भर मे उसे बाहर खीच लेगे।"

वह सीढी की तरफ लपका और उस पर ऐसे जल्दी जल्दी चढ गया कि खुद ओ'हिड्डी भी ऐसे न कर पाता।

बाकी लोग विलाप करती हुई पाइप के पास चुपचाप खडे रह गये।

"पाइप मे ग्रीज डालनी चाहिये," मशीन चालक न सुझाव दिया। "वह चिकनी हो जायेगी और तब लडके को वाहर खीचना मुमकिन हो सकेगा।"

ओ'हिड्डी पाइप के मुह पर झुक गया। वह यह जानकर वहुत परेशान हो उठा था कि पाइप म वही सफेद दातोवाला शैतान फस गया है, जिसने सडक पर फौरन उसका ध्यान अपनी ओर खीचा था। मशीन इजीनियर के मन को कुछ हो रहा था, वह किसी भी तरह उसकी मदद करने को उत्सुक था और अपनी विवशता से हताश होकर उसन प्यार स कहा—

'हेलो बेबी! नमस्ते, आपका हालचाल क्या हैं?"

लडके खिलखिलाकर हस दिये। पाइप म से सिसकिया के साथ रुआसी आवाज़ सुनाई दी—

"बुरा हाल है!   हाथ म ऐसे दद हा रहा है मानो टूट गया हा।"

कुछ भी समझ मे न आने से ग्रो'हिड्डी और भी अधिक परेशान और दु खी हो उठा तथा उदासी से भट्ठीखाने की छोटी-सी जगह मे इधर उधर आने-जाने लगा।

७

प्रोव किरिग्राकोविच के पैरो के नीचे सीढी की पैडिया हिल और गूज उठी।

परेशान ग्रो'हिड्डी की तरफ ध्यान दिये बिना बीकोव फौरन छोकरो पर बरस पडा, जो चुपचाप पाइप के पास खडे थे।

"यह क्या हो रहा है? खडे-खडे मुह ही ताकोगे, तो काम कौन करेगा? कुत्ते के पिल्लो, चलो पाइप मे, वरना सभी की काम से छुट्टी कर दूगा!'

"'चूहा' फस गया, प्रोव किरिग्राकोविच," पत्या न रुआसी आवाज मे कहा।

प्रोव किरिग्राकोविच ने जोर से पत्या का कान उमेठा।

'तू बकबक क्यो कर रहा है उल्लू! किसी ने पूछा है तुझसे? फस गया! मैं उसे फसन का मजा चखाऊगा चलो, पाइपो मे! अगर काम वक्त पर खत्म न हुआ तो पैसे क्या तुम लोग दोगे? हरामी न हो तो कही के!"

लडके भागकर पाइपो मे छिप गये।

प्रोव किरिग्राकोविच धम धम कदम रखता हुआ मुसीबत की मारी पाइप के पास गया।

'मीत्या!' उसन धमकाते हुए कहा। 'यह क्या किस्सा है कमीन? नीचता कर रहा है? फौरन बाहर निकल!"

"प्रोव किरिग्राकोविच, मेरे प्यारे बिगडिये नही। मै तो खुशी से ऐसा करता, पर निकल नही सकता, कसम ईसा मसीह की। हाथ बिल्कुल मुड गया, बीकोव को उत्तर म कमजोर सी, लोहे की पाइप के कारण दबी-सी आवाज सुनाई दी।

बीकोव लाल पीला हो उठा।

'तू यह नाटक नही कर शैतान! कह रहा हू कि बाहर आ जा वरना मुह तोड दूगा!"

पाइप मे से रोने की आवाज सुनाई दी।

"अच्छा होगा कि मुझे मार डालिये, अब और तकलीफ बर्दाश्त नहा होती। हाय, दद से जान निकली जा रही है।"

प्रोव किरिम्रावोविच न गुद्दी खुजलाई।

"अरे, वाह! सचमुच ही फस गया हरामी तो पैरा को रस्सा बाधकर बाहर खीचना होगा।"

लेज़र दवे पाव पीछे से बीकोव के पास आया।

"कैसी बदकिस्मती है, कैसी बदकिस्मती है हम कोशिश कर चुके है - बाहर नहीं निकलता श्रीमान मशीन चालक कहते है कि ग्रीज़ डालनी चाहिये, तब पाइप चिकनी हो जायेगी "

"दफा हो, यहूदी!" बीकोव न उसे टोकते हुए डाटा। "तेरे बताये बिना भी मैं यह जानता हू। कह दे ग्रेज़ा से कि ग्रीज ले आये।"

चौडे चकले कधोवाला कनाडावासी, जिसके पूरे गाल पर चाकू के घाव का निशान था, गाढे तेल से भरी बालटी ले आया। बीकाव न लस्टरीन का अपना कोट उतारा और झटके के साथ तेल को पाइप मे काफी दूर तक फेंक दिया।

"ब्रुश दो!" उसने चिल्लाकर सहमे हुए लेज़र से कहा और झाकिये क हाथ से ब्रुश छीनकर ग्रीज़ को पाइप मे धकेलने लगा।

"ग्रीज़ की एक बालटी और लाओ।"

दूसरी बालटी से भी बहुत चिकना, हरी झलक लिये काला तेल पाइप म चला गया।

"पेत्या! सूअर, रस्सा लेकर पाइप मे जा! उसके पैरा को रस्से स बाध दे।"

पेत्या पाइप म घुस गया। उसके गदे गाला पर पसीने और आसू की बूदें ढुलक रही थी। उसे डर लग रहा था और चूहे के लिए दुख हो रहा था। कुछ ही देर बाद वह तेल से चिपचिपा और काला भूत बना हुआ बाहर आया।

"बाध दिया," उसने थूकते हुए खरखरी सी आवाज़ मे कहा।

प्रोव किरिम्रावोविच ने रस्से का सिरा हाथ पर लपेटा और कधे पर डालकर उस खीचा। पाइप भयानक चीखा से गूज उठी।

"चुप रह!" बीकाव ने गुस्से से पागल होते हुए चिल्लाकर कहा। "बडा नवाब आया कही का! सब्र कर, अभी निकाल लेता हू।"

उसने दोबारा रस्सा खींचा और भट्ठीखाना असह्य चीख से गज उठा। बीकोव के तीसरी बार रस्सा खींचने से पहले ही ओ हिट्टी ने उस कधा से पकड लिया और भट्ठीखाने के कोने मे तलछट के ढेर के पास फेंक दिया।

"इनसे कह दीजिये कि मै लडके को इस तरह यातना नही देन दूगा!" उसने चिल्लाकर लेज़र से कहा।

बीकोव गुस्से मे लाल-पीला होता हुआ उठा।

"तुम इस काफिर से कह दो कि—अगर यही बात है तो ख़ुद हम झझट से निपटें। ऐसा नही चाहता तो पाइप तोडनी पडेगी।"

स्तम्भित लेज़र ने अनुवाद किया।

ओ'हिट्टी ने सिर झुकाकर सहमति प्रकट की।

"अच्छी बात है! मै अभी जाकर कप्तान से बात करता हू।"

वह भागता हुआ सीढ़ी पर चढा और विपटद्वार से बाहर हो गया। बीकोव ने फिर से रस्सा खींचना चाहा, मगर गाल पर निशानवाले कनाडा वासी ने धमकाते हुए घूसा दिखाया। बीकोव जहा का तहा खडा रह गया।

विपटद्वार मे फिर से ओ हिट्टी का सिर दिखाई दिया।

'मिस्टर लेज़र ऊपर आइये और मिस्टर बीकोव को भी अपने साथ लाइये। कप्तान आपसे बात करना चाहते हैं।"

बीकोव ने गुस्से से थूका, गालिया बकी और सीढी पर चढ गया।

कप्तान जिबिंस विपटद्वार के पास खडा था। उसने सिकोडी हुई क्रूर आखो से बीकोव को देखा और सारा किस्सा बयान करने को कहा। लेज़र की बात सुनने के बाद उसने धीरे धीरे और ऊब भरे ढग से कहा—

"माल और जहाज़ के मालिको की इजाज़त के बिना मै पाइप तोडने की इजाज़त नही द सकता। मैं अभी न्यू ग्रारलिअन्स को फौरी तार भेजता हू। इस बीच लडके को जस-तैसे निकालने की कोशिश कीजिये।'

बीकोव पागलो की तरह नीचे उतरा। पाइप मे और ग्रीज़ डाली गयी। तेज झटको के साथ, धीरे धीरे और सावधानी से खींचने की कोशिश की गयी, मगर हर झटके से मीत्या को असह्य पीडा होती और भट्ठीखाने मे रह-रह कर भयानक चीखें गूज उठती। मीत्या ज़ोर-ज़ोर से रोता हुआ यह अनुरोध करता कि यदि एक बार ही उसकी जान ले ली जाये, तो वह कही बेहतर हो।

शाम होने तक यही सिलसिला चलता रहा। शाम को बीकोव गालियों का अपना सारा भण्डार समाप्त कर तट पर चला गया। झोकिये दवी-घुटी सिसकियां को सुनते हुए धीरे धीरे बातचीत करते रहे।

"वह बहुत देर तक जिन्दा नही रह सकेगा," कनाडावासी ने दु खी होते हुए कहा। "म कहता हू कि पाइप को एसिटिलीन से तोड देना चाहिए।"

"जिबिस इजाजत नही देगा," दूसरे थाकिये ने राय जाहिर की।

"वह हरामी कुत्ता है!" कनाडावासी ने खरखरी आवाज मे कहा और पाइप पर घूसा मारा।

८

सुबह को कप्तान जिबिन्स को फौरी तार का जवाब मिला।

उसने अपने केबिन मे ही वह तार पढा और हर पंक्ति के साथ उसक चेहरा अधिकाधिक कठोर होता गया। मालिक ने उत्तर दिया था कि व किसी ऐरे-गैरे रूसी छोकरे के लिये देर करने की इजाजत नही देता औ देरी के सभी नतीजो के लिये जिबिस को जिम्मेदार होना पडेगा।

"अमरीका मे हमे हमेशा ही ऐसा कप्तान मिल जायेगा, जो अधि लगन से फ़र्म के हितो की रक्षा करेगा," इन शब्दो के साथ तार समा हुआ था।

कप्तान जिबिस ने आखें बन्द कर ली और मानो पत्नी और दो ब को स्पष्ट रूप से अपने सामने देखा। उसका चेहरा काप उठा। उसने झ म साथ तार के टुकडे-टुकडे कर डाले और डेक पर चला गया। पा'हिहो के सामने बीकोव खडा था और हाथो को जोर से हि हुआ गुस्से से लेजर को कुछ समझा रहा था। लेजर ने कप्तान को ता अपनी दयनीय और कातर नजर उसके चेहरे पर गडा दी।

"मिस्टर कप्तान, अमरीका से जवाब आ गया?'

"हा," जिबिस ने रुखाई से उत्तर दिया। "मिस्टर बीकोव व बता दीजिये कि मै एक घटे की भी देरी नही कर सकता। आज शाम भट्ठिया जल जानी चाहिये और कल सुबह को हम रवाना हो जायेंगे। मिस्टर बीकोव की वजह से ऐसा न हो सका, तो उन्हें मेरा और ः का पूरा नुकसान अदा करना होगा।"

बीकोव ने मुट्ठिया भीची और मोटी सी गाली दी।

"ओह, हराम की औलाद! कुत्ते के पिल्ले, तेरा पाइप मे ही दम निकल जाये।"

लेजर पीछे हट गया।

"यह आप कैसी बात कह रहे हैं प्रोव विरिआकोविच कि सुनकर रागटे खडे होते हैं। लडके का भला क्या कसूर है कि उसे ऐसी बुरी मौत आये?'

"जहन्नुम मे जाओ तुम!" बीकोव चीख उठा।

कप्तान जिविंस अपने केबिन मे जाना ही चाहता था कि गाल पर घाव के निशानवाले क्षाक्यि ने उसे रोका। वह भी डेक पर आ गया था।

'माफ कीजिये जनाब," कनाडावासी ने कहा। "लोग पाइप काटने की इजाजत चाहते है, और अधिक इतजार करना ठीक नही होगा। लडका वडी मुश्किल से सास ले रहा है। हम "

जिविंस के हजामत बने गालो पर हल्की सी लाली आ गयी। अपनी आवाज को स्थिर रखते हुए उसने उत्तर दिया—

'मै यह इजाजत नही दे सकता।"

"मगर यह तो हत्या होगी सर," कनाडावासी मानो धमकाते हुए पास आ गया। "हम ऐसा नही होने देगे। आपकी इजाजत के विना ही हम पाइप को काट देगे।"

"काट लीजिये!' जिविंस ने और भी अधिक धीरे से कहा। "जहाज पर विद्रोह करने का क्या मतलब होता है, आप यह तो जानते ही हैं। इस सिलसिले मे कानून क्या कहता है, यह भी आपको मालूम ही है। मै आपसे अनुरोध करता हू मेरी जूती परवाह करती है आपकी। समझे?"

कनाडावासी का गालवाला निशान गुस्से से सुर्ख हो उठा। उसने दहकती नजर से जिविंस को देखा, तेजी से घूमा और सीढिया उतर गया।

'लोगो का ध्यान रखिये, ओ'हिड्डी।, भट्ठीखाने के जहाजियो की जिम्मेदारी आप पर है,' जिविंस गुस्से से यह कहकर अपने केबिन मे चला गया।

बीकोव और लेजर भट्ठीखाने मे लौटे। मीत्या अब पुकारने पर जवाब नही देता था और केवल उसकी धीमी-सी कराह ही सुनाई देती थी।

घटी की टनटनाहट ने जहाजिया को खाने के लिये बुलाया। भट्ठीखाना खाली हो गया। बीकोव पाइप पर चुक्कर देर तक उसके साथ कान लगाये रहा। इसके बाद सीधा हुआ और मानो किसी निश्चय के साथ उसने टोपी को भौंहा पर खीच लिया।

"चलो कप्तान के पास," उसने लेजर को हुक्म दिया और सीढी चढ चला।

कप्तान जिविंस मास का टुकडा चबा रहा था। अपनी शात और उदासीन आखें उसने बीकोव तथा लेजर के चेहरे पर टिका दी—

"निकाल लिया?" खून से तर मास का टुकडा काटते हुए उसने पूछा।

"मिस्टर कप्तान, हमारे किये धरे कुछ नही होता। ओह, कैसी भयानक बात हो गई है" लेजर ने कहना शुरू किया, मगर बीकोव ने उसे टोका। उसने हाथ मेज पर टिकाये और उसका खुरदरा चेहरा अचानक पीला पड गया।

"लेजर, तुम इससे कहो,' उसने धीमे से कहा, यद्यपि लेजर के सिवा और कोई भी उसकी बात नही समझ सकता था। 'इससे कहो कि उस शैतान को निकालना मुमकिन नही और नुकसान अदा करना भी मेरे बस की बात नही है। इतनी रकम मै कहा से लाऊगा?" बीकोव रुका, उसने जोर से सास खीची और छोडी—"उसके समेत ही भट्ठियो को जला दे।"

लेजर तोबा-तोबा कर उठा।

"ओह, प्रोव किरिआकोविच! भला कोई ऐसे मजाक भी करता है? इस अमरीकी कप्तान से यह मै कसे कह सकता हू कि लडके को जलाकर मार डाले? आप खुद ही जो चाहे करे, मुझसे यह नही होगा। ऐसी बात के लिये भगवान मुझसे मेरे भी बच्चे छीन लेगा।"

बीकोव मेज पर आगे की ओर और झुक गया।

"सुना लेजर" उसने बिगडकर कहा। "मै तुम्हारे साथ मजाक नही कर रहा हू। इस दो टके के छोकरे की खातिर मै भिखारी नही बनना चाहता। कान खोलकर सुन लो—अगर कप्तान से यह नही कहोगे तो कसम खाता हू कि थानेदार साहब को यह बता दूगा कि पिछले साल तुम

लाल झण्डा उठाये सडको पर घूमते थे और जार के खिलाफ नारे लगाते रहे थे।"

लेजर को अपनी पीठ पर झुरझुरी-सी महसूस हुई, मगर फिर भी उसने विरोध करने की कोशिश की।

"तो क्या हुआ? उसने दयनीय और बुझी हुई मुस्कान के साथ कहा। 'थानेदार साहब इसके लिये मुझे कुछ भी नही कहेंगे। उन दिनो कौन सा यहूदी लाल झण्डा लिये नही घूमता था और सभी तरह की बकवास नही करता था?"

'बकवास? उकाबवाली बात भूल गये? समझते हो कि वह मुझे मालूम नही है?'

लेजर चौंका। यह घातक चोट थी। तो बीकोव को यह भी मालूम है। वह बात भी, जिसे लेजर बहुत यत्न से हमेशा छिपाता रहा था और यह समझता था कि वह भूली बिसरी कहानी हो चुकी है। तो बीकोव इस बात से परिचित है कि गुस्से मे आये हुए विद्यार्थियो के साथ लेजर ने माराजलियेव्स्काया सडक पर दवाफरोश की दूकान पर लटके राज्यचिह्न से उकाब की मूर्ति उतारी थी और गुस्से के जनून मे उसके काले पखो को पैरो तले रौंदा था। वह चीज लाल झण्डे की तुलना मे कही अधिक भयानक थी। लेजर ने आखें बन्द कर ली, मगर बीकोव फुकारता रहा—

"और श्लीकेमन को भूल गये क्या?"

लेजर कराह उठा। उसे श्लीकेमन का पुलिसिया द्वारा मार मारकर भुरकस बनाया गया शरीर याद हो आया। लेजर ने कटुता से गहरी सास ली और निणय कर लिया।

"आपका बुरा हो प्रोव किरिआकोविच अच्छी बात है मैं कप्तान से कहे देता हू।"

जब तक वह बीकोव के शब्दो का अनुवाद करके कप्तान को बताता रहा, उसके हाथ और ओठ कापते रहे। जिकिस चुपचाप सुनता रहा। उसके चिकने चेहरे पर कही जरा-सी भी हरकत नही हुई। उसने पाइप मुह से निकालकर धीरे-से उत्तर दिया—

"मिस्टर बीकोव से कह दीजिये कि यह उनका अपना मामला है। लडका उनका है और कारोबार उनका है। जैसे भी चाहे, मामले को निपटायें हा, शत यह है कि मेरे जहाजियो से यह बात छिपी रहे

ग्रोर जैसे भी हो, उनकी ग्राखो में धूल झोक दी जाये। मैंने कुछ भी नही सुना ग्रौर मैं कुछ भी नही जानता। मगर ग्राज शाम को भट्ठिया जला दी जायेंगी।"

बीकोव ने होठ काटे ग्रौर लेज़र के साथ डेक पर ग्रा गया। शात लगरगाह पर शाम के फीरोज़ी साये पड रहे थे। सध्या की नीरवता छाई हुई थी, जिसे जूठन ग्रौर रोटी के टुकडो के लिये लडनेवाली मुर्गाबिया की चीख चिल्लाहट ही भग करती थी। बीकोव लेज़र की ग्रोर मुडा ग्रौर लाल-पीला होकर गुस्से से तथा धमकाते हुए फुसफुसाया—

"ग्रगर किसी के सामने ज़बान भी खोली तो याद रखना—तुम्हारा नाम निशान भी नही रहेगा इस दुनिया मे।"

६

भट्ठीखाने मे लडको के सिवा कोई नही था। ग्रमरीकी खाना खाकर ग्रभी तक नही लौटे थे। लडके इस पाइप के पास खडे हुए खुसुर फुसुर कर रहे थे, जिसमे पेत्या ग्रपना सिर घुसेडे हुए था। बीकोव ने पीठ पर उठे हुए तिरपाल से पेत्या को पकडकर ग्रपनी ग्रोर खीचा। डर के मारे पेत्या के काले चेहरे पर सफेद बटन जैसी ग्रांखें फैल गइ।

"तू वहा क्या सिर घुसाये हुए है शैतान? फिर शरारत? मैं तुम सब की जान ले लूगा!" पेत्या को ऊपर उठाते हुए प्रोव किरिग्राकोविच चिल्लाया।

"हमने तो काम खत्म कर दिया!" पेत्या चीख उठा। "सच कहता हू कि ग्रभी ग्रभी पाइपो की सफाई खत्म की है। ग्रगर 'चूहा' न फस जाता तो एक घटा पहले ही सब पाइपें साफ कर दी गयी होती।"

प्रोव किरिग्राकोविच ने ऊपर, चतुभजी विपटद्वार की ग्रोर नजर दौडाई जिसके पार नीलाकाश झलक रहा था ग्रौर पेत्या को ग्रपनी तरफ खीचकर बडबडाया—

"ग्रभी पाइप मे 'चूहे' के पास जा। ले यह रस्सा, इसे पैर से बाध ग्रौर घुस जा। जैसे ही ग्रेज़ खाना खाकर लौटेंगे, मैं तुझे वहा से बाहर खीचूगा। तू ऐसे जोर-जोर से चिल्लाना मानो तू पेत्या न होकर, 'चूहा' हो।'

"वह किसलिये, प्रोव विरिम्राकोविच?"

"तुझे इससे मतलब? जैसे ही बाहर खीच लू, खूब ज़ोर से, मानो बेहद खुशी से रोने लगना। तो, चल दे! वरना अभी तेरा पत्ता काट दूगा। और तुम सब एकदम खामोश रहना, वरना सभी के टुकडे टुकडे कर डालूगा," उसने चिल्लाकर बाकी तीन लडको से कहा।

पेत्या पाइप मे घुस गया, जिसमे से रस्सा बाहर लटक रहा था। विपटद्वार मे अधेरा हो गया और नीचे उतरते हुए अमरीकियो के परो की धमाधम सीढी पर गूज उठी।

लेजर ने बहुत गहरी सास ली और जैसे-तसे साहस बटोरकर बीकोव की कोहनी छुई।

प्रोव विरिम्राकोविच," उसने कापते हुए कहा। 'क्या आप सचमुच ही इस मासूम बच्चे को मार डालना चाहते है?"

बीकोव ने उसे घूरा।

"कैसी दया की मारी कौम है तुम्हारी!' उसने तिरस्कार से कहा। 'शायद इसीलिये दुनिया के हर हिस्से म तुम्हारी पिटाई होती है " फिर अचानक गुस्से से उबलते हुए चिल्लाया–"तुम्हारा है क्या? तुम्हे मतलब? मुझे ही मिला था–मै ही जवाबदह हू। यो भी उसका कोई नही, बेघरबार है, कोई पूछनेवाला नही। अगर कोई पूछेगा भी तो वह दूगा कि भाग गया, ग्रेजो के साथ चला गया। दफा हो जाओ!"

लेजर पीछे हट गया। झोकिये नीचे उतरकर पाइप के पास आये। बीकोव ने हाय वाय करते हुए रस्सा पकडा और ज़ोर से खीचने लगा। पेत्या पाइप मे चीख उठा। रस्सा बाहर को आने लगा।

"खीचो! खीचो!" बीकोव चिल्लाया और झोकियो ने भी उसका सकेत समझते हुए रस्से का सिरा पकड लिया। पेत्या की टागें और फिर चूतड दिखाई दिये और फिर सारा शरीर बाहर आ गया। हाथ फैलाये हुए पेत्या मह के बल लोहे के फश पर गिर पडा, जिस पर कोयले के चूरे के नुकीले टुकडे बिखरे हुए थे। उसके माथे पर ज़ोर की चोट लगी और वह सचमुच ही ज़ोर से रो पडा। शोर मचाते हुए झोकिया ने उसे उठाया और बाहर डेक पर ले गये। कनाडावासी ने रूमाल से पेत्या के माथे से बहता हुआ खून पोछा और गाढी काली ग्रीज से काले हुए चेहरे को साफ करना चाहा। किन्तु तभी बीकोव ने लडके को उसके हाथ से झपट

लिया और वाहर जानेवाले दरवाजे की तरफ खीच ले चला। शोर सुनकर केबिन से वाहर आनेवाला ओ'हिड्डी रास्ते मे मिल गया।

"क्या हुआ?" मशीन इजीनियर ने पूछा।

कनाडावासी ने उसे झटपट वताया कि लडके को वाहर निकाल लिया गया है।

ओ'हिड्डी बीकोव के पास गया। वह मौत के मुह से निकल आये लडके को उत्साहवर्द्धक और प्यार के कुछ शब्द कहना चाहता था। उसने पेत्या के चिपचिपे वालो को हथेली से छुआ। पेत्या ने सिर घुमाया, मुह खोला और तभी मशीन इजीनियर को सडे हुए काले दात दिखाई दिये। वे मीत्या के सुदर चमकते हुए दातो से बिल्कुल भिन्न थे। ओ'हिड्डी ने हाथ हटाया और हैरानी से बीकोव को देखता रह गया, जो पेत्या को अपने पीछे-पीछे खीचता हुआ तेजी से घाट की ओर भागा जा रहा था। जब वह गोदाम के पीछे मुडकर गायव हो गया तो मशीन इजीनियर डेक से भट्ठीखाने मे गया।

लडके भी औजार सम्भालकर जाने को तैयार हो रहे थे। उनके वाहर जाने तक ओ'हिड्डी ने इतजार किया और इसके वाद हुक लेकर उसे दूर तक पाइप मे डाला। हुक किसी नम चीज़ से टकराया और ओ हिड्डी को विल्ली की दयनीय म्याऊ म्याऊ जैसी धीमी-सी आवाज सुनाई दी।

उसने हुक फेंक दिया और कुछ ही छलागो मे सीढी लाघ गया। डेक पर उसने अपनी चाल सामान्य वना ली और कप्तान के केबिन पर दस्तक दी।

कप्तान जिविन्स मशीन इजीनियर को, उसकी फैली फैली नीली आखोवाले ज़र्द चेहरे और माथे पर पसीने की बूदो को हैरानी से देखता रह गया।

"क्या वात है डिक्की?" उसने पूछा।

मशीन इजीनियर हाफ रहा था।

"फ्रेंड! एकदम जुम। उस कम्वख्त बीकोव ने हमे धोखा दिया है। उसने पाइप मे से दूसरा लडका बाहर निकाला है। पहला वही रह गया। वह लगभग मर चुका है, जवाब तक भी नही दे पाता"

कप्तान जिविन्स पाइप को हाथ मे घुमा रहा था। उसका चेहरा एकदम पत्थर सा कठोर हो गया था।

"मुझे ऐसी ही उम्मीद थी," उसने धीरे से कहा।

मशीन इंजीनियर झटके से पीछे हटा।

क्या? तो आपको यह मालूम है?"

"मालूम नहीं है मगर मेरा ऐसा ही अनुमान जरूर था," जिविग ने पाइप को दांत तले दबाया और दियासलाई जलाकर धीरे से तम्बाकू सुलगाया। पर अब इससे फर्क ही क्या पड़ता है। हमारे पास कोई चारा भी तो नहीं है। कल सुबह को रुनी की आखिरी बारी लदते ही हम यहां से चल देना होगा। रात के दस बजे आप भट्ठियां जला दीजियेगा।"

"आप पागल हो गये हैं क्या? और यह बच्चा?"

कप्तान जिविग ने सिर ऊपर उठाया। उसकी आंखें हरी और बर्फ के टुकड़ा जैसी ठण्डी-सी हो गयी थी।

मेरी बात सुनो दोस्त! अगर मैं मालिक का आदेश पूरा नहीं करता हूं तो वह मुझे निकाल देगा और काली सूची में मेरा नाम दर्ज कर दिया जायेगा। तब कोई भी कम्पनी मुझे नौकर नहीं रखेगी। तुम हो दम के दम, मगर मेरे बीवी-बच्चे हैं। अगर सामान्य नैतिकता की दृष्टि से देखा जाये तो मैं समझता हूं कि यह जुर्म है। मगर इस वक्त मैं व्यक्तिगत नैतिकता की दृष्टि से इस मामले को देख रहा हूं। मैं इनसान हूं और यह नहीं चाहता कि मेरा परिवार बेघर-बार हो जाये। मुझे मेरे बच्चे प्यारे हैं। शायद आप यह नहीं समझ पायेंगे, किन्तु जब मैं सोचता हूं कि मेरे बच्चों का क्या होगा तो मैं यह जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेता हूं और आप भी मेरे बच्चों को इस लड़के की तरह दर दर की ठोकरें खानेवाला भिखारी नहीं बनाना चाहेंगे "

"मगर जहाजी "

"अगर आप नहीं कहेंगे तो उन्हें कुछ भी मालूम नहीं हो सकेगा। और आप इसलिये नहीं कहेंगे कि मेरे बच्चों की मौत नहीं चाहेंगे। यह लड़का तो अब किसी भी हालत में नहीं बच सकेगा। दो-तीन घंटे बीतते न बीतते वह पूरा हो जायेगा दस बजे भट्ठियों में कोयला डाल दिया जाये। यह मेरा हुक्म है!"

ओ'हिड्डी ने कनपटियों को दबाया। उसे लगा कि उसका सिर गुब्बारे की तरह फूलता जा रहा है और बस, फटा कि फटा।

"अच्छी बात है! मैं खामोश रहूंगा फ्रेड, भगवान तुम्हें और मुझे माफ करे!'

१०

ठीक दोपहर को पूरा माल लादकर "मेजी डाल्टन" ग्रोदेसा से रवाना हा गया। घाट बिल्कुल खाली था ग्रौर केवल गोदाम के पास लम्बे ग्रौर पुराने फाक कोट मे एक झुकी हुई ग्राकृति दिखाई दे रही थी। लेज़र जहाज को विदा करने ग्राया था, क्योंकि उसके नौ भूखे बच्चे थे ग्रौर सीने मे बच्चो के प्रति दयालु वह दिल धडकता था, जिसकी किसी को ग्रावश्यकता नही था। "मेजी" के बाघ के पीछे मुड जान पर लेज़र घाट से चल दिया। वह ग्रपनी झुकी हुई पीठ पर मानो भयानक ग्रदश्य बोझ लादे हुए था।

"मेजी" ने बोसफोरस ग्रौर जिबराल्टर को सकुशल पार कर लिया। मशीनें ख़ूब ग्रच्छे ढग से काम कर रही थी, ग्रोदेसा मे लिया गया कोयला बहुत उच्च कोटि का था, लोग मन लगाकर काम कर रहे थे। पर, केवल बडे मशीन-इजीनियर ग्रो'हिड्डी ने सुवह से ही बेहद पी ली थी ग्रौर ग्रपने केबिन मे फूला फूला ग्रौर भयानक-सा चेहरा बनाये पडा था।

जिबराल्टर के बाद "मेजी" ग्रटलाटिक मे उस माग पर बढ चला, जो हठी जेनोग्रावासी ने पाच शताब्दिया पहले प्रशस्त किया था। पहली ही रात को डेक के जहाजियो की ग्राखो के सामने ही मशीन इजीनियर ग्रो'हिड्डी महासागर मे कूद गया। मौसम मे ताजगी थी, तेज हवा से बडी-बडी लहरे उठ रही थी ग्रौर नाव उतारना खतरनाक था। कप्तान जिबिन्स ने डेक के रजिस्टर म इस दु खद घटना को दज कर दिया।

ग्यारह दिन तक "मेजी" महासागर की लहरा को चीरता रहा ग्रौर बारहवे दिन न्यू ग्रोरिलग्रान बन्दरगाह के घाट पर जा खडा हुग्रा। लिसबी फम के सचालक को साथ लिये हुए, जो गर्मी के मौसम का सफेद टोप पहने दुबला पतला सा व्यक्ति था, जहाज़ का मालिक सफल यात्रा ग्रौर ग्रादश कायनिष्ठा के लिये कप्तान को धयवाद देने डेक पर ग्राया था।

"हम ग्रापको बीमे के ग्रलावा खास इनाम भी देते हैं ग्रौर मिस्टर लिसबी भी ग्रपनी तरफ से ग्रापको ऐसी लगन से काम करने के लिये पुरस्कृत करते हैं हा, यह तो बताइये कि ग्रोदेसा मे ग्रापने उस झझट से कैसे निजात पाई?"

कप्तान जिबिन्स ने सिर झुकाया।

"धन्यवाद। वह तो बड़ी मामूली सी बात थी। याद करने की भी जरूरत नहीं है," जिविंस ने उत्तर दिया।

सदा की भांति कप्तान फीतेवाली नीली टोपी पहने था और कुतरे सिरेवाला पाइप मुंह में दबाये हुए था। उसका चेहरा शान्त और चिकना चुपड़ा था।

रात को जब जहाज़ी छुट्टी पाकर तट पर चले गये और केवल डेकवाला जहाज़ी रह गया तो कप्तान जिविंस भट्टीखाने में गया। विपटद्वार के सभी पचों को अच्छी तरह से बन्द करके उसने लम्बी कुरेदनी ली, उसे पाइप में डाला और देर तक तथा दूर तक पाइप में घुमाया। लोहे के जंगलेवाले फर्श पर कई जली हुई हड्डियां गिरीं और बाद में अधाप और दबी सी आवाज के साथ एक छोटी-सी गोल खोपड़ी नीचे लुढ़क आई। कुरेदनी को फिर से पाइप में डालने पर कोई गूंजदार चीज़ फर्श पर आयी। जिविंस ने झुककर लोहे की एक छोटी सी डिबिया उठाई, वैसी ही जिसमें सस्ती मीठी गोलियां बन्द की जाती हैं। कप्तान ने चाकू निकाला और ढक्कन के नीचे उसका फल घुसेड़कर डिबिया को खोला। डिबिया में तांबे के कुछ बटन और आग से काला हुआ एक डालर पड़ा था। जिविंस ने डिबिया को बन्द करके जेब में डाल लिया। इसके बाद उकड़ू बैठकर रूमाल फैलाया और खोपड़ी तथा हड्डियों को उसमें समेटा। डेक पर आकर वह जहाज के पहलू के करीब गया और उसने काले, कुछ कुछ हिलते डुलते पानी में वह पोटली फेंक दी।

केबिन में उसने मेज़ के पास जाकर ह्विस्की की बोतल ली, गिलास भरा और उसे मुंह तक ले गया, मगर ह्विस्की पी नहीं। वह क्षणभर खड़ा रहा, उसने चेहरे पर हाथ फेरा मानो गाल की हड्डी के नीचे सिहरन को दूर किया और खुली खिड़की के पास जाकर ह्विस्की को पानी में फेंक दिया।

सुबह को कप्तान तट पर गया। एक परिचित सुनार के पास जाकर उसने यह अनुरोध किया कि वह जले हुए काले डालर को उसके चांदी के सिगरेटकेस के ढक्कन में जड़ दे।

"जिविंस, तुम्हें यह कहां से मिला?" डालर को मोटी मोटी उंगलियों में इधर उधर हिलाते-डुलाते हुए सुनार ने पूछा।

कप्तान जिविंस ने नाक भौंह सिकोड़ी।

"मैं इसकी चर्चा नही करना चाहता। यह एक दु खद कहानी है। मगर इस सिक्के को मैं स्मरणार्थ अपने पास रखना चाहता हू।"

उसने सुनार से शिष्टतापूर्वक विदा ली और सडक पर आ गया। वह यह सोचकर खुश होता हुआ घर की तरफ चल दिया कि अभी अपने बीवी-बच्चो से मिलेगा और उन्हे बहुत जरूरी माल लाने के लिये मिले भत्ते की खुशखबरी सुनायेगा। वह भविष्य के बारे मे निश्चित और विश्वस्त था। वह सडक के शोर और होहल्ले के बीच मकानो के पास से दृढ कदम रखता हुआ बढा जा रहा था। इन मकानो के रेशमी हरे पर्दो से अघढके चमकते शीशो के पीछे जोर-शोर से गिनतारे की नीरस खटखट हो रही थी, मानवीय लालच का नपा-तुला व्यापार चल रहा था।

पाठको से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे मे आपके विचार जानकर आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमे बडी प्रसन्नता होगी। कृपया हमे इस पते पर लिखिये

प्रगति प्रकाशन,
२१, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत सघ।

БОРИС ЛАВРЕНЕВ

СОРОК ПЕРВЫЙ

На языке хинди